0;kdj.k

ch-,-&I

nwjLFk f'k{kk funs'kky;

egf"kZ n;kuUn fo'ofo|ky;

jksgrd&124 001

Copyright © 2002, Maharshi Dayanand University, ROHTAK
All Rights Reserved. No part of this publication may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means; electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the written permission of the copyright holder.

Maharshi Dayanand University
ROHTAK – 124 001

Developed & Produced by EXCEL BOOKS PVT. LTD., A-45 Naraina, Phase 1, New Delhi-110028

विषय सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ सं०
1.	वर्तनी	1
2.	पर्यायवाची	8
3.	विलोम या विपरीतार्थक शब्द	18
4.	वाक्य के लिए एक शब्द	24
5.	मुहावरे	38
6.	लोकोक्ति	50

वर्तनी

वर्तनी शब्द की व्युत्पत्ति 'वृत्त' में 'मनि' प्रत्यय के योग से दर्शायी जा सकती है। संस्कृत में इसके लिए 'वर्त्मनी' शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। 'वर्त्मनी' शब्द में से 'म' के लोप होने से 'वर्तनी' शब्द का निर्माण हुआ है। 'वर्तनी' का शाब्दिक अर्थ – सरणि है। शब्द–लेखन के संदर्भ में सरणि का प्रयोग किया जाता है। शब्द की लेखन–सरणि को ध्यान में रखकर 'वर्तनी' को सरल रूप में इस प्रकार परिभाषित कर सकते है, "भाषा के शब्दों के शुद्ध लेखन को वर्तनी कहते हैं।"

हिंदी में वर्तनी के लिए अक्षर विन्यास, अक्षरन्यास, अक्षरी और वर्णन्यास आदि शब्दों के प्रयोग किए जाते हैं। इनमें वर्तनी शब्द का प्रयोग बहुप्रचलित है। अंग्रेजी में इसका पर्यायवाची शब्द 'Spelling' है।

हिन्दी भारतीयता की पहचान है। इसे भारतीय संस्कृत की संवाहिका के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह देश की जनभाषा, राष्ट्रभाषा और राज–भाषा है। इसका प्रयोग देश के बहुसंख्यक लोगों द्वारा किया जाता है। विस्तृत क्षेत्र में प्रयुक्त होने के कारण इसमें विविधता होना स्वाभाविक है। वर्तनी के आधार पर भाषा के मानकीकरण का आकर्शक स्वरूप सामने आता है। इससे भाषा में एकरूपता का विकास होता है।

वर्तनी के संदर्भ में हमें कुछ तथ्यों पर ध्यान रखना अनिवार्य होता है–

(क) शब्द के शुद्ध लेखन में किन–किन लिपि चिह्नों का प्रयोग होना चाहिए।

(ख) शब्द में प्रयुक्त विभिन्न लिपि चिह्नों को अनुकूल क्रम में प्रयोग करना।

हिन्दी वर्तनी के संदर्भ में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार करना अनिवार्य है

1. मात्रा संबंधी अशुद्धियाँ

आ > अ	*अशुद्ध*	*शुद्ध*	*अशुद्ध*	*शुद्ध*
	अखांडनीय	अखंडनीय	अत्याधिक	अत्यधिक
	अनाधीकार	अनाधिकार	आजकाल	आजकल
	आपना	अपना	आधीन	अधीन
	आलौकिक	अलौकिक	दावात	दवात
	हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप		
अ > आ	अगामी	आगामी	अदान–प्रदान	आदान–प्रदान
	अहार	आहार	चहिए	चाहिए
	नराज	नाराज	परलौकिक	पारलौकिक
	परिवारीक	पारिवारिक	संसारीक	सांसारिक
ई > इ	ईधर	इधर	उत्पत्ती	उत्पत्ति
	उन्नती	उन्नति	उपलब्धी	उपलब्धि

	कवी	कवि	क्योंकी	क्योंकि
	नालीयाँ	नालियाँ	पूर्ती	पूर्ति
	प्राप्ती	प्राप्ति	मुनी	मुनि
	व्यक्ती	व्यक्ति	शक्ती	शक्ति
	साथीयों	साथियों	हानी	हानि
इ > ई	अदि्वतिय	अदि्वतीय	आशिर्वाद	आशीर्वाद
	केन्द्रिय	केन्द्रीय	दिक्षा	दीक्षा
	दिवाली	दीवाली	निरसता	नीरसता
	निरिह	निरीह	निरोग	नीरोग
	निरिक्षण	निरीक्षण	पत्नि	पत्नी
	परिक्षा	परीक्षा	पितांबर	पीतांबर
	पूजनिय	पूजनीय	बिमार	बीमार
	बिमारी	बीमारी	श्रीमति	श्रीमती
ऊ > उ	अनूकूल	अनुकूल	आयू	आयु
	कृपालू	कृपालु	गुरू	गुरु
	दयालू	दयालु	धूलाई	धुलाई
	पटू	पटु	परूश	परूष
	पशू	पशु	पुरूश	पुरुष
	प्रभू	प्रभु	मधू	मधु
	रूपया	रुपया	शिशू	शिशु
	शुरू	शुरु	साधू	साधु
उ > ऊ	उपर	ऊपर	दुर	दूर
	पुर्ण	पूर्ण	पुर्व	पूर्व
	पुज्य	पूज्य	मुली	मूली
	शुन्य	शून्य	सुप	सूप
	सुर्य	सूर्य	स्वरुप	स्वरूप

संयुक्त स्वर की मात्राएँ

	एक्य	ऐक्य	एनक	ऐनक
	ऐनक	ऐनक	ऐतिहासिक	ऐतिहासिक
	कोन	कौन	लोटना	लौटना
	त्यौहार	त्योहार		

2. अकारण अनुनासिकता

रँण	रण	तँन	तन
खाँन	खान	पाँन	पान
तँम	तम	दाँम	दाम
राँम	राम		

3. अनुनासिकता (चन्द्रबिन्दु)

आंख	आँख	ऊंचा	ऊँचा
कांच	काँच	गूंगा	गूँगा
चांद	चाँद	जहां	जहाँ
दांत	दाँत	बांस	बाँस
यहां	यहाँ	वहां	वहाँ
हां	हाँ		

4. अनुस्वार

अँक	अंक (अङ्क)	पँक	पंक (पङ्क)
रँक	रंक (रङ्क)	शँकर	शंकर (शङ्कर)
पँख	पंख (पङ्ख)	अँग	अंग (अङ्ग)
कँगन	कंगन (कङ्गन)	जँग	जंग (जङ्ग)
रँग	रंग (रङ्ग)	कँचन	कंचन (क¥चन)
मँजुल	मंजुल (म¥जुल)	घँटी	घंटी (घण्टी)
पँडा	पंडा (पण्डा)	पँत	पंत (पन्त)
पँथ	पंथ (पन्थ)	चँदन	चंदन (चन्दन)
पँप	पंप (पम्प)	गँभीर	गंभीर (गम्भीर)
सँसार	संसार	हिन्सा	हिंसा

यदि नासिक्य व्यंजन के पूर्व समान अर्थात् वही नासिक व्यंजन अर्ध रूप में प्रयुक्त हो, तो उसके मूल रूप में ही लिखना होगा, उसका अनुस्वार रूप नहीं होता है; यथा–

भिंन	भिन्न	अंन	अन्न
संमान	सम्मान	संमिलित	सम्मिलित

5. 'ण'नासिक्य व्यंजन

ड़ँ > ण	गँड़ेंश	गणेश	रँड़ँभूमि	रणभूमि
	रँड़ँ	रण	गँड़ँना	गणना
	रामायँड़ँ	रामायण	आचरन	आचरण
	शरँडँ	शरण		

न > .k	आक्रमण	आक्रमण	आचरन	आचरण
	किरन	किरण	गनित	गणित
	गुन	गुण	तृन	तृण
	निरीक्षन	निरीक्षण	प्रान	प्राण
	रनभूमि	रणभूमि	रामायन	रामायण
	शरन	शरण	स्मरन	स्मरण

6. 'र' प्रयोग

अरथ	अर्थ	आर्शीवाद	आशीर्वाद
आर्दश	आदर्श	करम	कर्म
धरम	धर्म	मरयादा	मर्यादा
वर्क्स	वर्क्स	वर्त्स्य	वर्त्स्य
कार्यकर्म	कार्यक्रम	चन्दर	चन्द्र
तीवर	तीव्र	परसन्न	प्रसन्न
परसाद	प्रसाद	परतिज्ञा	प्रतिज्ञा
समुन्दर	समुद्र	सहस्त्र	सहस्र
स्त्रोत	स्रोत	टरक	ट्रक
टराम	ट्राम	डरम	ड्रम

7. *ब > व*

पूर्ब	पूर्व	बन	वन
बनस्पति	वनस्पति	बर्शा	वर्शा
बाणी	वाणी	बिशधर	विशधर
बिलास	विलास	बैदेही	वैदेही

8. श, श, स प्रयोग

स > श	असोक	अशोक	आदर्स	आदर्श
	आसा	आशा	देसी	देशी
	प्रसंसा	प्रशंसा	विस्वास	विश्वास
	संकर	शंकर	पस्चात	पश्चात
श स > ष	कस्ट	कष्ट	अभीस्ट	अभीष्ट
	घनिस्ठ	घनिष्ठ	रास्ट्र	राष्ट्र
	भविस्य	भविष्य	संतुश्ट	संतुष्ट
श > स	नमश्कार	नमस्कार	प्रशाद	प्रसाद
	शंकट	संकट	शाशन	शासन

शुशोभित	सुशोभित	हंश	हंस

9. ऋ–र प्रयोग

उपगृह	उपग्रह	भृश्ट	भ्रष्ट
गृहण	ग्रहण	रिशि	ऋषि
रितु	ऋतु	रिण	ऋण
श्रंगार	शृंगार	ह्रदय	हृदय

10. ज्ञ–ग्य प्रयोग

ग्यान	ज्ञान	आग्या	आज्ञा
ग्यापन	ज्ञापन	प्रतिग्या	प्रतिज्ञा
विग्यान	विज्ञान		
भाज्ञ	भाग्य		

11. छ > क्ष

कछा	कक्षा	छमा	क्षमा
छुद्र	क्षुद्र	छेत्र	क्षेत्र
नछत्र	नक्षत्र	लछण	लक्षण
विपछ	विपक्ष		

12. ड–ड़ प्रयोग

रोड़	रोड	ड़मरू	डमरू
ड़गर	डगर	ड़ाल	डाल
सडक	सड़क	पडाव	पड़ाव
पहाड	पहाड़	मोडना	मोड़ना

13. ढ–ढ़ का प्रयोग

ढ़क्कन	ढक्कन	ढ़पली	ढपली
ढ़ोल	ढोल	ढ़लान	ढलान
चढना	चढ़ना	टेढा	टेढ़ा
प्रौढ	प्रौढ़	बूढा	बूढ़ा

14. ड़–ढ़ प्रयोग

काड़ना	काढ़ना	चड़ना	चढ़ना
गड़ना (बनाना)	गढ़ना	चिडना	चिढ़ना
खिढ़की	खिड़की	फाढ़ना	फाड़ना
सढ़ना	सड़ना		

15. ट–ठ प्रयोग

अभीष्ठ	अभीष्ट	विशिश्ठ	विशिष्ट
अश्लिष्ठ	अश्लिष्ट	संतुश्ठ	संतुष्ट
धनिष्ट	धनिष्ठ	श्रेश्ट	श्रेष्ठ

16. अल्प्राण–महाप्राण प्रयोग

गढ्ढा	गड्ढा	पथ्थर	पत्थर
बध्घी	बग्घी	मख्खन	मक्खन

17. श्रुतिमूलक प्रयोग (जहाँ पर 'स्वर' सुनाई दे वहाँ स्वर का ही प्रयोग करें)

अपनायी	अपनाई	आये	आए
खाईये	खाइए	गये	गए
जाइये	जाइए	नयी	नई
पुरवायी	पुरवाई	बाधायें	बाधाएँ
बलिकायें	बालिकाएँ	बुलायें	बुलाएँ
लिये	लिए	समस्यायें	समस्याएँ
सहनायी	शहनाई		

अभ्यास के लिए वस्तुनिष्ठ प्रश्न

शुद्ध रूप बताइए

1.	अ–अत्यधिक	आ–आत्याधिक	इ–अत्याधीक	ई–आत्याधीक
2.	अ–अद्वीतिय	आ–अद्वितिय	इ–आद्वितीय	ई–अद्वितीय
3.	अ–आनुकुल	आ–अनुकूल,	इ–आनुकूल	ई–अनूकूल
4.	अ–अलौकिक	आ–आलोकिक	इ–आलौकिक	ई–अलौकीक
5.	अ–आश्लिष्ट	आ–अश्लीष्ट	इ–अश्लिष्ट	ई–अश्लिस्ट
6.	अ–अदर्श	आ–आर्दश	इ–आदर्स	ई–आदर्श
7.	अ–आर्शीवाद	आ–आसीर्वाद	इ–आशीर्वाद	ई–आशीर्वाद
8.	अ–उपगृह	आ–उपग्रह	इ–उपाग्रह	ई–ऊपगृह
9.	अ–उपलब्धि	आ–ऊपलब्धि	इ–उपलब्धी	ई–उपालब्धि
10.	अ–एक्य	आ–ऐक्य	इ–ऐैक्य	ई–यैक्य
11.	अ–ऐनक	आ–एनक	इ–ऐैनक	ई–यैनक
12.	अ–ऐैतिहासिक	आ–ऐतीहासिक	इ–एतिहासीक	ई–ऐतिहासिक
13.	अ–क्रिपालु	आ–क्रिपालू	इ–कृपालु	ई–क्रपालु

14.	अ—केन्द्रीय	आ—कैन्द्रीय	इ—केन्द्रिए	ई—केन्द्रीए
15.	अ—घनिष्ठ	आ—घनिष्ठ	इ—घनिस्ठ	ई—घनीस्ठ
16.	अ—नमस्कर	आ—नमश्कार	इ—नमष्कार	ई—नमस्कार
17.	अ—निरीक्षण	आ—निरिक्षण	इ—निरीक्छण	ई—नीरीक्षण
18.	अ—परलौकिक	आ—पारलोकिक	इ—पारलौकिक	ई—परलोकिक
19.	अ—परिवारीक	आ—पारिवारीक	इ—परिवारीक	ई—पारिवारिक
20.	अ—पुरुष	आ—पुरूश	इ—पुरूष	ई—पूरूश
21.	अ—परतिज्ञा	आ—प्रतिज्ञा	इ—परतीज्ञा	ई—परतिग्या
22.	अ—पुजनीय	आ—पूज्यनिय	इ—पूजनीय	ई—पूज्यनीय
23.	अ—बदेही	आ—बैदेहि	इ—बेदेही	ई—बैदेही
24.	अ—रणभुमि	आ—रणभूमि	इ—रणभूमी	ई—रणभुमी
25.	अ—वस्तुनिष्ठ	आ—वस्तुनिस्ठ	इ—वस्तुनिश्ट	ई—वस्तुनीश्ट
26.	अ—श्रृगांर	आ—श्रृंगार	इ—श्रंगार	ई—श्रृंगार
27.	अ—संतुस्ट	आ—संतुष्ट	इ—संतुश्ठ	ई—संतुश्ठ
28.	अ—सांसारिक	आ—सांशारीक	इ—शांसारीक	ई—संसारिक
29.	अ—सम्मलित	आ—सम्मिलित	इ—सम्मीलित	ई—साम्मिलित
30.	अ—समसाएँ	आ—समस्यायें	इ—समस्साएँ	ई—समस्याएँ
31.	अ—शुशोभित	आ—सुषोभित	इ—सुशोभित	ई—सूशोभित
32.	अ—स्वरूप	आ—स्वरुप	इ—सुरुप	ई—सरूप

उत्तर

1. अ	2. ई	3. आ	4. अ	5. इ	6. ई	7. ई	8. आ	9. अ
10. आ	11. अ	12. ई	13. इ	14. अ	15. आ	16. ई	17. अ	18. इ
19. ई	20. अ	21. आ	22. इ	23. ई	24. आ	25. अ	26. ई	27. आ
28. अ	29. आ	30. ई	31. इ,	32. अ				

i ;kl ;okph

शब्द विशेश के लिए लगभग समान अर्थ में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द की संज्ञा दी जाती है। ऐसे विभिन्न शब्दों की समानता को ध्यान मे रख कर इनके लिए समानार्थी या समानार्थक शब्द भी प्रयुक्त होते हैं। पर्यायवाची शब्दों के विशय में मुख्य रूप से यह उल्लेखनीय तथ्य है कि ये शब्द आपस में पूर्ण समान न होकर लगभग समान होते हैं। पूर्ण समानार्थी शब्द को एकार्थी शब्द का नाम दिया जात है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि पर्यायवाची शब्द आपस मे पूर्ण समान लगते हैं, किन्तु लगभग समान होते हैं। गंभीर चिंतन करने पर उनमें सूक्ष्म भिन्नता अवश्य सामने आती है।

पर्यायवाची शब्द हिंदी भाषा की सबसे प्रमुख विशेशता है। लगभग समान अर्थ के लिए विभिन्न शब्दों के प्रयोग से भाषा का नवीन और आकृर्शक रूप सामने आता है। जिस प्रकार विभिन्न संदर्भों में मनुश्य भिन्न–भिन्न वस्त्रों को पहन कर सुन्दर लगता है, उसी प्रकार समान अर्थ के लिए भिन्न–भिन्न शब्दों के प्रयोग से जहाँ भाषा को भास्वर रूप मिलता है, वहीं अभिव्यक्ति भी प्रभावी होती है।

पाठ्यक्रम में निर्धारित कुछ पर्यायवाची शब्दों का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

अकस्मात : अचानक, अनायास, एकदम, एकाएक, सहसा

अगणित : अनगिनत, अनन्त, असंख्य, असीम

अग्नि : अनल, आग, ज्वाला, दव, पावक, वह्नि,, हुताशन

अज्ञान : अविद्या, अविवेक, जड़, मूर्ख

अतिथि : अभ्यागत, आगन्तुक, पाहुना, मेहमान

अधम : तुच्छ, निकृश्ट, नीच, पतित

अधिक : अति, अतिशय, अतीव, ज्यादा, प्रचुर, बहुत

अनुचर : दास, नौकर, परिचारक, भृत्य, सेवक

अनुपम : अतुल, अद्‌भुत, अद्वितीय, अनूठा, अनोखा, अपूर्व, अभूतपूर्व, निराला

अंधकार : अंधेरा, तम, तिमिर, तमिस्र

अपमान : अनादर, अप्रतिश्ठा, अवमाना, अवहेलना, उपेक्षा, तिरस्कार, निरादर

अमृत : अमिय, अमी, पीयूश, सुधा, सोम

असुर : तमीचर, दनुज, दानव, दैत्य, निशाचर, राक्षस

अहंकार : अभिमान, घमण्ड, दंभ, दर्प

आँख : अक्षि, चक्षु, दृग, नयन, नेत्र, लोचन, विलोचन

आकाश : अंतरिक्ष, अंबर, आसमान, गगन, नभ, व्योम, शून्य

आक्रमण : अभियान, चढ़ाई, धावा, हमला

आज्ञा	:	अनुशासन, आदेश, निर्देश, हुक्म
आदि	:	आरम्भ, पहला, प्रथम, मूल
आनंद	:	आमोद आह्लाद, उल्लास, खुशी, प्रमोद, प्रसन्नता, प्रसाद, मोद, हर्श
आपत्ति	:	आपदा, आफत, कश्ट, क्लेश, विपत्ति, विपदा
आभूशण	:	अलंकरण, अलंकार, आमरण, गहना, जेवर, विभूशण
आम	:	अमृतफल, आम्र, रसाल
आयु	:	अवस्था, उमर, जीवन–काल, वय
इच्छा	:	अभिलाशा, आकांक्षा, कामना, चाह, मनोरथ, लालसा
इन्द्र	:	देवराज, देवेन्द्र, देवेश, पुरन्दर, पुरुहूत, मधवा, महेन्द्र, वज्रपाणि, शक्र, सुरपति, सुरेन्द्र, सुरेश
ईश्वर	:	ईश, जगदीश, जगन्नाथ, दीनबंधु, परमात्मा, परमेश्वर, प्रभु, भगवान, स्वयंभू
उग्र	:	घोर, तीव्र, प्रचण्ड, रौद्र, विकट
उत्साह	:	उमंग, जोश, प्रेरणा, साहस
उद्देश्य	:	अभिप्राय, आशय, तात्पर्य, मतलब, लक्ष्य
उद्यान	:	उपवन, कुसुमाकर, फुलवारी, बगीचा, बाग, वाटिका
उन्नति	:	अभ्युदय, उत्कर्श, उत्थान, उदय, उन्नयन, प्रगति, विकास
उपकार	:	नेकी, भलाई, हित
उपमा	:	तुलना, समानता, सादृश्य
उपवन	:	आराम, उद्यान, बाग, वाटिका
उपवास	:	अनशन, निराहार, फाका, व्रत
ओर	:	तरफ, दिशा, पक्ष
ओस	:	तुशार, तुहिन, शबनम, हिम
और	:	अधिक, एवं, ज़्यादा, तथा, दूसरा
कठिन	:	कठोर, दुश्कर, दृढ़, सख़्त
कपड़ा	:	अंबर, चीर, पद, वसन, वस्त्रम
कमल	:	अंबुज, अरविन्द, उत्पल, कंज, जलज, नलिन, नीरज, पंकज, पद्म, पुण्डरीक, राजीव, वारिज, शतदल, सरसिज, सरोज
कमी	:	घाटा, टोटा, तंगी, न्यूनता
कल्पवृक्ष	:	कल्पतरु, कल्पद्रुम, देववृक्ष, सुरतरु, सुरद्रुम
कहानी	:	आख्यान, आख्यायिका, उपाख्यान, कथा, गल्प
कान	:	कर्ण, श्रवण, श्रवणेन्द्रिय, श्रुतिपट

कामदेव : अतनु, अनंग, कन्दर्प, काम, पंचसर, मदन, मनसिज, मनोज, मन्मथ, रतिपति, विश्वकेतु, स्मर

किनारा : कगार, कूल, छोर, तट, तीर

किरण : अंशु, कर, मयूख, मरीचि, रश्मि

किसान : कृशक, खेतहिर, हलधर, हाली

कुबेर : किन्नरेश, धनद, धनपति, धनाधिप, यक्षराज

कृशण : कान्हा, केशव, गिरिधर, गोपाल, घनश्याम, माधव, मुरारि, मोहन, राधावल्लभ, वासुदेव, श्याम

कोमल : नरम, नाजुक, मसृण, मृदु, मुलायम, सुकुमार

कोयल : कोकिल, कोकिला, परभृात, पिक, बसंतदूत, श्याम

कौशल : कुशलता, चतुराई, चातुर्य, दक्षता, निपुणता, प्रवीणता

क्रोध : आक्रोश, आवेश, कोप, गुस्सा, रोश

खल : अद्यम, कुटिल, दुर्जन, दुश्ट, धूर्त, नीच

खोज : अनुसंधान, अन्वेशण, तलाश, शोध

गंगा : अलकनंदा, जाहूनवी, त्रिपथगा, देवनदी, देसाई, देवसरी, भागीरथी, मंदाकिनी, सुरसरि, सुरसरिता

गंदा : अपवित्र, अशुद्ध, अश्लील, खराब, घिनौना, घृणित, मलिन, मैला

गंध : बास, बू, महक

गणेश : एकदन्त, गजवदन, गजानन, गणपति, भवानी–नंदन, मोदक–प्रिय, लंबोदर, विघ्न–विनाशक, विघ्नेश, विनायक

गरुण : खगकेतु, खगेश, पक्षिराज, वैनतेय, हरिवाहन

गाय : गो, गौ, धेनु, सुरभि

गुरू : अध्यापक, आचार्य, उपाध्याय, वृहस्पति, शिक्षक

घर : अयन, आगार, आलय, आवास, गृह, गेह, धाम, निकेतन, निवास, भवन, मन्दिर, शाला, सदन

घड़ा : कलश, कुंभ, गगरी, गागर, घट

घमंड : अभिमान, अहंकार, ऐंठ, गर्व, दर्प, मान

घोड़ा : अश्व, घोटक, तुरग, तुरंग, तुरंगम, वाजि, सैंधव, हय

चन्द्रमा : इन्दु, कलानिधि, चन्द्र, चाँद, निशाकर, मयंक, मृगांक, रजनीश, राकेश, विधु, शशांरक, शशि, सोम, हिमकर, हिमांशु

चतुर : कुशल, चालाक, दक्ष, नागर, निपुण, प्रवीण, योग्य, सयाना, होशियार

चमक : आभा, कांति, दमक, दीप्ति, द्युति, प्रकाश

चोट	:	आघात, घाव, प्रहार, व्रण
छल	:	कपट, चकमा, ठगी, धोखा, प्रपंच
छटा	:	कान्ति, छवि, शोभा, सुन्दरता, सौंदर्य
छाया	:	परछाई, प्रतिकृति, प्रतिबिम्ब, प्रतिमूर्ति, बिम्ब
छोटा	:	कनिश्ठ, तुच्छ, लघु, हीन
जंगल	:	अरण्य, कानन, कांतार, वन, विपिन
जल	:	अंबु, उदक, जीवन, तोय, नीर, पय, पानी, वारि, सलिल
जमुना	:	कालिंदी, यमुना, रविनंदिनी, रवि–सुता, श्यामा, सूर्य–तनया
जीभ	:	जबान, जिह्वा, रसना
झंडा	:	केतु, ध्वज, ध्वजा, निशान, पताका
तलवार	:	असिं, करवाल, कृपाण, खड्ग, चंद्रहास, शमशीर
तारा	:	उडु, तारक, तारिका, नक्षत्र, नखत
तालाब	:	जलाशय, तड़ाग, ताल, पुष्कर, पोखर, सर, सरोवर
तीर	:	आशुगू, इषु, बाण, शर, शिलीमुख
थोड़ा	:	अल्प, कम, किंचित, कुछ, जरा, तनिक, न्यून, रंच
दाँत	:	दन्त, दशन, द्विज, रद
दुख	:	कष्ट, क्लेश, क्षोभ, पीड़ा, विषाद, वेदना, व्यथा, शोक
दुर्गा	:	कल्याणी, कामाक्षी, काली, जगदम्बा, चंडी, चंडिका, भवानी, महागौरी, माता, सिहंवाहिनी
दुष्ट	:	अधम, कुटिल, खल, दुर्जन, धूर्त, पामर, वंचक, शठ
दूध	:	क्षतीर, गोरस, दुग्ध, पय
देवता	:	अमर, आदित्य, देव, निर्जर, विबुध, सुर
देह	:	कलेवर, काया, गात्र, तन, वपु, शरीर
धन	:	अर्थ, दौलत, मुद्राराशि, पूंजी, लक्ष्मी, विभूति, वित्त, श्री, सम्पत्ति, सम्पदा
धनवान	:	अमीर, धनाढ्य, धनी, श्रीमान, समृद्ध, सम्पन्न।
धनुष	:	कमान, कार्मुक, कोदण्ड, चाप, शरासन
नदी	:	अपगा, तटिनी, तरंगिनी, दरिया, नद, मिर्झरिणी, निम्नगा, सरि, सरिता
नमस्कार	:	अभिवादन, नमः, प्रणति, प्रणाम, वंदन
नया	:	अभिनव, नवीन, नूतन
निर्धन	:	कंगाल, गरीब, दरिद्र, दीन, रंक
नौकर	:	अनुचर, दास, परिचारक, भृत्य, सेवक

पंडित	:	कोविद, पारंगत, बुद्धिमान, बुध, मनीषी, विज्ञ, विद्वान, सुधी
पक्षी	:	अण्डज, खग, खेचर, चिड़िया, नभचर, पखेरू, पतंग,विहंग, विहंगम, विहग
पति	:	आर्यपुत्र, कांत, नाथ, प्राणनाथ, प्राणेश्वर, बालम, भर्ता, वल्लभ, साजन, स्वामी
पत्ता	:	किसलय, दल, पत्र, पर्ण, पात
पत्थर	:	अश्म, उपल, पाषाण, पाहन, प्रस्तर, शिला
पत्नी	:	अर्धांगिनी, कलभ, कान्ता, गृहिणी, जीवन–संगिनी, दारा, प्रिया, भार्या, वधू, वामांगिनी, वामा, स्त्री
पराजय	:	तिरस्कार, निरादर, पराभव, हार
पर्वत	:	अचल, अद्रि, गिरि, चट्टान, नग, पहाड़, भूधर, महीधर, शैल
पवन	:	अनिल, बयार, मारुत, वात, वायु, समीर, समीरण, हवा
पवित्र	:	अकलुश, निर्मल, निष्कलुष, पावन, पुण्य, पूत, शुचि, शुद्ध
पाँव	:	चरण, पग, पद, पाद, पैर
पाप	:	अध, अधर्म, दुष्कृत्य, पातक
पिता	:	जनक, बाप, बापू
पुत्र	:	आत्मज, तनय, तनुज, नन्दन, बेटा, लड़का, लाल, सुत
पुत्री	:	आत्मजा, कन्या, तनया, तनुजा, दुहिता, नन्दिनी, बेटी, लड़की, लाली, सुता
पुरस्कार	:	इनाम, तोहफा, पारितोषिक
पुरुष	:	आदमी, जन, नर, मनुज, मनुष्य, मर्द
पूजा	:	अर्चना, आराधना, उपासना, भक्ति
पृथ्वी	:	अचला, अवनि, जगती, धरणी, धरती, धरा, धरित्री, धारयित्री, भूमि, भू, मही, वसुंधरा, वसुधा
प्रकाश	:	उजाला, चमक, छवि, ज्योति, द्युति, प्रभा, रोशनी
प्रेम	:	नेह, प्रणय, प्रीति, प्यार, ममता, रति, स्नेह
बंदर	:	कपि, कीश, मर्कट, वानर, शाखामृग, हरि
बर्फ	:	तुषार, तुहिन, नीहार, हिम
बहन	:	दीदी, भगिनी, सहोदरा, स्वसा
बादल	:	अंबुद, घन, जलद, जलधर, तोयद, नीरद, पयोद, पयोधर, मेघ, वारिधर
बाल	:	अलक, कच, कुंतल, केश, चिकुर, शिरोरुह
बालक	:	बच्चा, बाल, लड़का, शावक, शिशु
बिजली	:	चंचला, चपला, तड़ित, दामिनी, विद्युत, सौदामिनी
बुद्धि	:	अक्ल, धी, प्रज्ञा, मति, मनीषा, मेधा, विवेक

ब्रह्मा	:	अज, कर्ता, कर्तारि, कमलामन, चतुरानन, चतुर्मुख, पितामह, प्रजापति, लोकेश, विधाता, विधि, स्रष्टा, स्वयंभू
भयानक	:	घोर, भयंकर, भयावह, भीषण, भीष्म, विकट, विकराल
भाग्य	:	किस्मत, दैव, नियति, प्रारब्ध, विधि, होनहार, होनी
भौंरा	:	अलि, द्विरेफ, भँवरा, भृंग, भ्रमर, मधुकर, मधुप, ाट्पद
मधु	:	ऋतुराज, कुसुमाकर, माधव, वसंत
मनुष्य	:	आदमी, इन्सान, नर, मनुज, मर्त्य, मानव
महादेव	:	आशुतोष, विलोचना, पशुपति, महेश, रुद्र, शंकर, शिव
माता	:	अम्बा, अम्बिका, जननी, धात्रा, प्रसू, माँ, मातृ।
मित्र	:	दोस्त, बंधु, मीत, सखा, सहचर, साथी, सुहृद
मिथ्या	:	अयथार्थ, असत्य, झूठ, मृषा
मीन	:	अंडज, झष, मकर, मछली, मत्स्य
मुक्ति	:	कैवल्य, निर्वाण, परमपद, मोक्ष, सद्गति
मृत्यु	:	अन्त, अवसान, देहान्त, देहावसान, निधन, प्राणान्त, मरण, मौत, शरीरान्त
मोर	:	केकी, मयूर, शिखी
यत्न	:	उद्यम, उद्योग, चेष्टा, परिश्रम, प्रयत्न, प्रयास, मेहनत
यमराज	:	जीवनपति, धर्मराज, यम, सूर्यपुत्र, हरि
युद्ध	:	रण, लड़ाई, संग्राम, संघर्ष, समर, विग्रह
युवक	:	जवान, तरुण, नौजवान, युवा
राक्षस	:	असुर, दनुज, दानव, दैत्य, निशाचर, पिसाच
राजा	:	नरेन्द्र, नरेश, नृप, नृपति, भूप, भूपति, महीप, महीपति
रात्रि	:	तमसा, निशा, निशि, यामा, यामिनी, रजनी, रात, रैन, विभावरी
रावण	:	दशकंठ, दशकंध, दशग्रीव, दशानन, लंकापति, लंकेश
लक्ष्मी	:	इन्दिरा, कमला, चंचला, चपला, पद्मा, रंभा, विष्णुप्रिया, श्री, हरिप्रिया
लहू	:	खून, रक्त, रुधिर, लाल, शोणित
वन	:	अटवी, अरण्य, कानन, कान्तार, गहन, जंगल, विपिन
वर्षा	:	बरसात, बारिश, मेंह, वृष्टि
बसंत	:	ऋतुराज, कुसुमाकर, मधुमास, माधव
विघ्न	:	अड़चन, बाधा, रुकावट
विवाह	:	गठबंधन, परिणय, पाणिग्रहण, ब्याह, शादी

विष	:	कालकूट, गरल, जहर, हलाहल
विष्णु	:	अच्युत, उपेन्द्र, कमलापति, केशव, पीताम्बर, गोविन्द, चक्रपाणि, चतुर्भुज, जनार्दन, नारायण, पीताम्बर, माधव, रमापति, लक्ष्मीपति, विश्वंभर
वृक्ष	:	तरु, दरख्त, द्रुभ, पादप, पेड़, विटप
शत्रु	:	अराति, अरि, दुश्मन, रिपु, विपक्षी, बैरी
शराब	:	मदिरा, मधु, वारुणी, सुरा, हाला
शरीर	:	काया, गात, तन, तनु, देह, वपु
शिव	:	त्रिपुरारि, त्रिलोचन, नीलकंठ, पिनाकी, भूतनाथ, महादेव, महेश, रुद्र, शंकर, शंभु, हर
शोभा	:	आभा, कांति, छटा, द्युति, प्रभा, विभा, सुषमा
संसार	:	जग, जगत, दुनिया, ब्रह्माण्ड, भव, भवन, लोक, विश्व
समय	:	अवसर, काल, वक्त
समाचार	:	खबर, वृत्त, वृतान्त, सन्देश, सूचना
समुद्र	:	अंबुधि, उदधि, जलधि, जलनिधि, नीरधि, नीरनिधि, पयोधि, पारावार, वारिधि, रत्नाकार, सागर, सिंधु
सरस्वती	:	इला, गिरा, भारती, भाषा, महाश्वेता, वाक्, वागेश्वरी, वाणी, वीणा–पाणि, वीणा–वादिनी, श्री, शारदा
सवेरा	:	अरुणोदय, उषा, प्रातः, भोर, सूर्योदयकाल
साँप	:	अहि, नाग, पन्नग, फणधर, मणि, भुजंग, भुजंगम, विषधर, व्याल, सर्प
साधु	:	अवधूत, मुनि, यति, वीतराग, वैरागी, संत, संन्यासी
सिंह	:	केसरी, केहरी, पंचमुख, पंचानन, मृगपति, मृगराज, मृगेंन्द्र, वनराज, शादू, शेर, हरि
सितारा	:	उडु, तारक, तारा, नक्षत्र
सुगंध	:	खुशबू, महक, सुरभि, सुवास, सौरभ
सुंदर	:	कमनीय, खूबसूरत, चारु, मंजु, मंजुल, मनोहर, रमणीक, रम्य, रुचिर, ललित, ललाभम
सूर्य	:	अर्क, आदित्य, दिनकर, दिनेश, दिवाकर, पतंग, प्रभाकर, भानु, भास्कर, रवि, सविता, सूरज
सेना	:	अनी, कटक, चमु, फौज, दल, वाहिनी
सोना	:	कंचन, कनक, कुंदन, सुवर्ण, स्वर्ण, हिरण्य, हेम
सौंदर्य	:	शोभा, सुंदरता, सुषमा
स्त्री	:	अबला, औरत, कान्ता, कामिनी, नारी, महिला, रमनी, ललना, वनिता, वामा, सुंदरी
स्वर्ग	:	इन्द्रलोक, दिव, देवलोक, धुलोक, नाक, सुरलोक

हनुमान : अंजनीपुत्र, अंजनी–नन्दंन, कपीन्द्र, कपीश, कपीश्वर, पवन–पुत्र, पवनसुत, बजरंगबली, महावीर, मारूति, रामदूत, वज्रांगी

हाथ : कर, पाणि, हस्त

हाथी : करी, कुंजर, कुंभी, गज, गयंद, दंती, द्विप, नाग, मतंग, हस्ती

हिरण : कुरंग, मृग, सारंग

होंठ : अधर, ओठ, लब

अभ्यास के लिए वस्तुनिश्ठ प्रश्न

1. अगणित का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

अ. अनन्त आ. असंख्य इ. अतुल ई. अनगिनत

2. अधिक का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

अ. अमिय आ. अतिशय इ. ज्यादा ई. प्रचुर

3. आकाश का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

अ. अंबर आ. अमर इ. शून्य ई. नभ

4. उन्नति का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

अ. मनोरथ आ. उत्कर्ष इ. प्रगति ई. अभ्युदय

5. कमल का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

अ. पंकज आ. उत्पल इ. वारिज ई. जलद

6. कामदेव का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

अ. मदन आ. अनंग इ. यक्षराज ई. मनोज

7. घर का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

अ. गृह आ. आलय इ. मंदिर ई. वाजि

8. घोड़ा का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

अ. अश्व आ. मयंक इ. तुरंग ई. तुरंगम

9. चन्द्रमा का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

अ. कांति आ. इन्दु इ. विधु ई. हिमांशु

10. जल का पर्यायवाची नहीं है–

अ. वारि आ. सलिल इ. सुर ई. नीर

11. दुर्गा का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

अ. चंडी आ. कामाक्षी इ. कमला ई. भवानी

12. नदी का पर्यायवाची शब्द नहीं है–
अ. उदक आ. तटिनी इ. दरिया ई. तरंगिणी

13. नौकर का पर्यायवाची शब्द है–
अ. अश्म आ. परिचालक इ. मृत्य ई. भर्ता

14. पर्वत का पर्यायवाची शब्द है–
अ. पर्ण आ. भूधर इ. खेचर ई. पातक

15. पुत्र का पर्यायवाची शब्द है–
अ. अनुज आ. तनया इ. नग ई. तनुज

16. पृथ्वी का पर्यायवाची शब्द है–
अ. मही आ. महीधर इ. पाहन ई. प्रभा

17. बादल का पर्यायवाची शब्द है–
अ. पावक आ. चिकुर इ. नीरद ई. शून्य

18. मनुष्य का पर्यायवाची शब्द है–
अ. नरेन्द्र आ. नीहार इ. नल ई. नर

19. मित्र का पर्यायवाची शब्द है–
अ. मधुकर आ. बंधु इ. प्रज्ञा ई. शाखामृत

20. राजा का पर्यायवाची शब्द है–
अ. राकेश आ. महीप इ. पादप ई. मधु

21. रात्रि का पर्यायवाची शब्द है–
अ. कामा आ. लाल इ. तरुण ई. यामा

22. वृक्ष का पर्यायवाची शब्द है–
अ. लंकेश आ. अरण्य इ. अरि ई. विटप

23. बसंत का पर्यायवाची शब्द है–
अ. कुसुमाकर आ. कुसुम इ. विपिन ई. यामिनी

24. शरीर का पर्यायवाची शब्द है–
अ. काया आ. लाल इ. उन्मेष ई. मधु

25. समुद्र का पर्यायवाची शब्द है–
अ. यति आ. कटक इ. भव ई. जलधि

उत्तर

1. इ	2. अ	3. आ	4. अ	5. ई	6. इ	7. ई	8. आ	9. अ
10. इ	11. इ	12. अ	13. इ	14. आ	15. ई	16. अ	17. इ	18. ई
19. आ	20. आ	21. आ	22. ई	23. अ	24. अ	25. ई		

foyke ;k foijhrkFkd 'kCn

जब किसी शब्द के साथ भिन्न ही नहीं विपरीत अर्थ वाला शब्द प्रयुक्त होता है, तो उसे विपरीतार्थक शब्द कहते हैं। मानव जीवन जिस प्रकार सुख–दुख रूपी ताने–बाने से बना है उसी प्रकार अनुकूल प्रतिकूल रूप और प्रभाव का होना स्वाभाविक है। ऐसे अनुकूल–प्रतिकूल संदर्भों को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए भाषा में विपरीतार्थक शब्द–युग्मों की योजना की जाती है। प्रत्येक भाषा में ऐसे युग्म प्रयुक्त होते हैं। विपरीतार्थक शब्द–युग्म के प्रयोग में कभी तथा, और, या, अथवा योजक शब्दों को अनपाया जात है, तो कभी सामासिक रूप बनाने के लिए योजक चिह्न का प्रयोग होता है; यथा–

- सुख और दुख, रात और दिन, अच्छे तथा बुरे
- सुख–दुख, रात–दिन, अच्छे–बुरे

विपरीतार्थक शब्दों के प्रयोग से भावाभिव्यक्ति विशेष स्पष्ट और प्रभावी हो जाती है। विपरीतार्थक शब्द कभी सामासिक रूप में एक साथ युग्म में प्रयुक्त होते हैं, तो कभी मध्य में योजक शब्द के साथ प्रयुक्त होते है। कभी–कभी विपरीतार्थक शब्द विस्तृत वाक्य में विपरीत भाव को प्रकट करने क लिए पर्याप्त दूरी पर प्रयुक्त होते हैं; यथा– 'धरती पर जिसक जन्म होता है उसकी मृत्यु भी निश्चित होती है' वाक्य में 'जन्म' और 'मृत्यु' पर्याप्त दूरी पर अर्थात् कई पदों के पश्चात भिन्न–भिन्न उपवाक्य में प्रयुक्त हैं। इनसे जन्म–मरण के अटूट संबंध का स्पष्ट बोध होता है। पाठ्यक्रम में निर्धारित विपरीतार्थक शब्द युग्म प्रस्तुत हैं–

शब्द	***विलोम***	***शब्द***	***विलोम***
अंधकार	प्रकाश	अंधेरा	उजाला
अग्र	पश्च	अधिक	न्यून
अनाथ	सनाथ	अनुकूल	विपरीत
अनुज	अग्रज	अनुरक्ति	विरक्ति
अनुराग	विराम	अपना	पराया
अमीर	गरीब	अमृत	विष
अर्थ	अनर्थ	अस्त	उदय
आकाश	पाताल	आग	पानी
आगत	अनागत	आगामी	विगत
आचार	अनाचार	आदर	निरादर
आदर्श	यथार्थ	आदान	प्रदान
आदि	अन्त	आय	व्यय
आयात	निर्यात	आरोह	अवरोह
आर्द्र	शुष्क	आर्य	अनार्य
आवश्यक	अनावश्यक	आशा	निराशा

आसक्ति	विरक्ति	आस्तिक	नास्तिक
आस्था	अनास्था	आहार	निराहार
इच्छा	अनिच्छा	इष्ट	अनिष्ट
इहलोक	परलोक	उग्र	शांत
उचित	अनुचित	उतार	चढ़ाव
उत्कर्ष	अपकर्ष	उत्कृष्ट	निकृष्ट
उत्तम	अधम	उत्तर	प्रश्न
उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	उत्थान	पतन
उदय	अस्त	उदार	अनुदार
उदंड	विनम्र	उद्धत	विनीत
उन्नति	अवनति	उपकार	अपकार
उपयोगी	अनुपयोगी	उपस्थित	अनुपस्थित
उष्ण	शीत	ऊँच	नीच
ऋजु	वक्र	एकता	अनेकता
ऐच्छिक	अनिवार्य	जंगम	स्थावर
जटिल	सरल	जड़	चेतन
जन्म	मृत्य	जय	पराजय
जागृति	सुषुप्ति	जीत	हार
जीवन	मृत्यु	झूठ	सच
झोंपड़ी	महल	ठोस	तरल
ठंडा	गर्म	तटस्थ	पक्षधर
तम	प्रकाश	दाएँ	बाएँ
दिन	रात	देना	लेना
दुर्लभ	सुलभ	देव	दानव
दृष्य	अदृष्य	धनी	निर्धन
धर्म	अधर्म	धीर	अधीर
नर	नारी	नरक	स्वर्ग
नवीन	प्राचीन	बुराई	भलाई
भद्र	अभद्र	भला	बुरा
भक्ष्य	अभक्ष्य	भाग्यवान	अभागा
भोगी	योगी	मंगल	अमंगल
महँगा	सस्ता	महात्मा	दुरात्मा
महान	क्षुद्र	मान	अपमान

मानव	दानव	मित्र	शत्रु
मौखिक	लिखित	यश	अपयश
याचक	दाता	योगी	भोगी
रहित	सहित	रक्षक	भक्षक
राग	द्वेष	राजा	रंक
रात	दिन	रुग्ण	स्वस्थ
रुचिकर	अरुचिकर	रूदन	हास
लौकिक	अलौकिक	वरदान	अभिशाप
वक्र	सरल / ऋजु	सबल	निर्बल
सभ्य	असभ्य	सम	विषम
समान	असमान	समीप	दूर
सरल	कठिन	सरस	नीरस
सर्वज्ञ	अल्पज्ञ	साकार	निराकार
सार्थक	निरर्थक	सुख	दुख
सुगम	दुर्गम	सेवक	स्वामी
स्थिर	अस्थिर	स्वतंत्र	परतंत्र
स्वस्थय	अस्वस्थ	स्वाधीन	पराधीन
कटु	मधुर	कठोर	मृदु
कायर	वीर	कुटिल	सरल
कोमल	कठोर	क्रय	विक्रय
क्रिया	प्रतिक्रिया	कृतज्ञ	कृतध्न
कृपालु	क्रूर	खंडन	मंडन
खरा	खोटा	खल	सज्जन
गमन	आगमन	गर्मी	सर्दी
गहरा	उथला	गुण	दोष
गुप्त	प्रकट	गुरु	शिष्य
ग्रामीण	नागरिक	गृहस्थ	संन्यासी
घातक	रक्षक	घृणा	प्रेम
चंचल	स्थिर	चतुर	मूर्ख
चर	अचर	चल	अचल
चेतना	मूर्छा	छली	निश्छल
निद्रा	जागरण	निरक्षर	साक्षर
निरर्थक	सार्थक	निर्गुण	सगुण

निर्दयी	सदय	निर्मल	मलिन
निश्चित	अनिश्चित	नीरस	सरस
नूतन	पुरातन	न्याय	अन्याय
पंडित	मूर्ख	पक्ष	विपक्ष
पाप	पुण्य	पूर्वी	पश्चिमी
पूर्ण	अपूर्ण	प्रत्यक्ष	परोक्ष
प्रशंसा	निन्दा	प्रवृति	निवृति
प्रस्तुत	अप्रस्तुत	प्राचीन	नवीन
प्राच्य	पाश्चात्य	फूल	काँटा
बनना	बिगड़ना	बंधन	मोक्ष
बलवान	निर्बल	बहुत	थोड़ा
बाहर	भीतर	बुद्धिमान	बुद्धिहीन, मूर्ख
विकास	ह्रास	विजय	पराजय
विधवा	सधवा	विधि	निषेध
विरोध	समर्थन	विवाहित	अविवाहित
विष	अमृत	वैध	अवैध
वृद्धि	क्षय	शकुन	अपशकुन
शांत	अशांत	शिष्ट	अशिष्ट
शीत	ग्रीष्म	शुद्ध	अशुद्ध
शोक	हर्ष	संकीर्ण	विस्तीर्ण
संक्षेप	विस्तार	संतोष	असंतोष
संध्या	प्रभात	संधि	विग्रह
सक्रिय	निष्क्रिय	सगुण	निर्गुण
सजीव	निर्जीव	सज्जन	दुर्जन
सत्य	असत्य	सदाचार	दुराचार
सफल	विफल, असफल	स्वाभाविक	अस्वाभाविक
स्वार्थ	परमार्थ	हर्ष	शोक
हल्का	भारी	हानि	लाभ
हार	जीत	हित	अहित
ह्रस्व	दीर्घ	सामान्य	विशेष
सुकर	दुष्कर	सुगन्ध	दुर्गन्ध
सुर	असुर	स्थायी	अस्थायी
स्थूल	सूक्ष्म	स्वदेश	विदेश

अभ्यास के लिए वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द बताइए–

1. **अग्र**	:	अ. अग्रज	आ. पश्च	इ. मनोज	ई. भूत
2. **आकाश**	:	अ. पाताल	आ. समुद्र	इ. नरक	ई. सूर्य
3. **आदान**	:	अ. पायदान	आ. पीकदान	इ. दान	ई. प्रदान
4. **आरोह**	:	अ. प्ररोह	आ. मोह	इ. विरोध	ई. अवरोह
5. **इष्ट**	:	अ. अनिष्ट	आ. कनिष्ट	इ. विशिष्ट	ई. शिष्ट
6. **उत्थान**	:	अ. वितान	आ. पतन	इ. मचान	ई. तूफाान
7. **उद्धत**	:	अ. पीति	आ. प्रतीत	इ. सुनीत	ई. विनीत
8. **ऋजु**	:	अ. वक्र	आ. तक्र	इ. चक्र	ई. हुक
9. **क्रय**	:	अ. तय	आ. विक्रय	इ. तपन	ई. सुनकर
10. **गगन**	:	अ. आगमन	आ. मगन	इ. चलन	ई. पतन
11. **चल**	:	अ. मचल	आ. पल	इ. गल	ई. अचल
12. **जड़**	:	अ. मूर्ख	आ. मूल	इ. चेतन	ई. जड़ना
13. **दिन**	:	अ. दिवस	आ. रात	इ. सुख	ई. उजाला
14. **नवीन**	:	अ. नया	आ. नूतन	इ. अर्वाचीन	ई. प्राचीन
15. **प्रत्यक्ष**	:	अ. परोक्ष	आ. पक्ष	इ. विपक्ष	ई. साथ
16. **महान**	:	अ. भद्र	आ. क्षुद्र	इ. अग्र	ई. तक
17. **याचक**	:	अ. भक्षक	आ. रक्षक	इ. दाता	ई. माता
18. **रहित**	:	अ. बहुत	आ. चलित	इ. कुपित	ई. सहित
19. **लौकिक**	:	अ. अलौकिक	आ. भौतिक	इ. मौलिक	ई. खालिक
20. **वरदान**	:	अ. अभिशाप	आ. प्रताप	इ. प्रलाप	ई. विलाप
21. **विकास**	:	अ. हताश	आ. विनाश	इ. प्रकाश	ई. ह्रास
22. **विधि**	:	अ. ब्रह्मा	आ. निषेध	इ. अविधि	ई. प्रविघि
23. **विष**	:	अ. अमृत	आ. हलाहल	इ. पानी	ई. जीवन
24. **संक्षेप**	:	अ. बड़ा	आ. विशाल	इ. महान	ई. विस्तार
25. **सम**	:	अ. असम	आ. विषम	इ. खसम	ई. सामान
26. **साकार**	:	अ. कार	आ. विकार	इ. निराकार	ई. महाकार
27. **सुर**	:	अ. देवता	आ. असुर	इ. वीर	ई. इन्द्र
28. **स्थूल**	:	अ. धरती	आ. विशाल	इ. पहाड़	ई. सूक्ष्म
29. **स्वाधीन**	:	अ. पराधीन	आ. आधीन	इ. विचाराधीन	ई. स्वतंत्र
30. **हानि**	:	अ. धोखा	आ. आम.	इ. लाभ	ई. व्यय
31. **ह्रस्व**	:	अ. हल	आ. जोड़	इ. भाग	ई. दीर्घ

उत्तर

1. आ	2. आ	3. ई	4. ई	5. अ	6. आ	7. ई	8. अ	9. आ
10. अ	11. ई	12. इ	13. आ	14. ई	15. अ	16. आ	17. इ	18. ई
19. अ	20. अ	21. ई	22. आ	23. अ.	24. ई	25. आ	26. इ	27. आ
28. ई	29. अ	30. इ	31. ई					

okD; d fy, ,d 'kCn

भावाभिव्यक्ति के साधन को भाषा कहते हैं। जिस भाषा में सीमित शब्दों मे स्पष्ट और गंभीर भावाभिव्यक्ति संभव हो उसे श्रेष्ठ भाषा की संज्ञा दी जाती है। व्यक्ति सूभात्मक भाषा में अपने भावों को प्रकट करना चाहता है। जिस भाव को पूरे वाक्य में प्रकट किया जाता है, उसे एक शब्द में प्रकट करना संभव होता है। यही सूभात्मक भाषा का प्रमुख लक्षण है। प्रत्येक भाषा में ऐसे शब्दों की भावाभिव्यक्ति में विशेष भूमिका होती है। ऐसे शब्दों के प्रयोग से भाषा और साहित्य को परिमाजित और उत्कृष्ट रूप मिलता है। इस प्रकार एक वाक्य के स्थान पर एक शब्द के प्रयोग का महत्व स्वतः सिद्ध होता है।

पाठ्यक्रम में निर्धारित ऐसे वाक्यों के लिए प्रयुक्त शब्दों के संदर्भ प्रस्तुत हैं–

जो अनुकरण करेन योग्य हो	अनुकरणीय
जो धन का दुरुपयोग करता हो	अपव्ययी
जिसे जाना न जा सके	अज्ञेय
जिसके आने की तिथि निश्चित न हो	अतिथि
जिसका आदि न हो	अनादि
जो कुछ न जानता हो	अज्ञ
जिसकी कल्पना न की जा सके	अकल्पनीय
जिसके समान कोई दूसरा न हो	अद्वितीय
जहाँ जाया न जा सके	अगम्य
जिसे जीता न जा सके	अजेय/अपराजेय
जिसका अन्त न हो	अनंत
जो सदा रहे /जो कभी मरता न हो	अमर
जिसका जन्म न हुआ हो	अजन्मा
जो थोड़ा बोलता हो	अल्पभाषी/मितभाषी
जिसकी गहराई का पता न चले	अथाह
जो सबसे आगे चलता है	अग्रगामी /अग्रगण्य/अग्रणी
जिसके वास का किसी को पता न हो	अज्ञातवास
जो कानून के विरुद्ध हो	अवैध
जिसका इलाज न हो सके	असाध्य

जिसका विश्वास न किया जा सके	अविश्वसनीय
जो होकर ही रहे	अवश्यंभावी
किसी वस्तु का बढ़ा–चढ़ा कर वर्णन करना	अतिशयोक्ति
जिसका कोई स्वामी/नाथ न हो	अनाथ
जिसका भाग्य अच्छा न हो	अभागा/भाग्यहीन
जो कम व्यय करता हो	अल्पव्ययी/मितव्ययी
जिसे क्षमा न किया जा सके	अक्षम्य
जिसे भेदा न जा सके	अभेद्य
जिसका अनुभव इन्द्रियों द्वारा न हो	अतीन्द्रिय
सब या कुछ राष्ट्रों से संबंध रखने वाला	अन्तर्राष्ट्रीय
जिसका ज्ञान कम हो/कम जानने वाला	अल्पज्ञ
जो कुछ न करता हो	अकर्मण्य
बिना वेतन के काम करने वाला	अवैतनिक
जो दिखाई न दे	अदृश्य
जिसका कोई शत्रु न हो	अजातशत्रु
जिसका मूल्य न आँका जा सके	अमूल्य
जो नियम के अनुसार न हो	अनियमित
जिसमें संदेह न हो	असंदिग्ध
जिसे भुलाया न जा सके	अविस्मरणीय
जो इस संसार से बाहर की वस्तु हो	अलौकिक
दोपहर के बाद का समय	अपराह्न
जिसके शरीर में केवल हड्डियाँ शेष रह गई हों	अस्थिशेष
जिसका जन्म न हो	अजन्मा
जिस पर मुकदमा चल रहा हो	अभियुक्त
जहाँ जाना संभव न हो	अगम
बड़ा भाई	अग्रज
परस्पर एक दूसरे पर आश्रित	अन्योन्याश्रित
जिसका निर्णय न हो सका हो	अनिर्णीत
जिसकी तुलना न की जा सके	अतुलनीय
कम खाने वाला	अल्पाहारी/मिताहारी

जो वाणी द्वारा व्यक्त न की जा सके	अनिर्वचनीय
जिसका दमन न हो सके	अदम्य
जो बात कही न जा सके	अकथनीय
जिसका वर्णन न किया जा सके	वर्णनातीत / अवर्णनीय
अवसर के अनुसार बदल जाने वाला	अवसरवादी
जो बात पहले कभी न हुई हो	अभूतपूर्व
जो बध करने योग्य न हो	अबध्य
दूसरे के पीछे चलने वाला	अनुगामी / अनुचर / अनुयायी
जिसके पास कुछ न हो	अकिंचन
जिसे छूना मना किया गया हो	अस्पृश्य
जिसे छोड़ा या हटाया न जा सके	अपरिहार्य / अनिवार्य
छः मास में एक बार होने वाला	अर्धवार्षिक / षटमासिक
जिस पर अभियोग लगाया गया हो	अभियुक्त / प्रतिवादी
जिसमें शक्ति न हो	अशक्त
जो पहले न पढ़ा हो	अपठित
जिसकी आशा न की गई हो	अप्रत्याशित
जिसकी कोई उपमा न हो	अनुपम
जो सहन न किया जा सके	असह्य
जो करने योग्य न हो	अकरणीय
जिसको काटा न जा सके	अकाट्य
जिसका मन / ध्यान दूसरी ओर हो	अन्यमनस्क
किसी चीज की खोज करने वाला	अन्वेषक
मन में होने वाला ज्ञान	अन्तर्ज्ञान
अन्दर छिपा हुआ	अन्तर्निहित
जिसे किसी विषय की जानकारी न हो	अनभिज्ञ
जो नष्ट न हो	अविनाशी / अनश्वर
जो आँखों के सामने न हो	अप्रत्यक्ष
जिसका पार न पाया जा सके	अपार
जिसे कभी बुढ़ापा न आये	अजर
जो परिचित न हो	अपरिचित

जो कभी तृप्त न होता हो	अतृप्त
जो पढ़ा लिखा न हो	अनपढ़ / निरक्षर
छोटा भाई	अनुज
जिसकी गिनती न की जा सके	अगणित / अगणनीय
जो बात न कही गई हो	अनकही
बिना सोचे–समझे किया गया विश्वास	अंधविश्वास
जिसके समान कोई दूसरा न हो	अनन्य
जिसके आर–पार न देखा जा सके	अपारदर्शी / अपारदर्शक
नई चीज़ की खोज करने वाला	आविष्कारक
जिसे किसी से लगाव न हो	अलिप्त / निर्लिप्त
अपनी हत्या स्वंय करना	आत्महत्या
अपनी प्रशंसा करने वाला	आत्मश्लाघी
आकाश में घूमने वाला	नभग / नभचर / आकाशचारी
अतिथि का सत्कार	आतिथ्य
आज्ञा पालन करने वाला	आज्ञाकारी
दूसरे देश से मँगाया जाना	आयात
जो दूर की बात सोच लेता / देख लेता हो	दूरद्रष्टा
काम से जी चुराने वाला	कामचोर
जिसे कभी लज्जा / शर्म न आती हो	निर्लज्ज / बेशर्म
जो धर्म का काम करे	धर्मात्मा
जो काम सरल हो	सुकर
प्रतिदिन होने वाला	दैनिक
जिस पर उपकार किया गया हो	उपकृत
जिसका कोई अर्थ न हो	निरर्थक
उपजाऊ भूमि	उर्वरा
उपकार को मानने वाला	कृतज्ञ
उद्योग से संबंधित	औद्योगिक
जो सभी का प्रिय हो	सर्वप्रिय
अवश्य होने वाली घटना	भवितव्यता
जिसमें विष हो	विषैला

इन्द्रियों से परे	इन्द्रियातीत
हिंसा करने वाला	हिंसक
जिसकी तीन भुजाएं हों	त्रिभुज
जिसके मन मे कोई कपट न हो	निष्कपट
जिसकी आत्मा महान हो	महात्मा
अत्यंत सुंदरी स्त्री	रूपसी
हाथ से लिखा हुआ	हस्तलिखित
जिसके हाथ में वज्र हो	वज्रपाणि
छात्रों के रहने का स्थान	छात्रावास
जो किसी के पक्ष में न हो	तटस्थ
सुख की इच्छा रखने वाला	सुखार्थी
आँखों के सामने होने वाला	प्रत्यक्ष
जो स्वंय पैदा हुआ हो	स्वंयभू
जंगल में स्वयं लगने वाली आग	दावाग्नि
जो अभी–अभी पैदा हुआ हो	नवजात
जिसकी परीक्षा ली जा चुकी हो	परीक्षित
जिस पुस्तक में आठ अध्याय हों	अष्टाध्यायी
ईश्वर में विश्वास रखने वाला	आस्तिक
जो अपनी हत्या स्वयं करता हो	आत्मघाती / आत्महंता
ऊपर चढ़ने वाला	आरोही
अचानक होने वाली बात / घटना	आकस्मिक
आदि से अन्त तक	आद्योपान्त
आलोचना करने वाला	आलोचक
जिसकी आयु बहुत लंबी हो	दीर्घायु
जो भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों देखने वाला हो	त्रिकालदर्शी
जो दान करता हो	दानी
जो दूसरों से ईर्ष्या रखता हो	ईर्ष्यालु
जो जाना पहचाना हो	परिचित
जो बाद में अधिकारी बने	उत्तराधिकारी
तीनों लोको का स्वामी	त्रिलोकी

नीचे लिखा हुआ	निम्नलिखित
जिसका रूप अच्छा न हो	कुरूप
वह भूमि जो उपजाऊ न हो	ऊसर
जो उच्च कुल में पैदा हुआ हो	कुलीन
जो कल्पना से परे हो	कल्पनातीत
जिसक आचरण अच्छा हो	सदाचारी
जिस पुरुष की पत्नी की मृत्यु हो गई हो	विधुर
मांस खानेवाला	मांसाहारी / सामिषभोजी
जो क्षमा करने योग्य हो	क्षम्य
बड़ी इमारत के टूटे–फूटे भाग	खंडहर
प्रशंसा करने योग्य	प्रशंसनीय
पश्चिम से संबंध रखने वाला	पाश्चात्य
वीर पुत्र को जन्म देने वाली माता	वीरप्रसू
खून से रंगा हुआ	रक्तरंजित
सौतेली माता	विमाता
बहुत समय तक बना रहने वाला	चिरस्थायी
जो जन्म से अंधा हो	जन्मांध
आँखों के सामने न होने वाला	परोक्ष
शक्ति का उपासक	शाक्त
जो पूरी तरह से बरबाद हो गया हो	ध्वस्त
जिसका जन्म दो बार हुआ हो	द्विज
पाप करने के बाद स्वय दण्ड पाना	प्रायश्चित
दूसरों का भला करने वाला	परोपकारी
जो बहुत से रूप धारण करता हो	बहुरुपिया
शरीर / काया संबंधी	दैहिक / कायिक
रजोगुण / राजा से संबंधी	राजसी
नीति जानने वाला	नीतिज्ञ
जो मोह न करता हो	निर्मोही
बुरे चरित्रवाला	दुष्चरित्र
दर्शन शास्त्र को जानने वाला	दार्शनिक

जहाँ पहुँचना कठिन हो	दुर्गम
सदा सत्य बोलने वाला	सत्यवादी
जीवनदान देने वाली औषधि	प्राणदा
जिसकी मछली/मीन जैसी आँखें हों	मीनाक्षी
जिसने यश प्राप्त किया है	यशस्वी
लोहे के समान दृढ़ निश्चयवाला	लौहपुरुष
जो वन में विचरण करे	वनचर
जो नष्ट होने वाला हो	नश्वर
स्मरण कराने वाला	स्मारक
शक्ति के अनुसार	यथाशक्ति
जो पढ़ने योग्य हो	पठनीय
जो अपने पैरों पर खड़ा हो	स्वावलंबी
जिसकी भुजा ऊपर की ओर हो	ऊर्ध्वबाहु
राज्य से विद्रोह करने वाला	राजद्रोही
नकली वेश में रहने वाला	छद्मवेशी
जनता द्वारा चलाया जाने वाला राज्य	जनतंत्र
साफ–साफ कहने वाला	स्पष्ट वक्ता
परिवार के साथ	सपरिवार
जिसमें संदेह हो	संदिग्ध
संध्या और रात्रि के बीच का समय	गोधूलिबेला
अपना नाम पूरा/संक्षिप्त स्वंय लिखना	हस्ताक्षर
इतिहास जानने वाला	इतिहासज्ञ/ऐतिहासिक
चिंता में डूबा रहने वाला	चिंतित
जो ऊपर कहा/लिखा गया हो	उपर्युक्त/उपरिलिखित
जिसे दण्ड का भय न हो	उद्दण्ड
जो केवल कहने एवं दिखाने के लिए हो	औपचारिक
जो बात लोगों से सुनी गई हो	किंवदन्ती/जनश्रुति
जो कार्य कष्ट से सिद्ध हो	दुःसाध्य/कष्टसाध्य
जो कड़वा बोलता हो	कटुभाषी
फल खाकर ही रहने वाला	फलाहारी

जिसकी बहुत अधिक चर्चा हो	बहुचर्चित
वाणी संबंधी	वाचिक
तमोगुण संबंधी	तामसी
वह पहाड़ जिससे आग निकली हो	ज्वालामुखी
अच्छे चरित्रवाला	सच्चरित्र
जिसमें दया हो	दयालु
जो कठिनाई से प्राप्त हो	दुर्लभ
जो देखने योग्य हो	दर्शनीय
परदेश में जाकर बस जाने वाला	प्रवासी
बच्चों के लिए उपयोगी	बालोपयोगी
जिसकी मरने की अवस्था हो	मुमूर्ष
जिसके नीचे रेखा खिंची हो	रेखांकित
जिसके पास लाखों रुपया हो	लखपति
जो स्थिर रहे	स्थावर
जिसको डर/भय न हो	निडर/निर्भय
वसुदेव का पुत्र	वासुदेव
जिसके पाँच मुख हों	पंचानन
रोगी का इलाज करने वाला	चिकित्सक
अपनी बात पर अड़ा रहने वाला	अड़ियल/हठधर्मी
न्याय शास्त्र का अच्छी तरह जानने वाला	नैयायिक
जिसे देखकर डर लगे	डरावना/भयावह
पति–पत्नी का जोड़ा	दम्पति
जिसने ऋण लिया हो	ऋणी
एक ही जाति के	सजातीय
पुरुषत्वहीन व्यक्ति	क्लीव
अपना मतलब निकालने वाला	स्वार्थी
जिसका कोई अर्थ हो	सार्थक
जिसके एकाधिक अर्थ निकलें	श्लिश्ट
जिससे घृणा की जाए	घृणित
जिसने ऋण चुका दिया हो	उत्ऋण

एक व्यक्ति का राज्य	एकतंत्र
जो व्यक्ति अपनी बुराई के लिए प्रसिद्ध हो	कुख्यात
तेज बुद्धि वाला	कुशाग्र बुद्धि
बुरे मार्ग पर चलने वाला	कुमार्गी
कांटों से भरा हुआ	कंटकाकीर्ण
निरन्तर कर्मशील रहने वाला	कर्मठ
आकाश को छूने वाला	गगनचुम्बी
जो छिपाने योग्य हो	गोपनीय
जिसके चार भुजाएं हों	चतुर्भुज
दूसरों के दोष ढूंढने वाला	छिद्रान्वेषी
जीने की प्रबल इच्छा	जिजीविषा
जानने की इच्छा रखने वाला	जिज्ञासु
तीन मास में एक बार होने वाला	त्रैमासिक
जो पुत्र गोद लिया हो	दत्तक
जिसका दमन करना कठिन हो	दुर्दम्य
जिसको भेदना कठिन हो	दुर्भेद्य
जो दो भाषाएं जानता हो	दुभाषिया
जो विनीत/नम्र न हो	दुर्विनीत
जिसे लाँघना कठिन हो	दुर्लंध्य
जिसके धन न हो	निर्धन
जिसका कोई उद्देश्य न हो	निरुद्देश्य
जो उत्तर न दे सके	निरुत्तर
जहाँ कोई न रहता हो	निर्जन
जिसमें कोई दोष न हो	निर्दोष
जिसमें दया न हो	निर्दयी
घूमने–फिरने वाला	घुमक्कड़
ईश्वर पर विश्वास न करने वाला	नास्तिक
जिसका हृदय पत्थर के समान कठोर हो	पाषाण हृदय
जो दूसरों के सहारे जीता हो	परोपजीवी
जो किसी विषय का पूर्ण विद्वान हो	पारंगत

इतिहास से पहले का	प्रागैतिहासिक
दूसरे लोक से संबंधित	पारलौकिक
युद्ध में स्थिर रहने वाला	युधिष्ठिर
पच्चीस वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में होने वाला उत्सव	रजत जयंती
जिस पर विश्वास किया जा सके	विश्वस्त / विश्वसनीय
जिसे वाणी पर पूर्ण अधिकार हो	वाचस्पति
जिसका पति मर चुका हो	विधवा
जिसके हाथ में वीणा हो	वीणापाणि
जिस स्त्री के संतान न होती हो	बंध्या
शत्रु को मारने मे समर्थ	शत्रुध्न
जो टुकड़े–टुकड़े हो गया हो	खंडित
छिपकर खबर लेने वाला	गुप्तचर
चार वेदों का जानने वाला	चतुर्वेदी
जिसके हाथ में चक्र हो	चक्रपाणि
जल में रहने वाला	जलचर
जिसने अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली हो	जितेन्द्रिय
जो किसी का पक्ष न ले	तटस्थ / निष्पक्ष
कठिनाई से किया जाने वाला कार्य	दुष्कर
बुरे आचरण वाला	दुराचारी
आगे / भविष्य की सोचने वाला	दूरदर्शी
जिसे समझना कठिन हो	दुर्बोध
बहुत तेजी से चलने वाला	द्रुतगामी
जो केवल दूध पर निर्वाह करे	दुग्धाहारी
धुएँ से भरा हुआ	धूम्राच्छादित
जिसका कोई आधार न हो	निराधार
निरीक्षण करने वाला	निरीक्षक
जिसकी कोई इच्छा न हो	निस्पृह
जिसका कोई आकार न हो	निराकार
जिसने कोई अपराध न किया हो	निरपराध
जो मांस न खाता हो	निरामिष भोजी / शाकाहारी

जिसके मन में ममता न हो	निर्मम
जो अभी–अभी आया हो	नवागन्तुक
पत्तों की बनी हुई कुटिया	पर्णकुटी
जो सबके साथ प्रेमपूर्वक बोलता हो	प्रियभाषी / प्रियंबद
बाद में मिला हुआ अंश	प्रक्षिप्त
रास्ता दिखाने वाला	पथप्रदर्शक
बुद्धि ही जिसके नेत्र हों (नेत्रहीन)	प्रज्ञाचक्षु
दूसरों के सहारे पर रहने वाला	परावलंबी
मांस में एक बार होने वाला	मासिक
जो लोगों में प्रिय हो	लोकप्रिय
किसी संस्था / व्यक्ति के पचास वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में होने वाला उत्सव	स्वर्णजयंती
किसी विषय का विशेष ज्ञान रखने वाला	विशेषज्ञ
व्याकरण जानने वाला	वैयाकरण
विष्णु का उपासक	वैष्णव
वर्ष / साल में एक बार होने वाला	वार्षिक / सालाना
जिसे संसार के प्रति मोह न रहा हो	वीतरागी
सदा रहने वाला	शाश्वत / स्थायी
शिव का उपासक	शैव
हित चाहने वाला	शुभेच्छु / हितैषी
जो शरण में आया हो	शरणागत
एक ही समय में होने वाला	समसामयिक / समकालीन
किसी संस्था / व्यक्ति के साठ वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में होने वाला उत्सव	हीरक जयंती
सप्ताह में एक बार होने वाला	साप्ताहिक
सबके मन की बात जानने वाला	सर्वान्तर्यामी
जिसका पति जीवित हो	सधवा / सुहागिन
जो सरलता से प्राप्त हो	सुलभ
संकट में ग्रस्त	संकटग्रस्त / विपन्न
जो साथ पढ़ता हो	सहपाठी
प्रतियोगिता आदि में किसी से होड़ लेना	स्पद्र्धा / प्रतिस्पद्र्धा

दूसरे के काम में हाथ डालना	हस्तक्षेप
क्षण/शीघ्र टूटने/नष्ट होने वाला	क्षण–भंगुर
जिसका इलाज न हो	लाइलाज
सिर पर धारण करने योग्य	शिरोधार्य
जो शरण में आना चाहता हो	शरणार्थी
पत्नी के साथ	सपत्नीक
जिसमें सबकी सम्मति हो	सर्वसम्मति
सबसे अधिक शक्तिवाला/जिसमें सब प्रकार की शक्ति हो	सर्वशक्तिमान
सब कुछ जानने वाला	सर्वज्ञ
सहन करने की शक्तिवाला	सहनशील/सहिष्णु
जो हर स्थान पर विद्यमान हो	सर्वव्यापक
जो स्वयं सेवा करता है	स्वयंसेवक
जो सबके साथ समान व्यवहार करे	समदर्शी
समान अवस्था का	समवयस्क
युगों से चला आने वाला	सनातन
हानि को पूरा करना	क्षतिपूर्ति
बहुत बोलने वाला	वाचाल
जो साफ–साफ पढ़ा जाए	सुवाच्य

अभ्यास के लिए वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निम्नलिखित वाक्यों के लिए शुद्ध एक शब्द बताइए–

1. जो अनुकरण करने योग्य हो–

   अ. नकल आ. अनुकरणीय इ. प्रतिलिपी ई. करणीय

2. जहाँ जाया न जा सके–

   अ. अगम्य आ. दूर इ. अतीत ई. अतल

3. जो कम खर्च करता है–

   अ. कंजूस आ. गरीब इ. निर्धन ई. मितव्ययी

4. बिना वेतन के कार्य करने वाला–

   अ. अवैतनिक आ. कामचोर इ. बेगार ई. स्वकर्मी

5. जिस पर मुकदमा चल रहा हो–
   अ. आतंकी आ. डाकू इ. अभियुक्त ई. चोर
6. अवसर के अनुसार बदल जाने वाला
   अ. दलबदलू आ. अस्थिर इ. चंचल ई. अवसरवादी
7. जिसके पास कुछ न हो–
   अ. गरीब आ. अकिंचन इ. निर्धन ई. नंगधडंग
8. जिसकी आशा न की गई हो–
   अ. अप्रत्याशित आ. निराशा इ. आशाहीन ई. भग्नाश
9. जिसके समान दूसरा न हो–
   अ. भिन्न आ. विपन्न इ. अन्य ई. अनन्य
10. जो दूर की बात सोच लेता है
   अ. दूरद्रष्टा आ. दूरगामी इ. दूरस्थ ई. दूरभाष
11. जंगल में लगने वाली आग–
   अ. ऊष्माग्नि आ. वन–अग्नि इ. दावाग्नि ई. वडवाग्नि
12. वह भूमि जो उपजाऊ न हो–
   अ. जंगल आ. ऊसर इ. खंजर ई. खेतिहर
13. जो पूरी तरह बरबाद हो गया हो–
   अ. भ्रष्ट आ. अस्त इ. नष्ट ई. ध्वस्त
14. जिसकी मछली जैसी आँखें हों–
   अ. मीनाक्षी आ. मृगनयनी इ. कमलनयनी ई. चंचलाक्षी
15. परदेश में जाकर बस जाने वाला–
   अ. परदेशी आ. स्वदेशी इ. प्रवासी ई. विदेशी
16. जहाँ कोई भी आदमी न रहता हो–
   अ. जंगल आ. निर्जन इ. शून्य ई. सुनसान
17. ईश्वर पर विश्वास न करने वाला–
   अ. नास्तिक आ. आस्तिक इ. अविश्वासी ई. परावलम्बी
18. जिसे वाणी पर पूरा अधिकार हो–
   अ. वाचस्पति आ. वाचाल इ. वाक्पटु ई. वागर्थ
19. किसी व्यक्ति/संस्था के पचास वर्ष पूरे होने पर मनाई जाने वाली जयंती–
   अ. हीरक जयंती आ. रजत जयंती इ. स्वर्ण जयंती ई. मौतिक्य जयंती

20. किसी संस्था/व्यक्ति के साठ वर्ष पर मनाया जाने वाला उत्सव–

अ. रजत जयंती आ. हीरक जयंती इ. स्वर्ण जयंती ई. मोतिक्य जयंती

21. जो सभी स्थानों पर विद्यमान है–

अ. सर्वज्ञ आ. सर्वांगी इ. सर्वशक्तिमान ई. सर्वव्यापी

उत्तर

1. आ	2. अ	3. ई	4. अ	5. इ	6. ई	7. आ	8. अ	9. ई
10. अ	11. इ	12. आ	13. ई	14. अ	15. इ	16 आ	17. अ	18. अ
19. इ	20. आ	21. ई						

egkoj

मुहावरा का शाब्दिक अर्थ है— अभ्यास। भाषा में चमत्कारिक अर्थ प्रकट करने के लिए जब वाक्य या वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ में प्रयुक्त होने लगे, तो उसे मुहावरा की संज्ञा दी जाती है। प्रभावी भावाभिव्यक्ति में मुहावरों की विशेष भूमिका होती है। मुहावरे के प्रयोग से एक ओर भाषा का स्वरूप आकर्षक हो जाता है, तो दूसरी ओर भावाभिव्यक्ति अधिक प्रभावी हो जाती है। यथा—यदि "वह बहुत गुस्से में है" के स्थान पर कहा जाए "वह आग बबूला हो रहा है" तो कहीं अधिक प्रभावोत्पादक रूप सामने आता है।

पाठ्यक्रम में निर्धारित मुहावरों के अर्थ प्रयोग प्रस्तुत हैं—

1. **अंग—अंग ढीला होना :** बहुत थक जाना

   प्रयोग—काम करते करते अंग—अंग ढीला हो रहा है।

2. **अंग—अंग मुस्कराना :** बहुत प्रसन्न होना

   प्रयोग— प्रतियोगिता में प्रथम आने पर उसका अंग—अंग मुस्कराने लगा।

3. **अंगूठा दिखाना :** इन्कार करना

   प्रयोग— उससे किताब माँगी तो उसने अँगूठा दिखा दिया।

4. **अंगार उगलना :** क्रोध में कटु शब्द बोलना

   प्रयोग— मुझसे भूल हो गई और रमेश अंगार उगलने लगा।

5. **अंधे की लाठी :** एक मात्र सहारा

   प्रयोग— सुधीर अपने अंधे पिता की लाठी है।

6. **अक्ल का दुश्मन :** मूर्ख

   प्रयोग— वह अक्ल का दुश्मन है, उसे मत समझाओ।

7. **अक्ल पर पत्थर पड़ना :** कुछ समझ में न आना

   प्रयोग— कुछ तो बताओ, क्या अक्ल पर पत्थर पड़ गए हैं।

8. **अगर—मगर करना :** बहाना बनाना

   प्रयोग— अगर—मगर करके निकल जाना उसकी आदत है।

9. **अपना उल्लू सीधा करना :** स्वार्थ साधना

   प्रयोग— वह अपना उल्लू सीधा करके गायब हो जाएगा।

10. **अपनी खिचड़ी अलग पकाना :** सबसे अलग रहना

    प्रयोग— दिनेश अपनी खिचड़ी अलग ही पकाता रहता है।

11. **अपने मुँह मियां मिट्ठू बनना :** अपनी बड़ाई स्वयं करना
प्रयोग– तुम्हें करना कुछ नहीं है, बस अपने मुँह मिया मिटठू बनते रहो।
12. **अपने पैर पर कुल्हाडी मारना :** अपनी हानि स्वयं करना
प्रयोग– अपने दोस्त को धोखा देकर अपने पैर पर कुल्हाड़ी मार रहे हो।
13. **आँख का तारा :** बहुत प्यारा
प्रयोग– मनोहर अपनी माँ की आँखों का तारा है।
14. **आँखें खुलना :** होश में आना
प्रयोग– लुट जाने के बाद आँखें खुली।
15. **आँखें दिखाना :** क्रोधित होना
प्रयोग– मैंने तुम्हें कुछ भी नहीं कहा फिर आँखे क्यों दिखा रहे हो।
16. **आँखे पथरा जाना :** प्रतीक्षा करके थक जाना
प्रयोग– तुम्हारी प्रतीक्षा में मेरी आँखें पथरा गईं।
17. **आँखें बिछाना :** आदर–सत्कार करना
प्रयोग– अतिथि के स्वागत में आँखें बिछाए खडे हैं।
18. **आँखों का काँटा :** अप्रिय व्यक्ति
प्रयोग– श्यामा उसकी आँखों का काँटा है।
19. **आँच न आने देना :** रंचमात्र कष्ट न होना
प्रयोग– उसके रहते मनोज पर आँच नहीं आ सकती
20. **आकाश के तारे तोड़ना :** असंभव कार्य करना
प्रयोग– हिम्मत करो तो आकाश के तारे तोड़ सकते हो।
21. **आकाश – पाताल एक करना :** पूरा प्रयत्न करना
प्रयोग– स्वतंत्रता सेनानियों ने आकाश–पाताल एक कर दिया।
22. **आकाश से बातें करना :** बहुत ऊँचा होना
प्रयोग– हिमालय आकाश से बातें करता है।
23. **आग बबूला होना :** बहुत गुस्से में होना
प्रयोग– वह छोटी सी बात पर आग बबूला हो गया।
24. **आटे–दाल का भाव मालूम होना :** कठिनाई में पड़ना
प्रयोग– जब तुम्हारे सिर पर आएगा, तो आटे–दाल का भाव मालूम हो जाएगा।

25. **आपे से बाहर होना :** बहुत क्रोधित होना
प्रयोग– तुम छोटी सी बात पर आपे से बाहर हो रहे हो।
26. **आसमान सिर पर उठाना :** बहुत शोर करना
प्रयोग– मौका पाते ही बच्चों ने आसमान सिर पर उठा लिया है।
27. **ईंट का जवाब पत्थर से देना :** कड़ा मुकाबला करना
प्रयोग– दुश्मन को ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहिए।
28. **ईंट से ईंट बजाना :** नष्ट–भ्रष्ट करना
प्रयोग– मुझसे मत उलझो वरना ईंट से ईंट बजा दूँगा।
29. **ईद का चाँद होना :** बहुत दिन बाद मिलना
प्रयोग– वाह! तुम तो ईद का चाँद हो गये।
30. **उंगली पर नाचना :** वश में रखना
प्रयोग– वह तो अपने दोस्त की उंगली पर नाच रहा है।
31. **उंगली उठाना :** दोष दर्शाना
प्रयोग– मधुर पर झूठ में उंगली उठा रहे हो।
32. **उल्टी गंगा बहाना :** नियम विरुद्ध कार्य करना
प्रयोग– महिला की आय पर टैक्स लगाना उल्टी गंगा बहाना है।
33. **उल्लू बनाना :** मूर्ख सिद्ध करना
प्रयोग– प्रधान को भी लोग उल्लू बनाने लगे हैं।
34. **एक ही थैली के चट्टे–बट्टे :** सब का एक सा होना
प्रयोग– इनमें से किसी पर विश्वास न करना सभी एक ही थैली के चट्टे–बट्टे हैं।
35. **कमर कसना :** तत्पर होना
प्रयोग– प्रतियोगिता के लिए अभी से कमर कस लो।
36. **करवटें बदलते रहना :** नींद न आना
प्रयोग– मैं दुर्घटना को याद कर पूरी रात करवटें बदलता रहा।
37. **कलई खुलना :** भेद प्रकट होना
प्रयोग– चुनाव में हारने से उसकी कलई खुल गई।
38. **कलेजा छलनी होना :** बहुत दुःखी होना
प्रयोग– रमेश की गालियाँ सुन कर उसका कलेजा छलनी हो गया।

39. **कलेजा थामना :** अपने को कठिनाई से संभाल पाना

प्रयोग– ट्रेन दुर्घटना को देख कर वह कलेजा थाम कर खड़ा हो गया।

40. **कलेजा मुँह को आना :** व्याकुल होना

प्रयोग– इस भयंकर वर्षा में कलेजा मुँह को आ रहा है।

41. **कलेजा ठंडा होना :** संतोष होना

प्रयोग– उसे चोट लग गई, अब आप का कलेजा ठंडा हो गया होगा।

42. **कान का कच्चा :** झूठी शिकायत पर विश्वास करने वाला

प्रयोग– मैं समझ गया, तू कान का कच्चा है।

43. **कान पर जूं तक न रेंगना :** कुछ असर न होना

प्रयोग– मैं बहुत बार कह चुका हूँ किन्तु उसके कान पर जूं तक नहीं रेंगती।

44. **काम तमाम करना :** मार देना

प्रयोग– उस आतंकवादी का काम तमाम हो गया।

45. **काला अक्षर भैंस बराबर :** अनपढ़

प्रयोग– उसे किताब क्यों दिखा रहे हो, उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर है।

46. **किस्मत खुलना :** भाग्योदय होना

प्रयोग– परिश्रम करने से किस्मत खुल जाती है।

47. **किस्मत फूटना :** भाग्य विपरीत होना

प्रयोगः विमल की तो किसमत ही फूट गई है।

48. **किताबी कीड़ा :** हर समय पढ़ने वाला

प्रयोग– वह किताबी कीड़ा है, घूमने नहीं चलेगा।

49. **कुत्ते की मौत मरना :** बुरी मौत

प्रयोग– विचित्र समय है, आदमी कुत्ते की मौत मर रहे हैं।

50. **कोल्हू का बैल :** लगातार एक ही काम करने वाला

प्रयोग– वह तो कोल्हू का बैल बन गया है।

51. **खटाई में पड़ना :** संदेह में पड़ना

प्रयोग– उसका काम पूरी तरह खटाई में पड़ गया है।

52. **खाक छानना :** दर–दर भटकना

प्रयोग– वह अपनी भैंस की खोज में दर–दर भटक रहा है।

53. **खाक में मिलाना :** नष्ट भ्रष्ट करना

प्रयोग– जुएँ ने उसकी सारी संपत्ति खाक में मिला दी।

54. **खिल्ली उड़ाना :** हंसी उड़ाना

प्रयोग– दूसरों की खिल्ली उड़ाना छोड़ दो।

55. **खून का प्यासा :** जानी दुश्मन

प्रयोग– वह तुम्हारे खून का प्यासा है।

56. **खून खौलना :** जोश आना

प्रयोग– उसकी गंदी बातें सुनकर मेरा खून खौल उठा।

57. **खेल बिगड़ना :** काम खराब होना

प्रयोग– उसका खेल बिगड़ गया है।

58. **गला घोंटना :** अत्याचार करना

प्रयोग– मालिक की क्रूरता मजदूर का गला घोंट रही है।

59. **गले मढ़ना :** जबरदस्ती काम सौंपना

प्रयोग– उसके गले यह काम मढ़ दिया है।

60. **गड़े मुर्दे उखाड़ना :** पुरानी बातें याद दिलाना

प्रयोग– बेकार के गड़े मुर्दे उखाड़ रहे हो।

61. **गिरगिट की तरह रंग बदलना :** अपनी बात पर स्थिर न रहना

प्रयोग– उस पर विश्वास न करना, वह गिरगिट की तरह रंग बदलता रहता है।

62. **गुड़ गोबर करना :** सारा काम नष्ट करना

प्रयोग– वर्षा न होने से सारा गुड़ गोबर हो गया।

63. **गुदड़ी के लाल :** गरीबी में भी श्रेष्ठता

प्रयोग– यहाँ अनेक गुदड़ी के लाल हैं।

64. **गुल खिलाना :** निम्न काम करना

प्रयोग– नटखट नन्दू रोज ही कुछ न कुछ गुल खिलाए रहता है।

65. **गुलछर्रे उड़ाना :** मौज मारना

प्रयोग– लड़के यहाँ बैठे गुलछर्रे उड़ा रहे हैं।

66. **घर फूँक तमाशा देखना :** अपनी हानि की चिंता के बिना, मौज मारना

प्रयोग– वह अजीब आदमी है अपना घर फूँक तमाशा देख रहा है।

67. **घाव पर नमक छिड़कना :** दुखी को और दुखी करना

प्रयोग– वह फेल हो गया, उसके सामने हँस कर उसके घाव पर नमक न छिड़को।

68. **घी के दिये जलाना :** बहुत खुशियाँ मनाना

प्रयोग– प्रतियोगिता में सफल होने पर घी के दिये जलाये गये।

69. **घोड़े बेचकर सोना :** निश्चिन्त होना

प्रयोग– तुम्हे कोई चिंता नहीं है, घोड़े बेचकर सो रहे हो।

70. **चाँदी का जूता :** रुपया पैसा

प्रयोग– चाँदी के जूते लगाओ, काम अवश्य हो जायेगा।

71. **चारों खाने चित्त करना :** पूरी तरह हरा देना

प्रयोग– दारा सिंह ने विदेशी पहलवान को चारों खाने चित्त कर दिया।

72. **चिकना घड़ा :** असरहीन व्यक्ति

प्रयोग– उस पर आशा न लगाओ, वह चिकना घड़ा है।

73. **चुल्लू भर पानी में डूब जाना :** लज्जा का अनुभव करना

प्रयोग– तुमने चुल्लू भर पानी में डूब जाने का काम किया है।

74. **चूड़ियाँ पहनना :** घर में छिपना

प्रयोग– संघर्ष का समय आया, तो उसने चुड़ियाँ पहन ली।

75. **चैन की बंशी बजाना :** निश्चिंत होना

प्रयोग– नौकरी मिल गई, अब चैन की बंशी बजाओ।

76. **चौकडी भरना :** छलांग लगाना

प्रयोग– वह चौकड़ी भरता दूर निकल गया।

77. **छक्के छुड़ाना :** हराना

प्रयोग– बहादुर जवानों ने दुश्मन के छक्के छुड़ा दिए।

78. **छठी का दूध याद आना :** बहुत परेशान होना

प्रयोग– ऐसे मारूँगा कि छठी का दूध याद आ जाएगा।

79. **छाती पर मूँग दलना :** विरोधी को दबा कर रहना

प्रयोग– मैं यहीं रहकर प्रभुदयाल की छाती पर मूँग दलूँगा।

80. **छाती पर पत्थर रखना :** हिम्मत रखना

प्रयोग– उसकी मौत को राधा ने छाती पर पत्थर रखकर सह लिया।

81. **जलभुन कर कोयला होना :** ईर्ष्या से भर जाना

प्रयोग– तुम्हारी सफलता पर वह जल भुन कर कोयला हो गई।

82. **जलती आग में घी डालना :** क्रोध भड़काना

प्रयोग– यह कह कर तुम जलती आग में घी डाल रहे हो।

83. **जान के लाले पड़ना :** बड़ी मुसीबत में फंसना

प्रयोग– बेचारे बहादुर को अपनी जान के लाले पड़े हैं।

84. **जूतियाँ चटकाना :** खुशामद करना

प्रयोग– जूतियाँ चटकाने से नौकरी मिलने की आशा नहीं है।

85. **टस से मस न होना :** अटल रहना

प्रयोग– वह जिद्दी है। टस से मस नहीं होगा।

86. **टट्टी की ओट में शिकार खेलना :** बहाने से काम निकालना

प्रयोग– भूकंप पीड़ितो के बहाने टट्टी की ओट में शिकार खेला जा रहा है।

87. **टाँग अड़ाना :** व्यर्थ की दखल देना

प्रयोग– उसकी टाँग अडाने की आदत आज भी नहीं गई।

88. **टाँग पसार कर सोना :** निश्चित होना

प्रयोग– परीक्षा हो गई, अब टाँग पसार कर सोओ।

89. **टोपी उछालना :** अपमानित करना

प्रयोग– उसकी टोपी उछालने का काम बुरा है।

90. **ठन–ठन गोपाल :** पास में कौड़ी न होना

प्रयोग– वह तो इस समय ठन–ठन गोपाल बन गया है।

91. **ठोकरें खाना :** धक्के खाते फिरना

प्रयोग– वह पाँच वर्षों से धक्के खा रहा है।

92. **डंके की चोट पर :** दावे के साथ

प्रयोग– सुनीता डंके की चोट पर चुनाव लड़ने जा रही है।

93. **डींगे हाँकना :** गप्प मारना

प्रयोग– डींगे हाँकने से काम नहीं बनेगा, कुछ कर दिखाओ।

94. **डूब मरना :** बहुत लज्जित होना

प्रयोग– तुमने डूब मरने का काम किया है।

95. **तलवे चाटना :** खुशामद करना

प्रयोग– तलवे चाटने से नौकरी नहीं मिलेगी, परिश्रम करो।

96. **तिल का ताड़ बनाना :** सामान्य बात को बढ़ा–चढ़ा कर बताना

प्रयोग– रहने दो यदि तिल का ताड़ बनाया तो झगड़ा हो जायेगा।

97. **तीन तेरह होना :** बिखर जाना

प्रयोग– सेना पहुँचते ही भीड़ तीन तेरह हो गई।

98. **थाली का बैंगन :** अस्थिर मन वाला

प्रयोग– उस पर विश्वास न करना, वह थाली का बैंगन है।

99. **दाँत खट्टे करना :** बुरी तरह पराजित करना

प्रयोग– भारतीय नौजवानों ने पाकिस्तानियों के दाँत खट्टे कर दिए।

100. **दाँत पीसना :** क्रोधित होना

प्रयोग– क्या बात है, किस पर दाँत पीस रहे हो।

101. **दाँतों तले उंगली दबाना :** आश्चर्य करना

प्रयोग– ताजमहल देख विदेशी भी दाँतों तले उँगली दबाते हैं।

102. **दाने–दाने को तरसना :** फटे हाल होना

प्रयोग– उसकी हालत बताने लायक नहीं है वह दाने–दाने को तरस रहा है।

103. **दाल मे काला होना :** कुद भेद होना

प्रयोग– लगता है दाल में काला है।

104. **दाल न गलना :** सफल न होना

प्रयोग– उसने बहुत कोशिश की फिर भी उसके सामने दाल न गली।

105. **दोनों हाथों में लड्डू :** दोनों स्थितियों में लाभ

प्रयोग– वह वहाँ जाए या न जाए, उसके तो दोनो हाथों में लड्डू हैं।

106. **नमक मिर्च लगाना :** बढ़ा चढ़ा कर कहना

प्रयोग– मैं समझ गया तुम उसकी बातों में नमक मिर्च लगाकर कह रहे हो।

107. **नाक में दम करना :** बहुत तंग करना

प्रयोग– तुमने विपिन की नाम में दम कर रखा है।

108. **नाकों चने चबाना :** बहुत तंग करना

प्रयोग– तुमने तो उसे नाकों चने चबवा दिये।

109. **नानी याद आना :** बहुत संकट में पड़ना

प्रयोग– आगे कुछ न बोलना, नहीं तो ऐसे पीटूँगा कि नानी याद आएगी।

110. **नौ दो ग्यारह होना :** भाग जाना

प्रयोग– पुलिस के आते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गये।

111. **पगड़ी उछालना :** अपमानित करना

प्रयोग– किसी की पगड़ी उछालना बुरी बात है।

112. **पत्थर की लकीर :** पक्की बात

प्रयोग– मैंने जो कह दिया उसे पत्थर की लकीर ही समझें।

113. **पापड़ बेलना :** कष्टप्रद जीवन–यापन

प्रयोग– उसे परिवार पालने के लिए बड़े पापड़ बेलने पड़े हैं।

114. **पाँचो उंगलियाँ घी में होना :** लाभ ही लाभ

प्रयोग– शरद तो ऐसी जगह पहुँच गया जहाँ उसकी पाँचो उंगलियाँ घी में हैं।

115. **पाँव उखड़ना :** हार जाना/हिम्मत हार जाना

प्रयोग– भारतीय सेना के सामने पाकिस्तानी सेना के पाँव उखड़ गए।

116. **पानी पानी होना :** लज्जित होना

प्रयोग– वह जब चोरी में पकड़ा गया तो पानी पानी हो गया।

117. **पेट में चूहे कूदना :** बहुत भूख लगना

प्रयोग– कुछ खिलाओ पिलाओ, मेरे तो पेट में चूहे कूद रहे हैं।

118. **बगुला भगत :** धूर्त व्यक्ति

प्रयोग– बच के रहना, वह बुगला भगत है।

119. **बल्लियों उछलना :** बहुत खुश होना

प्रयोग– पुरस्कार की घोषणा हुई तो वह बल्लियों उछल गया।

120. **बंदर घुड़की :** दिखाने का भय

प्रयोग– तुम्हारी बंदर घुड़की से वह डरने वाला नहीं है।

121. **बाल की खाल उतारना :** बहुत नुक्ताचीनी करना

प्रयोग– उसकी तो आदत है बाल की खाल निकालना।

122. **बाल बाँका करना :** थोड़ी सी हानि पहुँचाना

प्रयोग– तुम तो उसका बाल भी बाँका नहीं कर सकते।

123. **बाल–बाल बचना :** किसी तरह बच जाना

प्रयोग– दुर्घटना में जगजीवन बाल–बाल बच गए।

124. **बाग बाग होना :** बहुत प्रसन्न होना

प्रयोग– लाटरी निकलने का समाचार सुनते ही वह बाग बाग हो गया।

125. **बाएँ हाथ का खेल :** सरल काम

प्रयोग– यह तो उसके बाएँ हाथ का खेल है।

126. **भाड़ झोंकना :** बेकार समय बिताना

प्रयोग– वहाँ रह कर क्या करेगा? क्या भाड़ झोंकेगा?

127. **भीगी बिल्ली बनना :** डर जाना

प्रयोग– क्या बात है भीगी बिल्ली बन गए हो?

128. **मक्खियाँ मारना :** बेकार बैठ कर समय बिताना

प्रयोग– बिना काम के वह बैठा–बैठा मक्खियाँ मार रहा है।

129. **मन के लड्डू फोड़ना :** काम कुछ भी न कर कोरी कल्पना करना
प्रयोग– बैठे बैठे मन के लड्डू फोड़ने से कोई फायदा नहीं होगा।

130. **माथा ठनकाना :** संदेह होना
प्रयोग– उसकी हंसी सुन कर प्रमोद का माथा ठनक गया।

131. **मुँह में पानी भर जाना :** ललचाना
प्रयोग– मनचाही वस्तु देख कर मुँह में पानी भर आया।

132. **मुँह तोड़ जवाब देना :** कड़ा मुकाबला करना
प्रयोग– सेना ने आतंकवादियो को मुँह तोड़ जवाब दिया।

133. **मुँह पर कालिख पोतना :** कलंक लगाना
प्रयोग– तुमने तो परिवार के मुँह पर कालिख पोत दिया है।

134. **रंग उड़ना :** घबरा जाना
प्रयोग– एकाएक पिताजी के आने से गप्प मारते बेटे का रंग उड़ गया।

135. **रंगा सियार :** धोखा देने वाला
प्रयोग– इस रंगे सियार क एक न एक दिन पोल जरूर खुलेगी।

136. **रफू चक्कर होना :** भाग जाना
प्रयोग– अँधेरे का सहारा लेकर चोर रफू चक्कर हो गया।

137. **राई का पहाड़ बनाना :** छोटी सी बात को बढ़ाना
प्रयोग– तुम राई का पहाड़ बना रहे हो, चुप हो जाओ।

138. **लकीर का फकीर :** रूढ़ि का पालन करने वाला
प्रयोग– वह पूरा लकीर का फकीर है।

139. **लट्टू होना :** फिदा होना
प्रयोग– तुम तो उस पर लट्टू हो रहे हो।

140. **लाल–पीला होना :** क्रोधित होना
प्रयोग– मेरी समझ में नहीं आया, वे क्यों लाल–पीले हो रहे थे।

141. **लोहे के चने चबाना :** बहुत कठिनाई का सामना करना
प्रयोग– इस कार्य में सफलता के लिए लोहे के चने चबाने पडेंगे।

142. **लोहा मानना :** शक्तिशाली होना स्वीकार करना
प्रयोग– विदेशियों को भी भारतीयों का लोहा मानना ही पड़ा है।

143. **श्रीगणेश करना :** शुरू करना
प्रयोग– गृह–निर्माण का कार्य श्रीगणेश होन वाला है।

144. **सिर पर भूत सवार होना :** धुन होना

प्रयोग– वह तो अब ऐसे लग गया मानो उसके सिर पर भूत सवार है।

145. **सोने की चिड़िया :** बहुमूल्य वस्तु

प्रयोग– यह सोने की चिड़िया है, इसे नहीं छोड़ूँगा।

146. **हवाई किले बनाना :** कल्पना में खोए रहना

प्रयोग– हवाई किले बनाते रहो इससे कुछ भी नहीं होना है।

147. **हवा से बातें करना :** तेजी से आगे बड़ना

प्रयोग– दौड़ में वह हवा से बातें कर रहा था।

148. **हाथ खींचना :** साथ न देना

प्रयोग– वह बड़ा विचित्र है, समय आने पर ही हाथ खींच लिया।

149. **हाथ पर हाथ धर कर बैठना :** आलसी होना

प्रयोग– क्या बात है, हाथ पर हाथ धरे बैठे हो, कुछ करो।

150. **हाथ पाँव मारना :** प्रयत्न करना

प्रयोग– वह सफल होने के लिए पूरे हाथ पाँव मार रहा है।

151. **हाथ साफ करना :** चुरा लेना

प्रयोग– देखते – देखते पता नहीं कब चोर ने घड़ी पर हाथ साफ कर दिया।

अभ्यास हेतु वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निम्नलिखित के अर्थ बताइए–

1. अंगूठा दिखाना–

अ. इशारा करना ब. गाली देना स. निर्देश करना द. इन्कार करना

2. अंगार उगलना–

अ. आग इकट्‌ठा करना ब. आग जलाना स. क्रोध में बोलना द. आग फेंकना

3. अंधे की लाठी–

अ. एक मात्र सहारा ब. एक मात्र लाठी स. एकमात्र अंधा द. एक मात्र हथियार

4. अपनी खिचड़ी अलग पकाना–

अ. शाकाहारी ब. सबसे अलग रहना स. अकेले खाने वाला द. एकमात्र पाचक

5. आँख का तारा–

अ. आँख का भाग ब. बहुत प्यारा स. दुश्मन द. सुन्दर अंग

6. आँखों का काँटा–

अ. असंभव वस्तु ब. विशेष दुःख स. अप्रिय व्यक्ति द. भोड़ी सूरत

7. कलई खुलना–

अ. भेद प्रकट होना ब. बर्तन बेकार होना स. पुराना होना द. असंभव बात

8. काम तमाम करना–

अ. काम पूरा करना ब. सहयोग करना स. इन्कार करना द. मार देना

9. खाक छानना–

अ. धूल इकट्ठा करना ब. धूल छानना स. दौड़ना द. दर–दर भटकना

10. गुड़ गोबर करना–

अ. काम बिगाड़ना ब. गुड़ खराब करना स. गुड़ का काम द. गुड़ गोबर का काम

11. घोड़े बेच कर सोना–

अ. व्यवसाय समाप्त करना ब. निश्चिंत होना स. घोड़े का व्यापार द. घोड़े की नींद

12. चौकड़ी मारना–

अ. छलांग लगाना ब. चारों ओर देखना स. चार के साथ दौड़ना द. पानी भरना

13. छक्के छुड़ाना–

अ. धक्का मारना ब. गिराना स. हराना द. खींचना

14. ठन – ठन गोपाल–

अ. कन्हैया ब. धनी व्यक्ति स. झगड़ालू द. खाली हाथ

15. डींगे हाँकना–

अ. दौड लगाना ब. गप्प मारना स. पशु चराना द. कल्पना लोक

16. दाँत पीसना–

अ. ताकत लगाना ब. क्रोधित होना स. दांत चलाना द. हंसना

17. दाल मे काला–

अ. भेद होना ब. दाल में कंकड़ स. दाल में कोयला द. काली दाल

18. बगुला भगत–

अ. भक्त पक्षी ब. सज्जन स. धूर्त व्यक्ति द. भक्त

19. बंदर घुड़की–

अ. बंदर का बोल ब. झूठा भय स. डरावना रूप द. शक्ति प्रदर्शन

20. माथा ठनकना–

अ. संदेह होना ब. सिर दर्द होना स. सिर पर चोट द. भाग जाना

21. सिर पर भूत सवार होना–

अ. डर जाना ब. रोगी होना स. दबाव होना द. धुन होना

उत्तर 1. द 2. स 3. अ 4. ब 5. ब 6. स 7. अ 8. द 9. द 10. अ 11. ब
12. अ 13. स 14. द 15. ब 16. ब 17. अ 18. स 19. ब 20. अ 21. द

ykdkfDr

लोकोक्ति को कहावत की संज्ञा दी जाती है। लोकोक्ति का सीधा संबंध लोक–जीवन से होता है। इसलिए इसे लोक–जीवन और लोक–भाषा की देन समझना चाहिए। लोकोक्ति का प्रयोग वाक्य के रूप में किया जाता है। इसके प्रयोग से भाषा में आकर्षक स्वरूप का विकास होता है और अर्थ में मनभावन, चमत्कारिक और प्रभावोत्पादक अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। जिस प्रकार भाषा में मुहावरों के सहज प्रयोग से भाषा का भास्वर रूप और भावों में प्रभावोत्पादक शक्ति उभरती है, उसी प्रकार लोकोक्ति के प्रयोग से दोनों पक्षों में अनुपमेय उत्कर्ष होता है। यदि सामान्य भाषा में कहा जाए कि जिसके पास शक्ति होती है, उसी को सफलता मिलती है, तो विशेष अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। इसके स्थान पर यदि लोकोक्ति का प्रयोग किया जाए, तो अर्थ मे चमत्कारिक रूप सामने आता है। इसके स्थान पर यदि कहें, "आखिर उसने चुनाव जीत ही लिया। चुनाव जीतता क्यों नहीं, क्योंकि कहा भी गया है जिसकी लाठी उसकी भैंस।"

मुहावरो और लोकोक्ति के स्वरूप में पर्याप्त भिन्नता है। मुहावरे केवल वाक्यांश हैं। इस प्रकार इनका प्रयोग एक वाक्य मे संभव हैं; यथा– आँखो का तारा– वह अपनी माँ की आँखो का तारा है। लोकोक्ति पूर्णवाक्य की भूमिका में सामने आता है। इस प्रकार लोकोक्ति पूर्णवाक्य की भूमिका में सामने आता है। इस प्रकार लोकोक्ति के प्रयोग में एकाधिक वाक्यों का सहयोग लेना होता है; यथा– 'ऊँची दुकान फीका पकवान' – मैने कहा था कि बड़ी दुकान पर सावधान रहना। आखिर धोखा खा गए। होना ही ऐसा था क्योंकि कहा गया है– ऊँची दुकान फीका पकवान।" इसी प्रकार जैसी करनी वैसी भरनी– अपने कर्मों का फल सब को मिलता ही है, क्योंकि कहा भी गया है जैसी करनी वैसी भरनी।"

कहावतों की व्याकरणिक संरचना में कोई परिवर्तन नहीं होता है, किन्तु मुहावरे में व्याकरणिक कोटियों में परिवर्तन होता है; यथा– दाने दाने को तरसना

लिंग –	दाने–दाने को तरसता है।	पुल्लिंग
	दाने–दाने को तरसती है।	स्त्रीलिंग
वचन–	दाने–दाने को तरस रहा है।	एकववचन
	दाने–दाने का तरस रहे हैं।	बहुवचन
पुरुष–	दाने–दाने को तरस रहा हूँ।	उत्तम पुरुष
	दाने–दाने को तरस रहे हो	मध्यम पुरुष
	दाने–दाने को तरस रहा है।	अन्य पुरुष
काल–	दाने–दाने को तरसा था।	भूतकाल
	दाने–दाने को तरस रहा है।	वर्तमान काल
	दाने–दाने को तरसेग।	भविष्यत् काल

पाठ्यक्रम में निर्धारित लोकोक्तियों के प्रयोग–संदर्भ प्रस्तुत हैं–

1. **अंधा क्या चाहे दो आँखें:** मनचाही वस्तु की प्राप्ति

प्रयोग – सुमित के पास दिल्ली जाने का किराया नहीं था अतः वह निराश बैठा था। जब उसके दोस्त ने पूछा कि रुपया चाहिए, तो वह खुशी से बोल पड़ा, 'अंधा क्या चाहे दो आंख'।

2. **अंधेर नगरी चौपट राजा:** अयोग्य अधिकारी होने पर समाज में अंधकार

प्रयोग – हेडमास्टर के स्कूल की चिन्ता नहीं है। स्वयं भी कभी – कभी आते हैं। स्कूल की पढाई चौपट होती जा रही है। यहाँ तो वही हाल है 'अंधेर नगरी चौपट राजा'।

3. **अंधों मे काना राजा:** मूर्खों में अल्पशिक्षित

प्रयोग – गाँधी नगर मुहल्ले में एक ही बी. ए. पास है। वह मुहल्ले का नेता बना हुआ है। ठीक कहा गया है 'अंधों में काना राजा'।

4. **अधजल गगरी छलकत जाए:** अल्पज्ञानी व्यक्ति अधिक इतराता है।

प्रयोग – उसने कंप्यूटर की थोड़ी सी ट्रेनिंग क्या कर ली, सबको कंप्यूटर के विषय मे बताता फिरता है। सच ही कहा गया है, 'अधजल गगरी छलकत जाए'।

5. **अपनी–अपनी ढपली अपना–अपना राग:** सबके अलग अलग मत

प्रयोग – मैं किसकी सुनूँ समझ नहीं आ रहा है। सब की 'अपनी–अपनी ढपली अपना–अपना राग' है।

6. **अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है:** अपने घर में कमजोर व्यक्ति भी बहादुर होता है।

प्रयोग – सत्येन्द्र उस दिन अपने घर के पास पहुँच कर प्रमोद पर बिगड़ गया। यह देखकर एक बोल पड़ा, ठीक ही है 'अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है'।

7. **अब पछताए क्या होत है जब चिड़िया चुग गई खेत:** हानि होने के बाद पछताने से लाभ नहीं होता

प्रयोग – प्रतियोगिता में असफल हो कर मत दुःखी हो। पहले सोचना था, 'अब पछताए क्या होत है जब चिड़िया चुग गई खेत'।

8. **आँख का अंधा नाम नयन सुख:** गुण के विपरीत नाम

प्रयोग – सुन्दर लाल के नाम की चर्चा चल रही थी। ऐसे में उनके चेहरे की चर्चा करके बोल उठा 'आँख का अंधा नाम नयन सुख'।

9. **आम के आम गुठलियों के दाम:** एक साथ दो लाभ

प्रयोग – प्रभात ने कहा कि मैं बारात में अवश्य जाऊँगा क्योंकि शादी में सम्मिलित हो जाऊँगा और अपने घर भी घूम आऊँगा। मुझे तो आम के 'आम गुठलियों के दाम मिल जाएंगे'।

10. **आधी छोड़ सारी को धावे आधी मिले न सारी पावेः** अधिक लालच में हानि ही हानि

प्रयोग – हरीश ने निर्देशक पद की चाह में विश्वविद्यालय का प्राध्यापक पद छोड़ दिया और निर्देशक भी नहीं चुने गए। इसी को कहते हैं 'आधी छोड़ सारी को धावे, आधी मिले न सारी पावे '।

11. **उल्टा चोर कोतवाल को डाँटेः** गलती स्वयं कर दोषारोपण दूसरे पर

प्रयोग – मैंने गोपाल को झगड़े से बचा लिया तो वह मुझ पर ही बिगड़ गया। सच ही कहा गया 'उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे'।

12. **ऊँट के मुँह में जीराः** बहुत बड़े को बहुत थोड़ा देना

प्रयोग – उस दिन कमाल हो गया। भारत केसरी पहलवान के सामने दो पराठे रख दिए गए। यह देख कर एक बोल पड़ा, 'ऊँट के मुँह में जीरा'।

13. **ऊँची दुकान फीका पकवानः** बड़े दिखावे में तत्त्व का होना कठिन होता है

प्रयोग – बड़ी दुकान से समान खरीद कर धोखा खा कर पछता क्यों रहे हो। यह तो होना ही था, क्योंकि 'ऊँची दुकान फीका पकवान'

14. **एक अनार सौ बीमारः** एक वस्तु के अनेक चाहने वाले

प्रयोग – मेरे पड़ोसी बहुत पेरशान हैं। उनकी कुतिया के एक पिल्ला है, जिसे अनेक लोग माँग रहे हैं। अजीब हाल है 'एक अनार सौ बीमार'।

15. **एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ाः** बुरे व्यक्ति द्वारा अधिक बुरे व्यक्ति का साथ करना

प्रयोग – सुधीर पहले से पढ़ता लिखता नहीं था। अब तो उसने घुमक्कड़ लड़कों का साथ भी कर लिया है। अब क्या पढ़ेगा, क्योंकि 'एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ा।'

16. **एक पंथ दो काजः** एक साथ दो काम होना

प्रयोग – मैं अपने मित्र के घर फैजाबाद जाना चाहता हूँ इसके साथ ही अयोध्या भी घूम आऊँगा। इससे 'एक पंथ दो काज' हो जाऐंगे।

17. **एक हाथ से ताली नहीं बजतीः** दोनों पक्षों को कारण झगड़ा होता है

प्रयोग – तुम कितना भी कहो कि गलती केवल उसी की है जिससे झगड़ा हुआ। मैं नहीं मानूँगा, क्योंकि 'एक हाथ से ताली नहीं बजती है'।

18. **ओस चाटे प्यास नहीं बुझती हैः** बड़े काम थोड़े प्रयत्न से नहीं होते हैं।

प्रयोग – एक दिन मेहनत करके प्रथम श्रेणी की आशा लगाने लगे। इसके लिए खूब परिश्रम करो। 'ओंस चाटे प्यास नहीं बुझती है'।

19. **कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेलीः** बहुत अधिक अंतर

प्रयोग – तुमने तो कमाल कर दिया। मानसी की तुलना महादेवी से करने लगे हो। 'कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली'।

20. **का वर्षा जब कृषि सुखानेः** समय बीत जाने के पश्चात प्रयत्न करना

प्रयोग – तुम अब मेहनत करके पढ़ने का निर्णय कर रहे हो जब परीक्षा शुरु हो गई है। अब कितना लाभ होगा 'का वर्षा जब कृषि सुखाने'

21. **खोदा पहाड़ निकली चुहियाः** अति परीश्रम के बाद बहुत थोड़ा लाभ

प्रयोग – संजय ने ट्रक खरीद कर अच्छे लाभ की आशा लगाई। साझेदार ने बहुत कुछ हड़प लिया। वह बहुत निराश है क्योंकि 'खोदा पहाड़ निकली चुहिया'।

22. **खरबूजे को देख कर खरबूजा रंग बदलता हैः** देखा–देखी काम करना

प्रयोग – प्रशांत बहुत विनम्र लड़का था पर उसके कई घुमक्कड़ दोस्त बन गए और वह भी लापरवाह और निडर बन गया। सच है 'खरबूजे को देख कर खरबूजा रंग बदलता है '।

23. **गुड़ खाए गुलगुले से परहेजः** दिखावे का परहेज

प्रयोग – आचार्य जी घर में फीकी चाय पीते हैं। बाहर निकल कर रसगुल्ले और जलेबी का स्वाद लेते रहते हैं। इसे देख कर एक दिन प्रमोद ने कह ही दिया 'गुड़ खाए गुलगुले से परहेज'।

24. **घर का जोगी जोगना, आन गाँव का सिद्धः** अपने घर में गुणी व्यक्ति का आदर नहीं होता है।

प्रयोग – डॉ० मुद्गिल के यहाँ बच्चों की भीड़ लगी रहती है पर उनके अपने बच्चे दूसरे डाक्टरों से दवा लेते हैं। इसीलिए कहा गया है, 'घर का जोगी जोगना, आन गाँव का सिद्ध'।

25. **चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रातः** सुख स्थायी नहीं होता है

प्रयोग – सुखी होकर घमण्ड न करो। पता नहीं कल क्या होगा? सोच विचार कर चलो क्योंकि 'चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात'।

26. **चोर के पैर नहीं होतेः** पापी मन अस्थिर होता है

प्रयोग – पुलिस ने जब उससे चोरी के विषम में पूछताछ की, तो वह घबड़ा गया। ठीक ही कहा गया है कि 'चोर के पैर नहीं होते हैं'।

27. **छछूंदर के सिर पर चमेली का तेलः** अयोग्य व्यक्ति को विशेष सुविधा

प्रयोग – घासी राम की शादी रूपवती से हो गई। यह तो ऐसे हुआ जैसे 'छछूंदर के सिर पर चमेली का तेल'।

28. **जल में रहकर मगर से बैरः** आश्रयदाता से दुश्मनी

प्रयोग – इकबाल अपने मालिक से लड़ता रहता है। उसे नौकरी करना कठिन हो रहा है। मैं समझाता हूँ कि 'जल में रहकर मगर से बैर' उचित नहीं है। वह मानता ही नहीं है।

29. **जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कविः** कवि की कल्पना असीम है

प्रयोग – कवि भौतिक चित्रण के साथ अलौकिक चित्रण की कला में निपुण होता है। इसीलिए कहा जाता है 'जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि'।

30. **जाके पैर न फटी बिवाई वह क्या जाने पीर पराईः** सम्पन्न/सुखी व्यक्ति गरीबी का दर्द नहीं जानता।

प्रयोग – खुद तो वातानुकूलित घर में रहता है। उसे आम आदमी के दर्द का ज्ञान कैसे होगा? कहा भी गया है 'जाके पैर न फटी बिवाई वह का जाने पीर पराई'।

31. **जाको राखे साइयाँ, मार न सकिहैं कोयः** जिसका भगवान रक्षक है उसका कुछ नहीं बिगड़ता है।

प्रयोग – प्रह्लाद को मारने के कितने प्रयास किए गए, सभी बेकार हो गए। उसका बाल भी बाँका नहीं हुआ क्योंकि 'जाको राखे साइयाँ, मार सकिहैं न कोय'।

32. **जिसकी लाठी उसकी भैंसः** शक्तिशाली की विजय होती है

प्रयोग – विजय ने धन बल से चुनाव जीत लिया। इसीलिए कहा जाता है 'जिसकी लाठी उसकी भैंस'।

33. **जैसा राजा वैसी प्रजाः** राजा के अनुसार प्रजा का होना स्वाभाविक है

प्रयोग – आज चारों ओर भ्रष्टाचार पनप रहा है। जब मैंने पूछा इसका कारण क्या है तो एक झट से बोल पड़ा, 'जैसा राजा वैसी प्रजा'।

34. **जैसी करनी वैसी भरनीः** कर्म के अुनसार फल मिलता है

प्रयोग – वह दूसरों को तंग करके स्वयं भी दुःखी रहता है। उसे सुख मिलेगा भी कैसे क्योंकि 'जैसी करनी वैसी भरनी'।

35. **जो गरजते हैं वे बरसते नहींः** अधिक बोलने वाले कर्मठ नहीं होते हैं

प्रयोग – वीरभान की बातों पर विश्वास न करना। वह न जाने क्या–क्या कहता रहता है। करता कुछ नहीं। उसके बस का कुछ नहीं है क्योंकि 'जो गरजते हैं वे बरसते नहीं'।

36. **डूबते को तिनके का सहाराः** संकट में थोड़ा सहारा साहस भर देता है

प्रयोग – तुमने रमेश को संकट में जो सहयोग दिया वह 'डूबते को तिनके का सहारा' सिद्ध हुआ है।

37. **तेते पाँव पसारिए जेती लंबी सौरः** शक्ति के अनुसार खर्च करना चाहिए

प्रयोग – उसने दिखावे में आकर लम्बी गाड़ी खरीद ली। अब परेशान है। हमें गुरु की शिक्षा याद रखनी चाहिए 'तेते पाँव पसारिए जेती लंबी सौर'।

38. **थोथा चना बाजे घनाः** निम्न आदमी दिखावा बहुत करते हैं

प्रयोग – आज उसका व्याख्यान था, देख ली उसकी विद्वता। कबीर के दोहे का अर्थ भी गलत बता रहा था। सच ही कहा गया है, 'थोथा चना बजे घना'।

39. **दुविधा में दोनों गये माया मिली न रामः** निश्चयहीन व्यक्ति को धोखा मिलता है

प्रयोग – वह इतने दिनों तक सोचता रहा कि बी. ए. का फार्म भरूँ या कि प्रतियोगिता का। यही सोचता रहा, समय निकल गया। उसकी तो यही हालत हुई 'दुविधा मे दोनों गए माया मिली न राम'।

40. **दूध का जला छाछ भी फूँक फँक कर पीता है:** एक चूक के बाद डर–डर कर कार्य करना

प्रयोग – सुरेन्द्र ने एक बार उधार रुपये दिए। वह पैसा वापस नहीं मिला, वह तब से बहुत सोच समझ कर उधार देता है। ऐसा होता ही है 'दूध का जला छाछ भी फूँक फूँक कर पीता है'।

41. **दूर के ढोल सुहाने:** दूर की वस्तु अच्छी लगती है

प्रयोग – लोग कहते हैं सुमुद्र देखने का अपना मजा है। जो लोग समुद्र के निकट हैं, वे इस विषय में लालायित नहीं होते हैं। सच तो यह है कि 'दूर के ढोल सुहाने' लगते हैं।

42. **धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का:** अस्थिर व्यक्ति कहीं का नहीं होता है

प्रयोग – रंजन को बहुत समझाया गया था कि दोनों और नहीं रहना चाहिए। आखिर उसे दोनो तरफ से मार पड़ी और वह कहीं का नहीं रहा। ठीक ही कहा गया है, 'धोबी का कुत्ता घर का न घाट का'।

43. **न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी:** ऐसी शर्त जो पूरी ही न हो

प्रयोग – मल्लिका एम. ए. में प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण हुई तो सहेलियों ने पार्टी देने को कहा। उसने कहा, "जब आई० एस० एस० परीक्षा उत्तीर्ण कर लूँगी तब पार्टी दूंगी।" एक सहेली से रहा न गया, वह बोल पड़ी 'न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी'।

44. **नाच न जाने आंगन टेढ़ा –** कान न आने पर बहाना बनाना

प्रयोग – माथुर को गाने के लिए कहा गया तो कहने लगा, मूड़ नहीं है गला खराब है। एक वाचाल लड़का बोल पड़ा 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा"।

45. **नेकी कर कुएँ में डाल:** उपकार करके चर्चा नहीं करनी चाहिए

प्रयोग – तुमने उसकी सहायता की है, वह माने न माने। तुम उसकी चर्चा न किया करो,क्योंकि ठीक कहा गया है 'नेकी कर कुएँ में डाल' ।

46. **नौ नगद न तेरह उधार:** जो मिले वह ले लेना चाहिए

प्रयोग – मैंने सेठ सुन्दर लाल से पचास हजार रुपये माँगें। वह पहले दस हजार देने लगा। इसके बाद बोला, 'फिर ले लेना। मैंने यह सोचते हुए, 'नौ नगद न तेरह उधार' दस हजार रुपये ही ले लिये।

47. **नौ दिन चले अढ़ाई कोस:** बहुत धीरे–धीरे कार्य करना

प्रयोग – तुम सुबह से चार पेज लिख पाये हो। इससे काम नहीं चलेगा। तुम्हारा तो वही हाल है, 'नौ दिन चले अढ़ाई कोस'।

48. **पराधीन सपनेहु सुख नाही:** पराधीनता में दुःख ही दुःख है

प्रयोग – उसने ऐसी नौकरी कर ली जो बंधुआ मजदूर की तरह है। एक पल भी छुट्टी नहीं मिलती । ऐसी नौकरी में सुख कहाँ? क्योंकि 'पराधीन सपनेहु सुख नाही'।

49. **बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद:** वस्तु के उपयोग का ज्ञान न होना

प्रयोग – तुम कह रहे हो 'संदेश' मिठाई बेकार होती है। कभी खाया भी है संदेश? 'बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद'।

50. **बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि लेहुः** पीछे की चिन्ता छोड़ आगे सतर्क होकर काम करना

प्रयोग – इतना समय गँवा दिया है। अब आगे सचेत होकर कार्य करो तभी सफल होंगे 'बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि लेहु'।

51. **भागते चोर की लंगोटी भलीः** न मिलने की संभावना मे कुछ से संतोष करना चाहिए

प्रयोग – माधुरी बहुत कंजूस है। पार्टी तो दे नहीं सकती। आज चाय पिलाने पर राजी हो गई है। संतोष ने जोर लगाकर कहा 'भागते भूत की लंगोटी भली'।

52. **भैंस के आगे बीन बजाए भैंस खड़ी पगुरायः** मूर्खों के आगे उपदेश बेकार होता है

प्रयोग – आचार्य जी कई दिनों से उसे समझा रहे हैं। उसे समझ में नहीं आ रहा है हालात वहीं हैं 'भैंस के आगे बीन बजाए, भैंस खड़ी पगुराय'।

53. **मुँह में राम बगल में छुरीः** ऊपरी मित्रता और अन्दर से शत्रुता

प्रयोगः तुम मनफूल से सावधान रहना । उसके विषय में अच्छी तरह समझ लो। वह मुहँ में राम बगल में छुरी रखने वाला प्राणी है।

54. **रोपे पेड़ बबूल का आम कहाँ से खायः** बुरे कार्य का परिणाम अच्छा नही होतो है

प्रयोग – तुम ने दुष्ट को दोस्त बनाया है। इनसे अच्दे परिणाम की आशा लगाना बेकार है। ध्यान रखो 'बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से खाय'।

55. **विषस्य विषमौषधम्ः** लोहे को लोहा काटता है

प्रयोग – तुम दुष्ट के साथ भी पूरी सरलता दिखाते हो। इससे वह तुम्हे ज्यादा तंग करता है। दुष्ट के प्रति उदारता नही दिखानी चाहिए, क्योंकि कहा गया है 'विषस्य विषमौषधम्'।

56. **सिर मुड़ाते ओले पड़ेः** कार्य शुरु करते ही कठिनाई आना

प्रयोगः राधामोहन ने टैक्सी खरीद कर परिवार के पालन पोषण की हिम्मत की। दूसरे ही दिन टैक्सी दुर्घटनाग्रस्त हो गई। कैसी मुसीबत आई 'सिर मुड़ाते ही ओले पड़े'।

57. **हथेली पर दही नहीं जमताः** अच्छे कार्य की सम्पन्नता में समय लगता है

प्रयोगः तुम चाहते हो हंसने–खेलते टाप कर जाओ। ऐसा नहीं हो सकता। कहा भी गया है कि हथेली पर दही नहीं जमता है।

58. **हाथ कंगन को आरसी क्याः** प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं

प्रयोग – तुम कह रहे थे उसे प्रथम श्रेणी मिलेगी। परीक्षाफल आ गया है। आओ देख लें 'हाथ कंगन को आरसी क्या'?

59. **हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के औरः** कथनी करनी में अंतर होना

प्रयोग – उनके सफेद कपड़ों पर न जाना क्योंकि उनके विचार बहुत अनोखें है। उन्हें देखकर कहावत याद आती है कि 'हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और'।

60. **होनहार बिरवान के होत चीकने पातः** शुरू से ही श्रेष्ठता के लक्षणों का ज्ञान

प्रयोग – इस बच्चे को देख कर इसके सफल हाने का ज्ञान होता है क्योंकि 'होनहार विरवान के होत चिकने पात'।

● **कुछ अन्य प्रमुख लोकोक्तियाँ अर्थ सहित प्रस्तुत हैं–**

1. **अंत भला तो सब भलाः** परिणाम अच्छा होने से सारा कार्य अच्छा होता है

प्रयोग – परीक्षा निकट है। परीश्रम कर लो परिणाम अच्छे होंगे तो सब ठीक मान लिया जाएगा। कहा भी गया है 'अंत भला तो सब भला'।

2. **अंधे के हाथ बटेर लगनाः** बिना परीश्रम के सफलता मिलना

प्रयोग – वह किसी से सीधे मुँह बोलता भी नहीं और उसे श्रेष्ठ समाज सेवी का पुरस्कार दिया गया है। इसे सुन कर एक बोल उठा 'अंधे के हाथ बटेर लग गया'।

3. **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकताः** संगठन के बिना सफलता संभव नहीं

प्रयोग – शास्त्री जी हिंदी के लिए पुरजोर कोशिश कर रहे हैं। उनके अकेले होने से असर नहीं हो रहा है क्योंकि कहा भी गया है कि 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता'।

4. **अटका बनिया देय उधारः** दबाव में काम करना

प्रयोग – तुमने ऐसा दबाव डाला कि तुम्हारा असंभव काम भी उसने कर दिया। ऐसा होता ही है क्योंकि कहा गया है 'अटका बनिया देय उधार'।

5. **अरहर की टट्टी गुजराती तालाः** छोटी चीज के लिए बहुत खर्च करना

प्रयोग – गुलशन ने अपने घर के बाहर एक छोटी सी क्यारी बनाई पशुओं से सुरक्षा के लिए उसमें कई हजार की मजबूत जाली लगवाई। इसे देख कर जसबीर बोल पड़ा 'अरहर की रट्टी गुजराती ताला'।

6. **आधा तीतर आधा बटेरः** एक मत न होना

प्रयोग – उस दिन गोष्ठी में 20 विद्वान इकट्ठे हुए। चर्चा चली तो खेमे में बंट गए। वहाँ का हाल ऐसी थी 'जैसे आधा तीतर आधा बटेर'।

7. **आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपासः** अच्छे काम के लिए आना पर दुनिया धंधा में फंस जाना

प्रयोग – वह हरिद्वार गया था दर्शन और मनोरंजन के लिए किन्तु वहाँ एक होटल बनाने में लग गया। मैंने जब यह सुना, तो मेरे मुँह से एकाएक निकल ही आया आए थे हरिभजन को ओटन लगे कपास'।

8. **आगे नाथ न पीछे पगहाः** पूर्ण स्वतंत्र व्यक्ति

प्रयोग – वह आज यहाँ है, कल कहाँ होगा किसी को पता नहीं है। उसके विषय में यही कहना ठीक है कि 'उसके आगे नाथ न पीछे पगहा'।

9. **आ बैल मुझे मार –** जान बूझ कर विपत्ति को आमंत्रण देना

प्रयोग – उसने पुलिस स्टेशन जाने और पड़ोसी के बारे में रिपोर्ट करने के विषय में मुझसे चर्चा की तो मैंने कहा, "पुलिस स्टेशन जाकर 'आ बैल मुझे मार' वाली स्थिति क्यों बना रहे हो।"

10. **तेली का तेल जले मसालची का दिल जलेः** खर्च कोई करे, जलन किसी और को हो

प्रयोग – सूरजभान गरीब बच्चों को किताब ओर कपड़ा बाँटता रहता है और राजकुमार उसको मना करता रहता है। न मानने पर बुराई करता है। अजब हाल है, 'तेली का तेल जले मसालची का दिल जले'।

11. **दान की बछिया के दाँत नहीं देखतेः** दान की वस्तु के गुण–परीक्षण नहीं करते

प्रयोग – वाह भाई! तुम तो दान में मिले स्कूटर की गद्दी, टायर और ईंजन आदि चेक करने पर लगे हो। खुश होकर ले जाओ। जानते हो 'दान की बछिया के दाँत नही देखते'।

12. **दिन दूनी रात चौगुनी होनाः** सब प्रकार से तेज उन्नति

प्रयोग – उसने मेहनत कर अपनी पढ़ाई पूरी की। नौकरी कर के लगातार परीश्रम कर आगे बढ़ रहा है। इसे कहते हैं 'दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति' करना।

13. **दूध का दूध और पानी का पानीः** सच्चा न्याय

प्रयोग – माँ को उसका खोया बेटा दिलाया गया तो किसी ने खुशी से कहा 'दूध का दूध पानी का पानी हो गया'।

14. **द्रौपदी की चीर होनाः** अन्तहीन विस्तार

प्रयोग – जादूगर उस डिब्बे मे से रीबन निकालता जा रहा था। वह खत्म होता ही न था। मुझे लगा यह 'द्रोपदी की चीर है'।

15. **नया नौ दिन पुराना सब दिनः** पुरानी चीज में स्थिरता होती है, नई में नहीं।

प्रयोग – नये पुराने दोस्त की चर्चा चल रही थी। तभी पुराने दोस्त की बड़ाई करता हुआ एक बोल पड़ा, 'नया नौ दिन पुराना सौ दिन'

16. **न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरीः** कारण के न होने पर काम नहीं होना

प्रयोग – प्रिंसिपल ने संगीत विभाग के शिक्षक को निकालने के लिए संगीत विभाग ही बंद कर दिया। उन्होंने सोच लिया था 'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी'।

17. **न सावन सूखा न भादों हराः** सदा सर्वदा समान भाव से रहना

प्रयोग – वीरभान का समरस जीवन सराहनीय है। सुख और दुःख में समान रूप से दिखाई देता है। उसके विषय में कहा जाता है। न सावन सूखा न भादौं हरा।

18. **नौ सौ चूहे खाय के बिल्ली चली हज कोः** बहुत पाप करके पुण्य का दिखावा

प्रयोग – वह सदा ही गरीबो को तंग करता रहा है। मांस–मदिरा का सेवन करता रहा है। तुम कह रहे हो वह संगम नहाने जा रहा है। मुझे तो लग रहा है 'नौ सौ चूहे खाय के बिल्ली चली हज को'।

19. **पढ़े फारसी बेचे तेल यह देखा कुदरत का खेलः** विद्वान व्यक्ति का अभागा होना

प्रयोग – शीतल एम. ए. पास कर लगातार नौकरी के चक्कर में भटकता रहा है। अब जब वह मजबूर होकर जूते की दूकान में नौकरी करने लगा, तो मेरे मन आ रहा है 'पढ़े फारसी बेचे तेल यह देखा कुदरत का खेल'।

20. **बगल में छोरा गाँव में ढिंढौराः** अपने पास पड़ौस की खबर न होना

प्रयोग – उस दिन दिनेश ने अपने पांच वर्षीय बच्चे के खोने की रिपोर्ट दोपहर दर्ज करवा दी। पुलिस छानबीन में लग गई। बच्चा शाम को साथियों के साथ घूमता–फिरता आ गया। अजीब हाल है 'बगल में छोरा गाँव में ढिंढोरा'।

21. **बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगीः** संकट का आना निश्चित होना

प्रयोग – सभी परीक्षार्थियों की एक कर परीक्षा ली जा रहीं थी। सभी सहमें हुए थे। ऐसे में एक ने हिम्मत बंधाते हुए कहा कि सब को परीक्षा देनी ही है 'बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी'।

22. **बद अच्छा बदनाम बुराः** बुरे व्यक्ति से बदतर हो जाता है कलंकित व्यक्ति

प्रयोग – रोहित रोज ही कुछ न कुछ उल्टा काम करता रहता है। उस पर लोगों की नजर कम रहती है। संजीव के चरित्र के विषय में झूठा प्रचार कर दिया गया। वह बहुत लज्जित है। ठीक ही कहा गया है 'बद अच्छा बदनाम बुरा'।

23. **बिना रोये माँ भी दूध नहीं देतीः** प्रयत्न बिना सफलता नहीं मिलती

प्रयोग – कृपाल ने श्यामलाल के कहने पर अपने मालिक से पचास हजार रुपये उधार के लिए कई बार निवेदन किया। अन्त में उसे उधार मिल गया तो विश्वास हो गया कि 'बिना रोये माँ भी दूध नहीं देती'।

24. **बाप बड़ा ना भैया, सबसे बड़ा रुपैयाः** रिश्ते नाते से ज्यादा धनी व्यक्ति का सम्मान

प्रयोग – मैं उस दिन चकित रह गया जब रतन लाल ने अपने बड़े भाई और पिताजी की बात नहीं मानी, किन्तु जब सेठ भूरे लाल ने कहा तो वह एक दम तैयार हो गया। मुझे विश्वास हो गया कि 'बाप बड़ा न भैया सबसे बड़ा रुपया'।

25. **बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीखः** भाग्य से कुछ भी मिल सकता है किन्तु माँगने पर छोटी सी चीज भी नहीं मिलती

प्रयोग – गत वर्ष दहिया जी मुझे एक लाख रुपये दे रहे थे, अब जब मैं केवल दस हजार रुपये माँग रहा हूँ, तो नकार रहे हैं। ठीक ही कहा गया है 'बिन माँगे मोती मिले माँग मिले न भीख'।

26. **भई गति साँप छछूंदर केरीः** काम करने न करने दोनों स्थितियों से संकट

प्रयोग – वह यदि उधार दे तो रुपया डूबने का डर है। यदि न दे तो पिटने का डर है। उसकी हालत है 'भई गति साँप छछूंदर केरी'।

27. **मन चंगा तो कठौती में गंगाः** मन की पवित्रता के बाद गंगा स्नान की आवश्यकता नहीं होती है।

प्रयोग – जब मैंने राधेश्याम से पूछा कि कुंभ में स्नान के लिए प्रयागराज चलोगे, तो वह बोल पड़ा – 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'। मैं तो घर में ही स्नान करूँगा।

28. **मान न मान मैं तेरा मेहमानः** बिना बात किसी के गले पड़ना

प्रयोग – वह कमाल का आदमी था। बस में थोड़ी देर बात क्या हुई मेरे साथ उतरा और मेरे साथ हो लिया। मुझे भूख लगी थी। मैं होटल गया, तो वहाँ पहुँच गया। उसका भी बिल मुझे देना पड़ा। ठीक ही कहा गया है – 'मान न मान मैं तेरा मेहमान'।

29. **मार के आगे भूत भागता हैः** दंड से सभी डरते हैं

प्रयोग – यह ऐसे नहीं मानेगा। जब पुलिस के डंडे पड़ेंगे, तो कबूल देगा क्योंकि 'मार के आगे भूत भागता है'।

30. **मुल्ला की दौड़ मस्जिद तकः** सीमित क्षमता वाला

प्रयोग – मैंने ताराचन्द से पूछा कि अब किससे सहयोग मांगोगे, तो वह बोल उठा सुमेर बाबू से क्योंकि 'मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक' ही संभव है।

31. **मियाँ की जूती मियाँ के सिरः** किसी व्यक्ति की वस्तु का उस पर ही प्रयोग करना

प्रयोग – उस दिन उसने मुझे एकदम हजार का फटा नोट दिया था। आज उसका पैसा लौटाना है। अब 'मियाँ की जूता मियाँ के सिर' पर होगी।

32. **मन के हारे हार मन के जीते जीतः** सफलता असफलता मन पर निर्भर होती है।

प्रयोग – तुम निराश क्यों हो जाते हो? प्रयत्न करो जरूर सफल होगे, कहा भी गया है – 'मन के हारे हार, मन के जीते जीत'।

33. **मानो तो देव नहीं तो पत्थरः** भावना के आधार पर ही किसी की श्रेष्ठता का ज्ञान होता है

प्रयोग – तुम तो कुछ भी नहीं समझ रहे हो। वास्तव में वे बहुत विद्वान हैं। मन से सोचो तो पता लग जाएगा। कहा भी गया है – 'मानो तो देव नहीं तो पत्थर'

34. **रस्सी जल गई बल नहीं गयाः** दुर्गति होने पर भी अहंकार नहीं गया

प्रयोग – सुहाग जुए में सब कुछ गँवा बैठा है, किन्तु बातें करोड़पति की ही करता है। उसका तो हाल है 'रस्सी जल गई बल नहीं गया'।

35. **राई से पर्वत करे, पर्वत राई माँहिः** ईश्वर सर्वशक्तिमान है

प्रयोग – मैं बार–बार कह रहा हूँ मेहनत करो, ईश्वर फल अवश्य देगा। वह सबकी सुनता है और सब कुछ देता है। तभी तो उसके विषय में कहा गया है 'राई से पर्वत करे, पर्वत राई माँहि'।

36. **विधि का लिखा को मेटन हाराः** भाग्य का लेख बदलता नहीं है

प्रयोग – उसके साथ कैसी दुर्घटना घटी? कहाँ गया था शादी के लिए सामान खरीदने, लौटते हुए दुर्घटना में मारा गया। घर में मातम छा गया। सच ही कहा गया है 'विधि का लिखा को मेटन हारा।'

37. **समरथ को नहिं दोष गुसाईः** शक्तिशाली में दोष नहीं दिखाई देता है

प्रयोग – बाबूराम ने सौ रुपये घूस लिया, तो उसको नौकरी से हाथ धोना पड़ा, करोड़ों का घोटाला करने वालों का कुछ भी नहीं बिगड़ता। इसीलिए कहा गया है 'समरथ को नहिं दोष गुसाईं'।

38. **सीधी उंगली से घी नहीं निकलताः** अधिक सरलता से काम नहीं बनता

प्रयोग – यदि तुम निवेदन करते रहोगे, तो वह रुपये वापस नहीं देगा। एक बार धमका दो काम बन जाएगा। जानते तो हो 'सीधी उंगली से घी नहीं निकलता'।

39. **सौ सुनार की एक लुहार कीः** निर्बल की सौ चोट से अधिक जोरदार होती है बलवान की एक चोट

प्रयोग – तुम रोज–रोज उसे गालियाँ देते रहते हो। किसी दिन उसे गुस्सा आ गया तो मुश्किल में पड़ जाओगे क्योंकि 'सौ सुनार की एक लुहार की बात' जानते ही हो।

अभ्यास के लिए वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निम्नलिखित लोकोक्तियों के अर्थ–चयन कीजिए–

1. अंधा क्या चाहे दो आँख
   - अ. अंधे की आँख
   - ब. श्रेष्ठ वस्तु
   - स. मनचाही वस्तु
   - द. भाग्य से मिली वस्तु
2. अपनी अपनी ढपली अपना अपना राग
   - अ. बाजे–गाजे वाले
   - ब. गाने–बजाने वाले
   - स. दूर जाने वाले
   - द. अलग–अलग राग वाले
3. आँख का अंधा नाम नयन सुख
   - अ. सुन्दर नाम
   - ब. गुणों के विरुद्ध नाम
   - स. आकर्षक नाम
   - द. नामकरण की श्रेष्ठता
4. ऊँट के मुँह में जीरा
   - अ. बहुत बड़े को थोड़ा देना
   - ब. ऊँट को दवा देना

स. काल्पनिक विचार

द. बहुत ज्यादा सोचना

5. एक अनार सौ बीमार

अ. अनार की माँग बढ़ना

ब. बीमार की संख्या बढ़ना

स. अनार बाँट–बाँट के खाना

द. एक वस्तु के अनेक ग्राहक

6. कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली

अ. बहुत पुरानी बात

ब. बहुत अन्तर होना

स. समतुल्य जोड़ी

द. आधुनिक जोड़ी

7. खोदा पहाड़ निकली चुहिया

अ. बहुत परिश्रम पर थोड़ा लाभ

ब. पहाड़ खोदने से लाभ ही लाभ

स. पहाड़ खोदने से चुहिया मिलती है

द. पहाड़ खोदना मना है

8. गुड़ खाए गुलगुले से परहेज

अ. गुड़ का शौकीन

ब. गुलगुले का शौकीन

स. दिखाने का परहेज

द. पक्का परहेज

9. चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात

अ. चाँदनी ही चाँदनी

ब. सुख का स्थायी न होना

स. दुख का स्थायी न होना

द. दुनियादारी करना

10. जिसकी लाठी उसकी भैंस

अ. शक्तिशाली की विजय

ब. लाठी के साथ भैंस रखें

स. भैंस के साथ लाठी रखें

द. भैंस और लाठी दोनों साथ रखें

11. धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का

अ. घोबी कुत्ता नहीं पाल सकता

ब. धोबी को कुत्ता नहीं पालना चाहिए

स. अस्थिर व्यक्ति कहीं का नहीं होता

द. अस्थिर व्यक्ति सदाबहार होता है

12. भागते चोर की लंगोटी भली

अ. जहाँ न मिलना हो वहाँ कुछ मिलना अच्छा है

ब. जहाँ कुछ मिल रहा हो, वहाँ ज्यादा पाने का प्रयत्न

स. जहाँ चोर हो वहाँ कुछ छीन लो

द. चोर से कुछ नहीं लेना चाहिए

13. हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और

अ. हाथी की पहचान

ब. जंगली जानवर की पहचान

स. दाँतों में अन्तर

द. कथनी करनी में अंतर

14. आ बैल मुझे मार

अ. अनजाने बैल से टक्कर

ब. जानबूझ कर विपत्ति बुलाना

स. जानबूझ कर बैल से भिड़ना

द. बैलों की लड़ाई

15. दूध का दूध पानी का पानी

अ. दूधिये का नाम

ब. सच्चा न्याय

स. दूध की पहचान

द. दूध का विशेषज्ञ

16. द्रौपदी की चीर

अ. अन्तहीन विस्तार

ब. सुन्दर कपड़ा

स. पुराना कपड़ा

द. फटा कपड़ा

17. बाप बड़ा न भैया सबसे बड़ा रुपैया

अ. रुपये के लिए भागना

ब. धनी भाई

स. भाई और पिता से रुपया माँगना

द. धनी व्यक्ति का महत्व

18. भई गति साँप छछूंदर केरी

अ. साँप के लिए संकट

ब. छछूंदर के लिए संकट

स. दोनों स्थितियों में संकट

द. साँप और छछूंदर दोनों संकट मुक्त

19. रस्सी जल गई बल नहीं गया

अ. दुगर्ति में भी अहंकार नहीं गया

ब. रस्सी का पूरी तरह जल जाना

स. बल लगा कर रस्सी जलाना

द. रस्सी जलाने की योजना

20. समरथ को नहिं दोष गुसाईं

अ. समर्थ व्यक्ति में गोस्वामी माने गए हैं

ब. शक्तिशाली व्यक्ति में दोष नहीं दिखते

स. समर्थ व्यक्ति में ईश्वर भी दोष नहीं ढूंढ सकता

द. ईश्वर सदा समर्थ व्यक्ति को दोष से बचाता है

21. सीधी उंगली से घी नहीं निकलता

अ. जिसकी उंगली टेढ़ी हो वहीं घी निकालता है

ब. घी सदा टेढ़ी उंगली से निकालना चाहिए

स. उंगली सीधी रखोगे तो उसमें से घी नहीं निकलेगो

द. अधिक सरलता से कार्य सिद्ध नही होता है

उत्तरः 1. स 2. द 3. ब 4. अ 5. द 6. ब 7. अ 8. स 9. ब 10. अ 11. स 12. अ 13. द 14. ब 15. ब 16. अ 17. द 18. स 19. अ 20. ब 21. द

वर्तनी

वर्तनी शब्द की व्युत्पत्ति 'वृत्त' में 'मनि' प्रत्यय के योग से दर्शायी जा सकती है। संस्कृत में इसके लिए 'वर्त्मनी' शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। 'वर्त्मनी' शब्द में से 'म' के लोप होने से 'वर्तनी' शब्द का निर्माण हुआ है। 'वर्तनी' का शाब्दिक अर्थ – सरणि है। शब्द–लेखन के संदर्भ में सरणि का प्रयोग किया जाता है। शब्द की लेखन–सरणि को ध्यान में रखकर 'वर्तनी' को सरल रूप में इस प्रकार परिभाषित कर सकते है, "भाषा के शब्दों के शुद्ध लेखन को वर्तनी कहते हैं।"

हिंदी में वर्तनी के लिए अक्षर विन्यास, अक्षरन्यास, अक्षरी और वर्णन्यास आदि शब्दों के प्रयोग किए जाते हैं। इनमें वर्तनी शब्द का प्रयोग बहुप्रचलित है। अंग्रेजी में इसका पर्यायवाची शब्द 'Spelling' है।

हिन्दी भारतीयता की पहचान है। इसे भारतीय संस्कृत की संवाहिका के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह देश की जनभाषा, राष्ट्रभाषा और राज–भाषा है। इसका प्रयोग देश के बहुसंख्यक लोगों द्वारा किया जाता है। विस्तृत क्षेत्र में प्रयुक्त होने के कारण इसमें विविधता होना स्वाभाविक है। वर्तनी के आधार पर भाषा के मानकीकरण का आकर्षक स्वरूप सामने आता है। इससे भाषा में एकरूपता का विकास होता है।

वर्तनी के संदर्भ में हमें कुछ तथ्यों पर ध्यान रखना अनिवार्य होता है–

(क) शब्द के शुद्ध लेखन में किन–किन लिपि चिह्नों का प्रयोग होना चाहिए।

(ख) शब्द में प्रयुक्त विभिन्न लिपि चिह्नों को अनुकूल क्रम में प्रयोग करना।

हिन्दी वर्तनी के संदर्भ में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार करना अनिवार्य है

1. मात्रा संबंधी अशुद्धियाँ

	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आ > अ	अखांडनीय	अखंडनीय	अत्याधिक	अत्यधिक
	अनाधीकार	अनाधिकार	आजकाल	आजकल
	आपना	अपना	आधीन	अधीन
	आलौकिक	अलौकिक	दावात	दवात
	हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप		
अ > आ	अगामी	आगामी	अदान–प्रदान	आदान–प्रदान
	अहार	आहार	चहिए	चाहिए
	नराज	नाराज	परलौकिक	पारलौकिक
	परिवारीक	पारिवारिक	संसारीक	सांसारिक
ई > इ	ईधर	इधर	उत्पत्ती	उत्पत्ति
	उन्नती	उन्नति	उपलब्धी	उपलब्धि

	कवी	कवि	क्योंकी	क्योंकि
	नालीयाँ	नालियाँ	पूर्ती	पूर्ति
	प्राप्ती	प्राप्ति	मुनी	मुनि
	व्यक्ती	व्यक्ति	शक्ती	शक्ति
	साथीयों	साथियों	हानी	हानि
इ > ई	अद्वितिय	अद्वितीय	आशिर्वाद	आशीर्वाद
	केन्द्रिय	केन्द्रीय	दिक्षा	दीक्षा
	दिवाली	दीवाली	निरसता	नीरसता
	निरिह	निरीह	निरोग	नीरोग
	निरिक्षण	निरीक्षण	पत्नि	पत्नी
	परिक्षा	परीक्षा	पितांबर	पीतांबर
	पूजनिय	पूजनीय	बिमार	बीमार
	बिमारी	बीमारी	श्रीमति	श्रीमती
ऊ > उ	अनूकूल	अनुकूल	आयू	आयु
	कृपालू	कृपालु	गुरू	गुरु
	दयालू	दयालु	धूलाई	धुलाई
	पटू	पटु	परूश	परूष
	पशू	पशु	पुरूश	पुरुष
	प्रभू	प्रभु	मधू	मधु
	रूपया	रुपया	शिशू	शिशु
	शुरू	शुरु	साधू	साधु
उ > ऊ	उपर	ऊपर	टुर	टूर
	पुर्ण	पूर्ण	पुर्व	पूर्व
	पुज्य	पूज्य	मुली	मूली
	शुन्य	शून्य	सुप	सूप
	सुर्य	सूर्य	स्वरुप	स्वरूप

संयुक्त स्वर की मात्राएँ

एक्य	ऐक्य	एनक	ऐनक
ऐनक	ऐनक	ऐतिहासिक	ऐतिहासिक
कोन	कौन	लोटना	लौटना
त्यौहार	त्योहार		

2. अकारण अनुनासिकता

रँण	रण	तँन	तन
खाँन	खान	पाँन	पान
तँम	तम	दाँम	दाम
राँम	राम		

3. अनुनासिकता (चन्द्रबिन्दु)

आंख	आँख	ऊंचा	ऊँचा
कांच	काँच	गूंगा	गूँगा
चांद	चाँद	जहां	जहाँ
दांत	दाँत	बांस	बाँस
यहां	यहाँ	वहां	वहाँ
हां	हाँ		

4. अनुस्वार

अँक	अंक (अङ्क)	पँक	पंक (पङ्क)
रँक	रंक (रङ्क)	शँकर	शंकर (शङ्कर)
पँख	पंख (पङ्ख)	अँग	अंग (अङ्ग)
कँगन	कंगन (कङ्गन)	जँग	जंग (जङ्ग)
रँग	रंग (रङ्ग)	कँचन	कंचन (क¥चन)
मँजुल	मंजुल (म¥जुल)	घँटी	घंटी (घण्टी)
पँडा	पंडा (पण्डा)	पँत	पंत (पन्त)
पँथ	पंथ (पन्थ)	चँदन	चंदन (चन्दन)
पँप	पंप (पम्प)	गँभीर	गंभीर (गम्भीर)
सँसार	संसार	हिन्सा	हिंसा

यदि नासिक्य व्यंजन के पूर्व समान अर्थात् वही नासिक व्यंजन अर्ध रूप में प्रयुक्त हो, तो उसके मूल रूप में ही लिखना होगा, उसका अनुस्वार रूप नहीं होता है; यथा–

भिंन	भिन्न	अंन	अन्न
संमान	सम्मान	संमिलित	सम्मिलित

5. 'ण'नासिक्य व्यंजन

ड़ँ > ण	गँड़ेंश	गणेश	रँड़ँभूमि	रणभूमि
	रँड़ँ	रण	गँड़ँना	गणना
	रामायँड़ँ	रामायण	आचरन	आचरण
	शरँडँ	शरण		

न > .k	आक्रमण	आक्रमण	आचरन	आचरण
	किरन	किरण	गनित	गणित
	गुन	गुण	तृन	तृण
	निरीक्षन	निरीक्षण	प्रान	प्राण
	रनभूमि	रणभूमि	रामायन	रामायण
	शरन	शरण	स्मरन	स्मरण

6. 'र' प्रयोग

अरथ	अर्थ	आर्शीवाद	आशीर्वाद
आर्दश	आदर्श	करम	कर्म
धरम	धर्म	मरयादा	मर्यादा
वर्क्स	वर्क्स	वर्त्स्य	वर्त्स्य
कार्यकर्म	कार्यक्रम	चन्दर	चन्द्र
तीवर	तीव्र	परसन्न	प्रसन्न
परसाद	प्रसाद	परतिज्ञा	प्रतिज्ञा
समुन्दर	समुद्र	सहस्त्र	सहस्र
स्त्रोत	स्रोत	टरक	ट्रक
टराम	ट्राम	डरम	ड्रम

7. *ब > व*

पूर्ब	पूर्व	बन	वन
बनस्पति	वनस्पति	बर्शा	वर्शा
बाणी	वाणी	बिशधर	विशधर
बिलास	विलास	बैदेही	वैदेही

8. श, श, स प्रयोग

स > श	असोक	अशोक	आदर्स	आदर्श
	आसा	आशा	देसी	देशी
	प्रसंसा	प्रशंसा	विस्वास	विश्वास
	संकर	शंकर	पस्चात	पश्चात
श स > ष	कस्ट	कष्ट	अभीस्ट	अभीष्ट
	घनिस्ठ	घनिष्ठ	रास्ट्र	राष्ट्र
	भविस्य	भविष्य	संतुश्ट	संतुष्ट
श > स	नमश्कार	नमस्कार	प्रशाद	प्रसाद
	शंकट	संकट	शाशन	शासन

शुशोभित	सुशोभित	हंश	हंस

9. ऋ–र प्रयोग

उपगृह	उपग्रह	भृश्ट	भ्रष्ट
गृहण	ग्रहण	रिशि	ऋषि
रितु	ऋतु	रिण	ऋण
श्रंगार	शृंगार	ह्रदय	हृदय

10. ज्ञ–ग्य प्रयोग

ग्यान	ज्ञान	आग्या	आज्ञा
ग्यापन	ज्ञापन	प्रतिग्या	प्रतिज्ञा
विग्यान	विज्ञान		
भाज्ञ	भाग्य		

11. छ > क्ष

कछा	कक्षा	छमा	क्षमा
छुद्र	क्षुद्र	छेत्र	क्षेत्र
नछत्र	नक्षत्र	लछण	लक्षण
विपछ	विपक्ष		

12. ड–ड़ प्रयोग

रोड़	रोड	ड़मरू	डमरू
ड़गर	डगर	ड़ाल	डाल
सडक	सड़क	पडाव	पड़ाव
पहाड	पहाड़	मोडना	मोड़ना

13. ढ–ढ़ का प्रयोग

ढ़क्कन	ढक्कन	ढ़पली	ढपली
ढ़ोल	ढोल	ढ़लान	ढलान
चढना	चढ़ना	टेढा	टेढ़ा
प्रौढ	प्रौढ़	बूढा	बूढ़ा

14. ड़–ढ़ प्रयोग

काड़ना	काढ़ना	चड़ना	चढ़ना
गड़ना (बनाना)	गढ़ना	चिडना	चिढ़ना
खिढ़की	खिड़की	फाढ़ना	फाड़ना
सढ़ना	सड़ना		

15. ट–ठ प्रयोग

अभीष्ठ	अभीष्ट	विशिश्ठ	विशिष्ट
अश्लिष्ठ	अश्लिष्ट	संतुश्ठ	संतुष्ट
धनिष्ट	धनिष्ठ	श्रेश्ट	श्रेष्ठ

16. अल्प्राण–महाप्राण प्रयोग

गढ्ढा	गड्ढा	पथ्थर	पत्थर
बध्घी	बग्घी	मख्खन	मक्खन

17. श्रुतिमूलक प्रयोग (जहाँ पर 'स्वर' सुनाई दे वहाँ स्वर का ही प्रयोग करें)

अपनायी	अपनाई	आये	आए
खाईये	खाइए	गये	गए
जाइये	जाइए	नयी	नई
पुरवायी	पुरवाई	बाधायें	बाधाएँ
बलिकायें	बालिकाएँ	बुलायें	बुलाएँ
लिये	लिए	समस्यायें	समस्याएँ
सहनायी	शहनाई		

vH;kl dk fy, oLrqfu"B iz'u

शुद्ध रूप बताइए

1.	अ–अत्यधिक	आ–आत्याधिक	इ–अत्याधीक	ई–आत्याधीक
2.	अ–अद्वीतिय	आ–अद्वितिय	इ–आद्वितीय	ई–अद्वितीय
3.	अ–आनुकुल	आ–अनुकूल,	इ–आनुकूल	ई–अनूकूल
4.	अ–अलौकिक	आ–आलोकिक	इ–आलौकिक	ई–अलौकीक
5.	अ–आश्लिष्ट	आ–अश्लीष्ट	इ–अश्लिष्ट	ई–अश्लिस्ट
6.	अ–अदर्श	आ–आर्दश	इ–आदर्स	ई–आदर्श
7.	अ–आर्शीवाद	आ–आसीर्वाद	इ–आशीर्वाद	ई–आशीर्वाद
8.	अ–उपगृह	आ–उपग्रह	इ–उपाग्रह	ई–ऊपगृह
9.	अ–उपलब्धि	आ–ऊपलब्धि	इ–उपलब्धी	ई–उपालब्धि
10.	अ–एक्य	आ–ऐक्य	इ–ऐक्य	ई–यैक्य
11.	अ–ऐनक	आ–एनक	इ–ऐनक	ई–यैनक
12.	अ–ऐतिहासिक	आ–ऐतीहासिक	इ–एतिहासीक	ई–ऐतिहासिक
13.	अ–क्रिपालु	आ–क्रिपालू	इ–कृपालु	ई–क्रपालु

14.	अ—केन्द्रीय	आ—कैन्द्रीय	इ—केन्द्रिए	ई—केन्द्रीए
15.	अ—घनिष्ठ	आ—घनिष्ठ	इ—घनिस्ठ	ई—घनीस्ठ
16.	अ—नमस्कर	आ—नमश्कार	इ—नमष्कार	ई—नमस्कार
17.	अ—निरीक्षण	आ—निरिक्षण	इ—निरीक्छण	ई—नीरीक्षण
18.	अ—परलौकिक	आ—पारलोकिक	इ—पारलौकिक	ई—परलोकिक
19.	अ—परिवारीक	आ—पारिवारीक	इ—परिवारीक	ई—पारिवारिक
20.	अ—पुरुष	आ—पुरूश	इ—पुरूष	ई—पूरूश
21.	अ—परतिज्ञा	आ—प्रतिज्ञा	इ—परतीज्ञा	ई—परतिग्या
22.	अ—पुजनीय	आ—पूज्यनिय	इ—पूजनीय	ई—पूज्यनीय
23.	अ—बदेही	आ—बैदेहि	इ—बेदेही	ई—बैदेही
24.	अ—रणभुमि	आ—रणभूमि	इ—रणभूमी	ई—रणभुमी
25.	अ—वस्तुनिष्ठ	आ—वस्तुनिस्ठ	इ—वस्तुनिश्ट	ई—वस्तुनीश्ट
26.	अ—श्रृगांर	आ—श्रृंगार	इ—श्रंगार	ई—श्रृंगार
27.	अ—संतुस्ट	आ—संतुष्ट	इ—संतुश्ठ	ई—संतुश्ठ
28.	अ—सांसारिक	आ—सांशारीक	इ—शांसारीक	ई—संसारिक
29.	अ—सम्मलित	आ—सम्मिलित	इ—सम्मीलित	ई—साम्मिलित
30.	अ—समसाएँ	आ—समस्यायें	इ—समस्साएँ	ई—समस्याएँ
31.	अ—शुशोभित	आ—सुषोभित	इ—सुशोभित	ई—सूशोभित
32.	अ—स्वरूप	आ—स्वरुप	इ—सुरूप	ई—सरूप

उत्तर

1. अ	2. ई	3. आ	4. अ	5. इ	6. ई	7. ई	8. आ	9. अ
10. आ	11. अ	12. ई	13. इ	14. अ	15. आ	16. ई	17. अ	18. इ
19. ई	20. अ	21. आ	22. इ	23. ई	24. आ	25. अ	26. ई	27. आ
28. अ	29. आ	30. ई	31. इ,	32. अ				

i ;kl ;okph

शब्द विशेष के लिए लगभग समान अर्थ में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द की संज्ञा दी जाती है। ऐसे विभिन्न शब्दों की समानता को ध्यान मे रख कर इनके लिए समानार्थी या समानार्थक शब्द भी प्रयुक्त होते हैं। पर्यायवाची शब्दों के विषय में मुख्य रूप से यह उल्लेखनीय तथ्य है कि ये शब्द आपस में पूर्ण समान न होकर लगभग समान होते हैं। पूर्ण समानार्थी शब्द को एकार्थी शब्द का नाम दिया जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि पर्यायवाची शब्द आपस मे पूर्ण समान लगते हैं, किन्तु लगभग समान होते हैं। गंभीर चिंतन करने पर उनमें सूक्ष्म भिन्नता अवश्य सामने आती है।

पर्यायवाची शब्द हिंदी भाषा की सबसे प्रमुख विशेषता है। लगभग समान अर्थ के लिए विभिन्न शब्दों के प्रयोग से भाषा का नवीन और आकृर्षक रूप सामने आता है। जिस प्रकार विभिन्न संदर्भों में मनुष्य भिन्न–भिन्न वस्त्रों को पहन कर सुन्दर लगता है, उसी प्रकार समान अर्थ के लिए भिन्न–भिन्न शब्दों के प्रयोग से जहाँ भाषा को भास्वर रूप मिलता है, वहीं अभिव्यक्ति भी प्रभावी होती है।

पाठ्यक्रम में निर्धारित कुछ पर्यायवाची शब्दों का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

अकस्मात : अचानक, अनायास, एकदम, एकाएक, सहसा

अगणित : अनगिनत, अनन्त, असंख्य, असीम

अग्नि : अनल, आग, ज्वाला, दव, पावक, वह्नि,, हुताशन

अज्ञान : अविद्या, अविवेक, जड़, मूर्ख

अतिथि : अभ्यागन, आगन्तुक, पाहुना, मेहमान

अधम : तुच्छ, निकृष्ट, नीच, पतित

अधिक : अति, अतिशय, अतीव, ज्यादा, प्रचुर, बहुत

अनुचर : दास, नौकर, परिचारक, भृत्य, सेवक

अनुपम : अतुल, अद्‌भुत, अद्वितीय, अनूठा, अनोखा, अपूर्व, अभूतपूर्व, निराला

अंधकार : अंधेरा, तम, तिमिर, तमिस्र

अपमान : अनादर, अप्रतिष्ठा, अवमाना, अवहेलना, उपेक्षा, तिरस्कार, निरादर

अमृत : अमिय, अमी, पीयूष, सुधा, सोम

असुर : तमीचर, दनुज, दानव, दैत्य, निशाचर, राक्षस

अहंकार : अभिमान, घमण्ड, दंभ, दर्प

आँख : अक्षि, चक्षु, दृग, नयन, नेत्र, लोचन, विलोचन

आकाश : अंतरिक्ष, अंबर, आसमान, गगन, नभ, व्योम, शून्य

आक्रमण : अभियान, चढ़ाई, धावा, हमला

आज्ञा : अनुशासन, आदेश, निर्देश, हुक्म

आदि : आरम्भ, पहला, प्रथम, मूल

आनंद : आमोद आह्लाद, उल्लास, खुशी, प्रमोद, प्रसन्नता, प्रसाद, मोद, हर्ष

आपत्ति : आपदा, आफत, कष्ट, क्लेश, विपत्ति, विपदा

आभूषण : अलंकरण, अलंकार, आमरण, गहना, जेवर, विभूषण

आम : अमृतफल, आम्र, रसाल

आयु : अवस्था, उमर, जीवन–काल, वय

इच्छा : अभिलाषा, आकांक्षा, कामना, चाह, मनोरथ, लालसा

इन्द्र : देवराज, देवेन्द्र, देवेश, पुरन्दर, पुरुहूत, मधवा, महेन्द्र, वज्रपाणि, शक्र, सुरपति, सुरेन्द्र, सुरेश

ईश्वर : ईश, जगदीश, जगन्नाथ, दीनबंधु, परमात्मा, परमेश्वर, प्रभु, भगवान, स्वयंभू

उग्र : घोर, तीव्र, प्रचण्ड, रौद्र, विकट

उत्साह : उमंग, जोश, प्रेरणा, साहस

उद्देश्य : अभिप्राय, आशय, तात्पर्य, मतलब, लक्ष्य

उद्यान : उपवन, कुसुमाकर, फुलवारी, बगीचा, बाग, वाटिका

उन्नति : अभ्युदय, उत्कर्ष, उत्थान, उदय, उन्नयन, प्रगति, विकास

उपकार : नेकी, भलाई, हित

उपमा : तुलना, समानता, सादृश्य

उपवन : आराम, उद्यान, बाग, वाटिका

उपवास : अनशन, निराहार, फाका, व्रत

ओर : तरफ, दिशा, पक्ष

ओस : तुषार, तुहिन, शबनम, हिम

और : अधिक, एवं, ज़्यादा, तथा, दूसरा

कठिन : कठोर, दुष्कर, दृढ़, सख़्त

कपड़ा : अंबर, चीर, पद, वसन, वस्त्रम

कमल : अंबुज, अरविन्द, उत्पल, कंज, जलज, नलिन, नीरज, पंकज, पद्म, पुण्डरीक, राजीव, वारिज, शतदल, सरसिज, सरोज

कमी : घाटा, टोटा, तंगी, न्यूनता

कल्पवृक्ष : कल्पतरु, कल्पद्रुम, देववृक्ष, सुरतरु, सुरद्रुम

कहानी : आख्यान, आख्यायिका, उपाख्यान, कथा, गल्प

कान : कर्ण, श्रवण, श्रवणेन्द्रिय, श्रुतिपट

कामदेव : अतनु, अनंग, कन्दर्प, काम, पंचसर, मदन, मनसिज, मनोज, मन्मथ, रतिपति, विश्वकेतु, स्मर

किनारा : कगार, कूल, छोर, तट, तीर

किरण : अंशु, कर, मयूख, मारीचि, रश्मि

किसान : कृषक, खेतहिर, हलधर, हाली

कुबेर : किन्नरेश, धनद, धनपति, धनाधिप, यक्षराज

कृष्ण : कान्हा, केशव, गिरिधर, गोपाल, घनश्याम, माधव, मुरारि, मोहन, राधावल्लभ, वासुदेव, श्याम

कोमल : नरम, नाजुक, मसृण, मृदु, मुलायम, सुकुमार

कोयल : कोकिल, कोकिला, परभृात, पिक, बसंतदूत, श्याम

कौशल : कुशलता, चतुराई, चातुर्य, दक्षता, निपुणता, प्रवीणता

क्रोध : आक्रोश, आवेश, कोप, गुस्सा, रोष

खल : अद्यम, कुटिल, दुर्जन, दुश्ट, धूर्त, नीच

खोज : अनुसंधान, अन्वेशण, तलाश, शोध

गंगा : अलकनंदा, जाहनवी, त्रिपथगा, देवनदी, देसाई, देवसरी, भागीरथी, मंदाकिनी, सुरसरि, सुरसरिता

गंदा : अपवित्र, अशुद्ध, अश्लील, खराब, घिनौना, घृणित, मलिन, मैला

गंध : बास, बू, महक

गणेश : एकदन्त, गजवदन, गजानन, गणपति, भवानी–नंदन, मोदक–प्रिय, लंबोदर, विध्न–विनाशक, विध्नेश, विनायक

गरुण : खगकेतु, खगेश, पक्षिराज, वैनतेय, हरिवाहन

गाय : गो, गौ, धेनु, सुरभि

गुरू : अध्यापक, आचार्य, उपाध्याय, वृहस्पति, शिक्षक

घर : अयन, आगार, आलय, आवास, गृह, गेह, धाम, निकेतन, निवास, भवन, मन्दिर, शाला, सदन

घड़ा : कलश, कुंभ, गगरी, गागर, घट

घमंड : अभिमान, अहंकार, ऐंठ, गर्व, दर्प, मान

घोड़ा : अश्व, घोटक, तुरग, तुरंग, तुरंगम, वाजि, सैंधव, हय

चन्द्रमा : इन्दु, कलानिधि, चन्द्र, चाँद, निशाकर, मयंक, मृगांक, रजनीश, राकेश, विधु, शशांरक, शशि, सोम, हिमकर, हिमांशु

चतुर : कुशल, चालाक, दक्ष, नागर, निपुण, प्रवीण, योग्य, सयाना, होशियार

चमक : आभा, कांति, दमक, दीप्ति, द्युति, प्रकाश
चोट : आघात, घाव, प्रहार, व्रण
छल : कपट, चकमा, ठगी, धोखा, प्रपंच
छटा : कान्ति, छवि, शोभा, सुन्दरता, सौंदर्य
छाया : परछाई, प्रतिकृति, प्रतिबिम्ब, प्रतिमूर्ति, बिम्ब
छोटा : कनिष्ठ, तुच्छ, लघु, हीन
जंगल : अरण्य, कानन, कांतार, वन, विपिन
जल : अंबु, उदक, जीवन, तोय, नीर, पय, पानी, वारि, सलिल
जमुना : कालिंदी, यमुना, रविनंदिनी, रवि–सुता, श्यामा, सूर्य–तनया
जीभ : जबान, जिह्वा, रसना
झंडा : केतु, ध्वज, ध्वजा, निशान, पताका
तलवार : असि, करवाल, कृपाण, खड्ग, चंद्रहास, शमशीर
तारा : उडु, तारक, तारिका, नक्षत्र, नखत
तालाब : जलाशय, तड़ाग, ताल, पुष्कर, पोखर, सर, सरोवर
तीर : आशुगू, इषु, बाण, शर, शिलीमुख
थोड़ा : अल्प, कम, किंचित, कुछ, जरा, तनिक, न्यून, रंच
दाँत : दन्त, दशन, द्विज, रद
दुख : कष्ट, क्लेश, क्षोभ, पीड़ा, विषाद, वेदना, व्यथा, शोक
दुर्गा : कल्याणी, कामाक्षी, काली, जगदम्बा, चंडी, चंडिका, भवानी, महागौरी, माता, सिहंवाहिनी
दुष्ट : अधम, कुटिल, खल, दुर्जन, धूर्त, पामर, वंचक, शठ
दूध : क्षतीर, गोरस, दुग्ध, पय
देवता : अमर, आदित्य, देव, निर्जर, विबुध, सुर
देह : कलेवर, काया, गात्र, तन, वपु, शरीर
धन : अर्थ, दौलत, मुद्राराशि, पूंजी, लक्ष्मी, विभूति, वित्त, श्री, सम्पत्ति, सम्पदा
धनवान : अमीर, धनाढ्य, धनी, श्रीमान, समृद्ध, सम्पन्न।
धनुष : कमान, कार्मुक, कोदण्ड, चाप, शरासन
नदी : अपगा, तटिनी, तरंगिनी, दरिया, नद, निर्झरिणी, निम्नगा, सरि, सरिता
नमस्कार : अभिवादन, नमः, प्रणति, प्रणाम, वंदन
नया : अभिनव, नवीन, नूतन
निर्धन : कंगाल, गरीब, दरिद्र, दीन, रंक

नौकर	:	अनुचर, दास, परिचारक, भृत्य, सेवक
पंडित	:	कोविद, पारंगत, बुद्धिमान, बुध, मनीषी, विज्ञ, विद्वान, सुधी
पक्षी	:	अण्डज, खग, खेचर, चिड़िया, नभचर, पखेरू, पतंग,विहंग, विहंगम, विहग
पति	:	आर्यपुत्र, कांत, नाथ, प्राणनाथ, प्राणेश्वर, बालम, भर्ता, वल्लभ, साजन, स्वामी
पत्ता	:	किसलय, दल, पत्र, पर्ण, पात
पत्थर	:	अश्म, उपल, पाषाण, पाहन, प्रस्तर, शिला
पत्नी	:	अर्धांगिनी, कलभ, कान्ता, गृहिणी, जीवन–संगिनी, दारा, प्रिया, भार्या, वधू, वामांगिनी, वामा, स्त्री
पराजय	:	तिरस्कार, निरादर, पराभव, हार
पर्वत	:	अचल, अद्रि, गिरि, चट्टान, नग, पहाड़, भूधर, महीधर, शैल
पवन	:	अनिल, बयार, मारुत, वात, वायु, समीर, समीरण, हवा
पवित्र	:	अकलुश, निर्मल, निष्कलुष, पावन, पुण्य, पूत, शुचि, शुद्ध
पाँव	:	चरण, पग, पद, पाद, पैर
पाप	:	अध, अधर्म, दुष्कृत्य, पातक
पिता	:	जनक, बाप, बापू
पुत्र	:	आत्मज, तनय, तनुज, नन्दन, बेटा, लड़का, लाल, सुत
पुत्री	:	आत्मजा, कन्या, तनया, तनुजा, दुहिता, नन्दिनी, बेटी, लड़की, लाली, सुता
पुरस्कार	:	इनाम, तोहफा, पारितोषिक
पुरुष	:	आदमी, जन, नर, मनुज, मनुष्य, मर्द
पूजा	:	अर्चना, आराधना, उपासना, भक्ति
पृथ्वी	:	अचला, अवनि, जगती, धरणी, धरती, धरा, धरित्री, धारयित्री, भूमि, भू, मही, वसुंधरा, वसुधा
प्रकाश	:	उजाला, चमक, छवि, ज्योति, द्युति, प्रभा, रोशनी
प्रेम	:	नेह, प्रणय, प्रीति, प्यार, ममता, रति, स्नेह
बंदर	:	कपि, कीश, मर्कट, वानर, शाखामृग, हरि
बर्फ	:	तुषार, तुहिन, नीहार, हिम
बहन	:	दीदी, भगिनी, सहोदरा, स्वसा
बादल	:	अंबुद, घन, जलद, जलधर, तोयद, नीरद, पयोद, पयोधर, मेघ, वारिधर
बाल	:	अलक, कच, कुंतल, केश, चिकुर, शिरोरुह
बालक	:	बच्चा, बाल, लड़का, शावक, शिशु
बिजली	:	चंचला, चपला, तड़ित, दामिनी, विद्युत, सौदामिनी

बुद्धि : अक्ल, धी, प्रज्ञा, मति, मनीषा, मेधा, विवेक

ब्रह्मा : अज, कर्ता, कर्तारि, कमलामन, चतुरानन, चतुर्मुख, पितामह, प्रजापति, लोकेश, विधाता, विधि, स्रष्टा, स्वयंभू

भयानक : घोर, भयंकर, भयावह, भीषण, भीष्म, विकट, विकराल

भाग्य : किस्मत, दैव, नियति, प्रारब्ध, विधि, होनहार, होनी

भौंरा : अलि, द्विरेफ, भँवरा, भृंग, भ्रमर, मधुकर, मधुप, ाट्पद

मधु : ऋतुराज, कुसुमाकर, माधव, वसंत

मनुष्य : आदमी, इन्सान, नर, मनुज, मर्त्य, मानव

महादेव : आशुतोष, विलोचना, पशुपति, महेश, रुद्र, शंकर, शिव

माता : अम्बा, अम्बिका, जननी, धात्रा, प्रसू, माँ, मातृ।

मित्र : दोस्त, बंधु, मीत, सखा, सहचर, साथी, सुहृद

मिथ्या : अयथार्थ, असत्य, झूठ, मृषा

मीन : अंडज, झष, मकर, मछली, मत्स्य

मुक्ति : कैवल्य, निर्वाण, परमपद, मोक्ष, सद्गति

मृत्यु : अन्त, अवसान, देहान्त, देहावसान, निधन, प्राणान्त, मरण, मौत, शरीरान्त

मोर : केकी, मयूर, शिखी

यत्न : उद्यम, उद्योग, चेष्टा, परिश्रम, प्रयत्न, प्रयास, मेहनत

यमराज : जीवनपति, धर्मराज, यम, सूर्यपुत्र, हरि

युद्ध : रण, लड़ाई, संग्राम, संघर्ष, समर, विग्रह

युवक : जवान, तरुण, नौजवान, युवा

राक्षस : असुर, दनुज, दानव, दैत्य, निशाचर, पिसाच

राजा : नरेन्द्र, नरेश, नृप, नृपति, भूप, भूपति, महीप, महीपति

रात्रि : तमसा, निशा, निशि, यामा, यामिनी, रजनी, रात, रैन, विभावरी

रावण : दशकंठ, दशकंध, दशग्रीव, दशानन, लंकापति, लंकेश

लक्ष्मी : इन्दिरा, कमला, चंचला, चपला, पद्मा, रंभा, विष्णुप्रिया, श्री, हरिप्रिया

लहू : खून, रक्त, रुधिर, लाल, शोणित

वन : अटवी, अरण्य, कानन, कान्तार, गहन, जंगल, विपिन

वर्षा : बरसात, बारिश, मेंह, वृष्टि

बसंत : ऋतुराज, कुसुमाकर, मधुमास, माधव

विघ्न : अड़चन, बाधा, रुकावट

विवाह	:	गठबंधन, परिणय, पाणिग्रहण, ब्याह, शादी
विष	:	कालकूट, गरल, जहर, हलाहल
विष्णु	:	अच्युत, उपेन्द्र, कमलापति, केशव, पीताम्बर, गोविन्द, चक्रपाणि, चतुर्भुज, जनार्दन, नारायण, पीताम्बर, माधव, रमापति, लक्ष्मीपति, विश्वंभर
वृक्ष	:	तरु, दरख्त, द्रुभ, पादप, पेड़, विटप
शत्रु	:	अराति, अरि, दुश्मन, रिपु, विपक्षी, बैरी
शराब	:	मदिरा, मधु, वारुणी, सुरा, हाला
शरीर	:	काया, गात, तन, तनु, देह, वपु
शिव	:	त्रिपुरारि, त्रिलोचन, नीलकंठ, पिनाकी, भूतनाथ, महादेव, महेश, रुद्र, शंकर, शंभु, हर
शोभा	:	आभा, कांति, छटा, द्युति, प्रभा, विभा, सुषमा
संसार	:	जग, जगत, दुनिया, ब्रह्माण्ड, भव, भवन, लोक, विश्व
समय	:	अवसर, काल, वक्त
समाचार	:	खबर, वृत्त, वृतान्त, सन्देश, सूचना
समुद्र	:	अंबुधि, उदधि, जलधि, जलनिधि, नीरधि, नीरनिधि, पयोधि, पारावार, वारिधि, रत्नाकार, सागर, सिंधु
सरस्वती	:	इला, गिरा, भारती, भाषा, महाश्वेता, वाक्, वागेश्वरी, वाणी, वीणा–पाणि, वीणा–वादिनी, श्री, शारदा
सवेरा	:	अरुणोदय, उषा, प्रातः, भोर, सूर्योदयकाल
साँप	:	अहि, नाग, पन्नग, फणधर, मणि, भुजंग, भुजंगम, विषधर, व्याल, सर्प
साधु	:	अवधूत, मुनि, यति, वीतराग, वैरागी, संत, संन्यासी
सिंह	:	केसरी, केहरी, पंचमुख, पंचानन, मृगपति, मृगराज, मृगेंन्द्र, वनराज, शादू, शेर, हरि
सितारा	:	उडु, तारक, तारा, नक्षत्र
सुगंध	:	खुशबू, महक, सुरभि, सुवास, सौरभ
सुंदर	:	कमनीय, खूबसूरत, चारु, मंजु, मंजुल, मनोहर, रमणीक, रम्य, रुचिर, ललित, ललाभम
सूर्य	:	अर्क, आदित्य, दिनकर, दिनेश, दिवाकर, पतंग, प्रभाकर, भानु, भास्कर, रवि, सविता, सूरज
सेना	:	अनी, कटक, चमु, फौज, दल, वाहिनी
सोना	:	कंचन, कनक, कुंदन, सुवर्ण, स्वर्ण, हिरण्य, हेम
सौंदर्य	:	शोभा, सुंदरता, सुषमा
स्त्री	:	अबला, औरत, कान्ता, कामिनी, नारी, महिला, रमनी, ललना, वनिता, वामा, सुंदरी
स्वर्ग	:	इन्द्रलोक, दिव, देवलोक, धुलोक, नाक, सुरलोक

हनुमान : अंजनीपुत्र, अंजनी–नन्दंन, कपीन्द्र, कपीश, कपीश्वर, पवन–पुत्र, पवनसुत, बजरंगबली, महावीर, मारुति, रामदूत, वज्रांगी

हाथ : कर, पाणि, हस्त

हाथी : करी, कुंजर, कुंभी, गज, गयंद, दंती, द्विप, नाग, मतंग, हस्ती

हिरण : कुरंग, मृग, सारंग

होंठ : अधर, ओठ, लब

vH;kl dk fy, oLrqfu"B iz'u

1. अगणित का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

   अ. अनन्त आ. असंख्य इ. अतुल ई. अनगिनत

2. अधिक का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

   अ. अमिय आ. अतिशय इ. ज्यादा ई. प्रचुर

3. आकाश का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

   अ. अंबर आ. अमर इ. शून्य ई. नभ

4. उन्नति का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

   अ. मनोरथ आ. उत्कर्ष इ. प्रगति ई. अभ्युदय

5. कमल का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

   अ. पंकज आ. उत्पल इ. वारिज ई. जलद

6. कामदेव का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

   अ. मदन आ. अनंग इ. यक्षराज ई. मनोज

7. घर का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

   अ. गृह आ. आलय इ. मंदिर ई. वाजि

8. घोड़ा का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

   अ. अश्व आ. मयंक इ. तुरंग ई. तुरंगम

9. चन्द्रमा का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

   अ. कांति आ. इन्दु इ. विधु ई. हिमांशु

10. जल का पर्यायवाची नहीं है–

    अ. वारि आ. सलिल इ. सुर ई. नीर

11. दुर्गा का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

अ. चंडी आ. कामाक्षी इ. कमला ई. भवानी

12. नदी का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

अ. उदक आ. तटिनी इ. दरिया ई. तरंगिणी

13. नौकर का पर्यायवाची शब्द है–

अ. अश्म आ. परिचालक इ. मृत्य ई. भर्ता

14. पर्वत का पर्यायवाची शब्द है–

अ. पर्ण आ. भूधर इ. खेचर ई. पातक

15. पुत्र का पर्यायवाची शब्द है–

अ. अनुज आ. तनया इ. नग ई. तनुज

16. पृथ्वी का पर्यायवाची शब्द है–

अ. मही आ. महीधर इ. पाहन ई. प्रभा

17. बादल का पर्यायवाची शब्द है–

अ. पावक आ. चिकुर इ. नीरद ई. शून्य

18. मनुष्य का पर्यायवाची शब्द है–

अ. नरेन्द्र आ. नीहार इ. नल ई. नर

19. मित्र का पर्यायवाची शब्द है–

अ. मधुकर आ. बंधु इ. प्रज्ञा ई. शाखामृत

20. राजा का पर्यायवाची शब्द है–

अ. राकेश आ. महीप इ. पादप ई. मधु

21. रात्रि का पर्यायवाची शब्द है–

अ. कामा आ. लाल इ. तरुण ई. यामा

22. वृक्ष का पर्यायवाची शब्द है–

अ. लंकेश आ. अरण्य इ. अरि ई. विटप

23. बसंत का पर्यायवाची शब्द है–

अ. कुसुमाकर आ. कुसुम इ. विपिन ई. यामिनी

24. शरीर का पर्यायवाची शब्द है–

अ. काया आ. लाल इ. उन्मेष ई. मधु

25. समुद्र का पर्यायवाची शब्द है–

अ. यति आ. कटक इ. भव ई. जलधि

उत्तर

1. इ	2. अ	3. आ	4. अ	5. ई	6. इ	7. ई	8. आ	9. अ
10. इ	11. इ	12. अ	13. इ	14. आ	15. ई	16. अ	17. इ	18. ई
19. आ	20. आ	21. आ	22. ई	23. अ	24. अ	25. ई		

foyke ;k foijhrkFkd 'kCn

जब किसी शब्द के साथ भिन्न ही नहीं विपरीत अर्थ वाला शब्द प्रयुक्त होता है, तो उसे विपरीतार्थक शब्द कहते हैं। मानव जीवन जिस प्रकार सुख–दुख रूपी ताने–बाने से बना है उसी प्रकार अनुकूल प्रतिकूल रूप और प्रभाव का होना स्वाभाविक है। ऐसे अनुकूल–प्रतिकूल संदर्भों को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए भाषा में विपरीतार्थक शब्द–युग्मों की योजना की जाती है। प्रत्येक भाषा में ऐसे युग्म प्रयुक्त होते हैं। विपरीतार्थक शब्द–युग्म के प्रयोग में कभी तथा, और, या, अथवा योजक शब्दों को अनपाया जाता है, तो कभी सामासिक रूप बनाने के लिए योजक चिह्न का प्रयोग होता है; यथा–

- सुख और दुख, रात और दिन, अच्छे तथा बुरे
- सुख–दुख, रात–दिन, अच्छे–बुरे

विपरीतार्थक शब्दों के प्रयोग से भावाभिव्यक्ति विशेष स्पष्ट और प्रभावी हो जाती है। विपरीतार्थक शब्द कभी सामासिक रूप में एक साथ युग्म में प्रयुक्त होते हैं, तो कभी मध्य में योजक शब्द के साथ प्रयुक्त होते है। कभी–कभी विपरीतार्थक शब्द विस्तृत वाक्य में विपरीत भाव को प्रकट करने क लिए पर्याप्त दूरी पर प्रयुक्त होते हैं; यथा– 'धरती पर जिसका जन्म होता है उसकी मृत्यु भी निश्चित होती है' वाक्य में 'जन्म' और 'मृत्यु' पर्याप्त दूरी पर अर्थात् कई पदों के पश्चात भिन्न–भिन्न उपवाक्य में प्रयुक्त हैं। इनसे जन्म–मरण के अटूट संबंध का स्पष्ट बोध होता है। पाठ्यक्रम में निर्धारित विपरीतार्थक शब्द युग्म प्रस्तुत हैं–

शब्द	***विलोम***	***शब्द***	***विलोम***
अंधकार	प्रकाश	अंधेरा	उजाला
अग्र	पश्च	अधिक	न्यून
अनाथ	सनाथ	अनुकूल	विपरीत
अनुज	अग्रज	अनुरक्ति	विरक्ति
अनुराग	विराम	अपना	पराया
अमीर	गरीब	अमृत	विष
अर्थ	अनर्थ	अस्त	उदय
आकाश	पाताल	आग	पानी
आगत	अनागत	आगामी	विगत
आचार	अनाचार	आदर	निरादर
आदर्श	यथार्थ	आदान	प्रदान
आदि	अन्त	आय	व्यय
आयात	निर्यात	आरोह	अवरोह
आर्द्र	शुष्क	आर्य	अनार्य
आवश्यक	अनावश्यक	आशा	निराशा

आसक्ति	विरक्ति	आस्तिक	नास्तिक
आस्था	अनास्था	आहार	निराहार
इच्छा	अनिच्छा	इष्ट	अनिष्ट
इहलोक	परलोक	उग्र	शांत
उचित	अनुचित	उतार	चढ़ाव
उत्कर्ष	अपकर्ष	उत्कृष्ट	निकृष्ट
उत्तम	अधम	उत्तर	प्रश्न
उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	उत्थान	पतन
उदय	अस्त	उदार	अनुदार
उदंड	विनम्र	उद्धत	विनीत
उन्नति	अवनति	उपकार	अपकार
उपयोगी	अनुपयोगी	उपस्थित	अनुपस्थित
उष्ण	शीत	ऊँच	नीच
ऋजु	वक्र	एकता	अनेकता
ऐच्छिक	अनिवार्य	जंगम	स्थावर
जटिल	सरल	जड़	चेतन
जन्म	मृत्यु	जय	पराजय
जागृति	सुषुप्ति	जीत	हार
जीवन	मृत्यु	झूठ	सच
झोंपड़ी	महल	ठोस	तरल
ठंडा	गर्म	तटस्थ	पक्षधर
तम	प्रकाश	दाएँ	बाएँ
दिन	रात	देना	लेना
दुर्लभ	सुलभ	देव	दानव
दृश्य	अदृश्य	धनी	निर्धन
धर्म	अधर्म	धीर	अधीर
नर	नारी	नरक	स्वर्ग
नवीन	प्राचीन	बुराई	भलाई
भद्र	अभद्र	भला	बुरा
भक्ष्य	अभक्ष्य	भाग्यवान	अभागा
भोगी	योगी	मंगल	अमंगल
महँगा	सस्ता	महात्मा	दुरात्मा
महान	क्षुद्र	मान	अपमान

मानव	दानव	मित्र	शत्रु
मौखिक	लिखित	यश	अपयश
याचक	दाता	योगी	भोगी
रहित	सहित	रक्षक	भक्षक
राग	द्वेष	राजा	रंक
रात	दिन	रुग्ण	स्वस्थ
रुचिकर	अरुचिकर	रूदन	हास
लौकिक	अलौकिक	वरदान	अभिशाप
वक्र	सरल / ऋजु	सबल	निर्बल
सभ्य	असभ्य	सम	विषम
समान	असमान	समीप	दूर
सरल	कठिन	सरस	नीरस
सर्वज्ञ	अल्पज्ञ	साकार	निराकार
सार्थक	निरर्थक	सुख	दुख
सुगम	दुर्गम	सेवक	स्वामी
स्थिर	अस्थिर	स्वतंत्र	परतंत्र
स्वस्थय	अस्वस्थ	स्वाधीन	पराधीन
कटु	मधुर	कठोर	मृदु
कायर	वीर	कुटिल	सरल
कोमल	कठोर	क्रय	विक्रय
क्रिया	प्रतिक्रिया	कृतज्ञ	कृतध्न
कृपालु	क्रूर	खंडन	मंडन
खरा	खोटा	खल	सज्जन
गमन	आगमन	गर्मी	सर्दी
गहरा	उथला	गुण	दोष
गुप्त	प्रकट	गुरु	शिष्य
ग्रामीण	नागरिक	गृहस्थ	संन्यासी
घातक	रक्षक	घृणा	प्रेम
चंचल	स्थिर	चतुर	मूर्ख
चर	अचर	चल	अचल
चेतना	मूर्छा	छली	निश्छल
निद्रा	जागरण	निरक्षर	साक्षर
निरर्थक	सार्थक	निर्गुण	सगुण

निर्दयी	सदय	निर्मल	मलिन
निश्चित	अनिश्चित	नीरस	सरस
नूतन	पुरातन	न्याय	अन्याय
पंडित	मूर्ख	पक्ष	विपक्ष
पाप	पुण्य	पूर्वी	पश्चिमी
पूर्ण	अपूर्ण	प्रत्यक्ष	परोक्ष
प्रशंसा	निन्दा	प्रवृत्ति	निवृत्ति
प्रस्तुत	अप्रस्तुत	प्राचीन	नवीन
प्राच्य	पाश्चात्य	फूल	काँटा
बनना	बिगड़ना	बंधन	मोक्ष
बलवान	निर्बल	बहुत	थोड़ा
बाहर	भीतर	बुद्धिमान	बुद्धिहीन, मूर्ख
विकास	ह्रास	विजय	पराजय
विधवा	सधवा	विधि	निषेध
विरोध	समर्थन	विवाहित	अविवाहित
विष	अमृत	वैध	अवैध
वृद्धि	क्षय	शकुन	अपशकुन
शांत	अशांत	शिष्ट	अशिष्ट
शीत	ग्रीष्म	शुद्ध	अशुद्ध
शोक	हर्ष	संकीर्ण	विस्तीर्ण
संक्षेप	विस्तार	संतोष	असंतोष
संध्या	प्रभात	संधि	विग्रह
सक्रिय	निष्क्रिय	सगुण	निर्गुण
सजीव	निर्जीव	सज्जन	दुर्जन
सत्य	असत्य	सदाचार	दुराचार
सफल	विफल, असफल	स्वाभाविक	अस्वाभाविक
स्वार्थ	परमार्थ	हर्ष	शोक
हल्का	भारी	हानि	लाभ
हार	जीत	हित	अहित
ह्रस्व	दीर्घ	सामान्य	विशेष
सुकर	दुष्कर	सुगन्ध	दुर्गन्ध
सुर	असुर	स्थायी	अस्थायी
स्थूल	सूक्ष्म	स्वदेश	विदेश

vH;kl d: fy, oLr|fu"B ç'u

निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द बताइए–

1. अग्र	:	अ. अग्रज	आ. पश्च	इ. मनोज	ई. भूत
2. आकाश	:	अ. पाताल	आ. समुद्र	इ. नरक	ई. सूर्य
3. आदान	:	अ. पायदान	आ. पीकदान	इ. दान	ई. प्रदान
4. आरोह	:	अ. प्ररोह	आ. मोह	इ. विरोध	ई. अवरोह
5. इष्ट	:	अ. अनिष्ट	आ. कनिष्ट	इ. विशिष्ट	ई. शिष्ट
6. उत्थान	:	अ. वितान	आ. पतन	इ. मचान	ई. तूफान
7. उद्धत	:	अ. पीति	आ. प्रतीत	इ. सुनीत	ई. विनीत
8. ऋजु	:	अ. वक्र	आ. तक्र	इ. चक्र	ई. हुक
9. क्रय	:	अ. तय	आ. विक्रय	इ. तपन	ई. सुनकर
10. गमन	:	अ. आगमन	आ. मगन	इ. चलन	ई. पतन
11. चल	:	अ. मचल	आ. पल	इ. गल	ई. अचल
12. जड़	:	अ. मूर्ख	आ. मूल	इ. चेतन	ई. जड़ना
13. दिन	:	अ. दिवस	आ. रात	इ. सुख	ई. उजाला
14. नवीन	:	अ. नया	आ. नूतन	इ. अर्वाचीन	ई. प्राचीन
15. प्रत्यक्ष	:	अ. परोक्ष	आ. पक्ष	इ. विपक्ष	ई. साथ
16. महान	:	अ. भद्र	आ. क्षुद्र	इ. अग्र	ई. तक
17. याचक	:	अ. भक्षक	आ. रक्षक	इ. दाता	ई. माता
18. रहित	:	अ. बहुत	आ. चलित	इ. कुपित	ई. सहित
19. लौकिक	:	अ. अलौकिक	आ. भौतिक	इ. मौलिक	ई. खालिक
20. वरदान	:	अ. अभिशाप	आ. प्रताप	इ. प्रलाप	ई. विलाप
21. विकास	:	अ. हताश	आ. विनाश	इ. प्रकाश	ई. ह्रास
22. विधि	:	अ. ब्रह्मा	आ. निषेध	इ. अविधि	ई. प्रविधि
23. विष	:	अ. अमृत	आ. हलाहल	इ. पानी	ई. जीवन
24. संक्षेप	:	अ. बड़ा	आ. विशाल	इ. महान	ई. विस्तार
25. सम	:	अ. असम	आ. विषम	इ. खसम	ई. सामान
26. साकार	:	अ. कार	आ. विकार	इ. निराकार	ई. महाकार
27. सुर	:	अ. देवता	आ. असुर	इ. वीर	ई. इन्द्र
28. स्थूल	:	अ. धरती	आ. विशाल	इ. पहाड़	ई. सूक्ष्म
29. स्वाधीन	:	अ. पराधीन	आ. आधीन	इ. विचाराधीन	ई. स्वतंत्र
30. हानि	:	अ. धोखा	आ. आम.	इ. लाभ	ई. व्यय
31. ह्रस्व	:	अ. हल	आ. जोड़	इ. भाग	ई. दीर्घ

उत्तर

1. आ	2. आ	3. ई	4. ई	5. अ	6. आ	7. ई	8. अ	9. आ
10. अ	11. ई	12. इ	13. आ	14. ई	15. अ	16. आ	17. इ	18. ई
19. अ	20. अ	21. ई	22. आ	23. अ.	24. ई	25. आ	26. इ	27. आ
28. ई	29. अ	30. इ	31. ई					

okD; ds fy, ,d 'kCn

भावाभिव्यक्ति के साधन को भाषा कहते हैं। जिस भाषा में सीमित शब्दों मे स्पष्ट और गंभीर भावाभिव्यक्ति संभव हो उसे श्रेष्ठ भाषा की संज्ञा दी जाती है। व्यक्ति सूक्षात्मक भाषा में अपने भावों को प्रकट करना चाहता है। जिस भाव को पूरे वाक्य में प्रकट किया जाता है, उसे एक शब्द में प्रकट करना संभव होता है। यही सूक्षात्मक भाषा का प्रमुख लक्षण है। प्रत्येक भाषा में ऐसे शब्दों की भावाभिव्यक्ति में विशेष भूमिका होती है। ऐसे शब्दों के प्रयोग से भाषा और साहित्य को परिमाजित और उत्कृष्ट रूप मिलता है। इस प्रकार एक वाक्य के स्थान पर एक शब्द के प्रयोग का महत्व स्वतः सिद्ध होता है।

पाठ्यक्रम में निर्धारित ऐसे वाक्यों के लिए प्रयुक्त शब्दों के संदर्भ प्रस्तुत हैं–

जो अनुकरण करने योग्य हो	अनुकरणीय
जो धन का दुरुपयोग करता हो	अपव्ययी
जिसे जाना न जा सके	अज्ञेय
जिसके आने की तिथि निश्चित न हो	अतिथि
जिसका आदि न हो	अनादि
जो कुछ न जानता हो	अज्ञ
जिसकी कल्पना न की जा सके	अकल्पनीय
जिसके समान कोई दूसरा न हो	अद्वितीय
जहाँ जाया न जा सके	अगम्य
जिसे जीता न जा सके	अजेय/अपराजेय
जिसका अन्त न हो	अनंत
जो सदा रहे /जो कभी मरता न हो	अमर
जिसका जन्म न हुआ हो	अजन्मा
जो थोड़ा बोलता हो	अल्पभाषी/मितभाषी
जिसकी गहराई का पता न चले	अथाह
जो सबसे आगे चलता है	अग्रगामी /अग्रगण्य/अग्रणी
जिसके वास का किसी को पता न हो	अज्ञातवास
जो कानून के विरुद्ध हो	अवैध
जिसका इलाज न हो सके	असाध्य

जिसका विश्वास न किया जा सके	अविश्वसनीय
जो होकर ही रहे	अवश्यंभावी
किसी वस्तु का बढ़ा–चढ़ा कर वर्णन करना	अतिशयोक्ति
जिसका कोई स्वामी/नाथ न हो	अनाथ
जिसका भाग्य अच्छा न हो	अभागा/भाग्यहीन
जो कम व्यय करता हो	अल्पव्ययी/मितव्ययी
जिसे क्षमा न किया जा सके	अक्षम्य
जिसे भेदा न जा सके	अभेद्य
जिसका अनुभव इन्द्रियों द्वारा न हो	अतीन्द्रिय
सब या कुछ राष्ट्रों से संबंध रखने वाला	अन्तर्राष्ट्रीय
जिसका ज्ञान कम हो/कम जानने वाला	अल्पज्ञ
जो कुछ न करता हो	अकर्मण्य
बिना वेतन के काम करने वाला	अवैतनिक
जो दिखाई न दे	अदृश्य
जिसका कोई शत्रु न हो	अजातशत्रु
जिसका मूल्य न आँका जा सके	अमूल्य
जो नियम के अनुसार न हो	अनियमित
जिसमें संदेह न हो	असंदिग्ध
जिसे भुलाया न जा सके	अविस्मरणीय
जो इस संसार से बाहर की वस्तु हो	अलौकिक
दोपहर के बाद का समय	अपराह्न
जिसके शरीर में केवल हड्डियाँ शेष रह गई हों	अस्थिशेष
जिस पर मुकदमा चल रहा हो	अभियुक्त
जहाँ जाना संभव न हो	अगम
बड़ा भाई	अग्रज
परस्पर एक दूसरे पर आश्रित	अन्योन्याश्रित
जिसका निर्णय न हो सका हो	अनिर्णीत
जिसकी तुलना न की जा सके	अतुलनीय
कम खाने वाला	अल्पाहारी/मिताहारी
जो वाणी द्वारा व्यक्त न की जा सके	अनिर्वचनीय

जिसका दमन न हो सके	अदम्य
जो बात कही न जा सके	अकथनीय
जिसका वर्णन न किया जा सके	वर्णनातीत/अवर्णनीय
अवसर के अनुसार बदल जाने वाला	अवसरवादी
जो बात पहले कभी न हुई हो	अभूतपूर्व
जो वध करने योग्य न हो	अवध्य
दूसरे के पीछे चलने वाला	अनुगामी/अनुचर/अनुयायी
जिसके पास कुछ न हो	अकिंचन
जिसे छूना मना किया गया हो	अस्पृश्य
जिसे छोड़ा या हटाया न जा सके	अपरिहार्य/अनिवार्य
छः मास में एक बार होने वाला	अर्धवार्षिक/षटमासिक
जिस पर अभियोग लगाया गया हो	अभियुक्त/प्रतिवादी
जिसमें शक्ति न हो	अशक्त
जो पहले न पढ़ा हो	अपठित
जिसकी आशा न की गई हो	अप्रत्याशित
जिसकी कोई उपमा न हो	अनुपम
जो सहन न किया जा सके	असह्य
जो करने योग्य न हो	अकरणीय
जिसको काटा न जा सके	अकाट्य
जिसका मन/ध्यान दूसरी ओर हो	अन्यमनस्क
किसी चीज की खोज करने वाला	अन्वेषक
मन में होने वाला ज्ञान	अन्तर्ज्ञान
अन्दर छिपा हुआ	अन्तर्निहित
जिसे किसी विषय की जानकारी न हो	अनभिज्ञ
जो नष्ट न हो	अविनाशी/अनश्वर
जो आँखों के सामने न हो	अप्रत्यक्ष
जिसका पार न पाया जा सके	अपार
जिसे कभी बुढ़ापा न आये	अजर
जो परिचित न हो	अपरिचित
जो कभी तृप्त न होता हो	अतृप्त

जो पढ़ा लिखा न हो	अनपढ़ / निरक्षर
छोटा भाई	अनुज
जिसकी गिनती न की जा सके	अगणित / अगणनीय
जो बात न कही गई हो	अनकही
बिना सोचे–समझे किया गया विश्वास	अंधविश्वास
जिसके समान कोई दूसरा न हो	अनन्य
जिसके आर–पार न देखा जा सके	अपारदर्शी / अपारदर्शक
नई चीज़ की खोज करने वाला	आविष्कारक
जिसे किसी से लगाव न हो	अलिप्त / निर्लिप्त
अपनी हत्या स्वंय करना	आत्महत्या
अपनी प्रशंसा करने वाला	आत्मश्लाघी
आकाश में घूमने वाला	नभग / नभचर / आकाशचारी
अतिथि का सत्कार	आतिथ्य
आज्ञा पालन करने वाला	आज्ञाकारी
दूसरे देश से मँगाया जाना	आयात
जो दूर की बात सोच लेता / देख लेता हो	दूरद्रष्टा
काम से जी चुराने वाला	कामचोर
जिसे कभी लज्जा / शर्म न आती हो	निर्लज्ज / बेशर्म
जो धर्म का काम करे	धर्मात्मा
जो काम सरल हो	सुकर
प्रतिदिन होने वाला	दैनिक
जिस पर उपकार किया गया हो	उपकृत
जिसका कोई अर्थ न हो	निरर्थक
उपजाऊ भूमि	उर्वरा
उपकार को मानने वाला	कृतज्ञ
उद्योग से संबंधित	औद्योगिक
जो सभी का प्रिय हो	सर्वप्रिय
अवश्य होने वाली घटना	भवितव्यता
जिसमें विष हो	विषैला
इन्द्रियों से परे	इन्द्रियातीत

हिंसा करने वाला	हिंसक
जिसकी तीन भुजाएं हों	त्रिभुज
जिसके मन में कोई कपट न हो	निष्कपट
जिसकी आत्मा महान हो	महात्मा
अत्यंत सुंदरी स्त्री	रूपसी
हाथ से लिखा हुआ	हस्तलिखित
जिसके हाथ में वज्र हो	वज्रपाणि
छात्रों के रहने का स्थान	छात्रावास
जो किसी के पक्ष में न हो	तटस्थ
सुख की इच्छा रखने वाला	सुखार्थी
आँखों के सामने होने वाला	प्रत्यक्ष
जो स्वयं पैदा हुआ हो	स्वयंभू
जंगल में स्वयं लगने वाली आग	दावाग्नि
जो अभी–अभी पैदा हुआ हो	नवजात
जिसकी परीक्षा ली जा चुकी हो	परीक्षित
जिस पुस्तक में आठ अध्याय हों	अष्टाध्यायी
ईश्वर में विश्वास रखने वाला	आस्तिक
जो अपनी हत्या स्वयं करता हो	आत्मघाती / आत्महंता
ऊपर चढ़ने वाला	आरोही
अचानक होने वाली बात / घटना	आकस्मिक
आदि से अन्त तक	आद्योपान्त
आलोचना करने वाला	आलोचक
जिसकी आयु बहुत लंबी हो	दीर्घायु
जो भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों देखने वाला हो	त्रिकालदर्शी
जो दान करता हो	दानी
जो दूसरों से ईर्ष्या रखता हो	ईर्ष्यालु
जो जाना पहचाना हो	परिचित
जो बाद में अधिकारी बने	उत्तराधिकारी
तीनों लोकों का स्वामी	त्रिलोकी
नीचे लिखा हुआ	निम्नलिखित

जिसका रूप अच्छा न हो	कुरूप
वह भूमि जो उपजाऊ न हो	ऊसर
जो उच्च कुल में पैदा हुआ हो	कुलीन
जो कल्पना से परे हो	कल्पनातीत
जिसक आचरण अच्छा हो	सदाचारी
जिस पुरुष की पत्नी की मृत्यु हो गई हो	विधुर
मांस खानेवाला	मांसाहारी/सामिषभोजी
जो क्षमा करने योग्य हो	क्षम्य
बड़ी इमारत के टूटे–फूटे भाग	खंडहर
प्रशंसा करने योग्य	प्रशंसनीय
पश्चिम से संबंध रखने वाला	पाश्चात्य
वीर पुत्र को जन्म देने वाली माता	वीरप्रसू
खून से रंगा हुआ	रक्तरंजित
सौतेली माता	विमाता
बहुत समय तक बना रहने वाला	चिरस्थायी
जो जन्म से अंधा हो	जन्मांध
आँखों के सामने न होने वाला	परोक्ष
शक्ति का उपासक	शाक्त
जो पूरी तरह से बरबाद हो गया हो	ध्वस्त
जिसका जन्म दो बार हुआ हो	द्विज
पाप करने के बाद स्वयं दण्ड पाना	प्रायश्चित
दूसरों का भला करने वाला	परोपकारी
जो बहुत से रूप धारण करता हो	बहुरुपिया
शरीर/काया संबंधी	दैहिक/कायिक
रजोगुण/राजा से संबंधी	राजसी
नीति जानने वाला	नीतिज्ञ
जो मोह न करता हो	निर्मोही
बुरे चरित्रवाला	दुष्चरित्र
दर्शन शास्त्र को जानने वाला	दार्शनिक
जहाँ पहुँचना कठिन हो	दुर्गम

सदा सत्य बोलने वाला	सत्यवादी
जीवनदान देने वाली औषधि	प्राणदा
जिसकी मछली/मीन जैसी आँखें हों	मीनाक्षी
जिसने यश प्राप्त किया है	यशस्वी
लोहे के समान दृढ़ निश्चयवाला	लौहपुरुष
जो वन में विचरण करे	वनचर
जो नष्ट होने वाला हो	नश्वर
स्मरण कराने वाला	स्मारक
शक्ति के अनुसार	यथाशक्ति
जो पढ़ने योग्य हो	पठनीय
जो अपने पैरों पर खड़ा हो	स्वावलंबी
जिसकी भुजा ऊपर की ओर हो	ऊर्ध्वबाहु
राज्य से विद्रोह करने वाला	राजद्रोही
नकली वेश में रहने वाला	छद्मवेशी
जनता द्वारा चलाया जाने वाला राज्य	जनतंत्र
साफ–साफ कहने वाला	स्पष्ट वक्ता
परिवार के साथ	सपरिवार
जिसमें संदेह हो	संदिग्ध
संध्या और रात्रि के बीच का समय	गोधूलिबेला
अपना नाम पूरा/संक्षिप्त स्वयं लिखना	हस्ताक्षर
इतिहास जानने वाला	इतिहासज्ञ/ऐतिहासिक
चिंता में डूबा रहने वाला	चिंतित
जो ऊपर कहा/लिखा गया हो	उपर्युक्त/उपरिलिखित
जिसे दण्ड का भय न हो	उद्दण्ड
जो केवल कहने एवं दिखाने के लिए हो	औपचारिक
जो बात लोगों से सुनी गई हो	किंवदन्ती/जनश्रुति
जो कार्य कष्ट से सिद्ध हो	दु:साध्य/कष्टसाध्य
जो कड़वा बोलता हो	कटुभाषी
फल खाकर ही रहने वाला	फलाहारी
जिसकी बहुत अधिक चर्चा हो	बहुचर्चित

वाणी संबंधी	वाचिक
तमोगुण संबंधी	तामसी
वह पहाड़ जिससे आग निकली हो	ज्वालामुखी
अच्छे चरित्रवाला	सच्चरित्र
जिसमें दया हो	दयालु
जो कठिनाई से प्राप्त हो	दुर्लभ
जो देखने योग्य हो	दर्शनीय
परदेश में जाकर बस जाने वाला	प्रवासी
बच्चों के लिए उपयोगी	बालोपयोगी
जिसकी मरने की अवस्था हो	मुमूर्ष
जिसके नीचे रेखा खिंची हो	रेखांकित
जिसके पास लाखों रुपया हो	लखपति
जो स्थिर रहे	स्थावर
जिसको डर/भय न हो	निडर/निर्भय
वसुदेव का पुत्र	वासुदेव
जिसके पाँच मुख हों	पंचानन
रोगी का इलाज करने वाला	चिकित्सक
अपनी बात पर अड़ा रहने वाला	अड़ियल/हठधर्मी
न्याय शास्त्र का अच्छी तरह जानने वाला	नैयायिक
जिसे देखकर डर लगे	डरावना/भयावह
पति–पत्नी का जोड़ा	दम्पत्ति
जिसने ऋण लिया हो	ऋणी
एक ही जाति के	सजातीय
पुरुषत्वहीन व्यक्ति	क्लीव
अपना मतलब निकालने वाला	स्वार्थी
जिसका कोई अर्थ हो	सार्थक
जिसके एकाधिक अर्थ निकलें	श्लिष्ट
जिससे घृणा की जाए	घृणित
जिसने ऋण चुका दिया हो	उऋण
एक व्यक्ति का राज्य	एकतंत्र

जो व्यक्ति अपनी बुराई के लिए प्रसिद्ध हो	कुख्यात
तेज बुद्धि वाला	कुशाग्र बुद्धि
बुरे मार्ग पर चलने वाला	कुमार्गी
कांटों से भरा हुआ	कंटकाकीर्ण
निरन्तर कर्मशील रहने वाला	कर्मठ
आकाश को छूने वाला	गगनचुम्बी
जो छिपाने योग्य हो	गोपनीय
जिसके चार भुजाएं हों	चतुर्भुज
दूसरों के दोष ढूंढने वाला	छिद्रान्वेषी
जीने की प्रबल इच्छा	जिजीविषा
जानने की इच्छा रखने वाला	जिज्ञासु
तीन मास में एक बार होने वाला	त्रैमासिक
जो पुत्र गोद लिया हो	दत्तक
जिसका दमन करना कठिन हो	दुर्दम्य
जिसको भेदना कठिन हो	दुर्भेद्य
जो दो भाषाएं जानता हो	दुभाषिया
जो विनीत/नम्र न हो	दुर्विनीत
जिसे लाँघना कठिन हो	दुर्लंध्य
जिसके धन न हो	निर्धन
जिसका कोई उद्देश्य न हो	निरुद्देश्य
जो उत्तर न दे सके	निरुत्तर
जहाँ कोई न रहता हो	निर्जन
जिसमें कोई दोष न हो	निर्दोष
जिसमें दया न हो	निर्दयी
घूमने–फिरने वाला	घुमक्कड़
ईश्वर पर विश्वास न करने वाला	नास्तिक
जिसका हृदय पत्थर के समान कठोर हो	पाषाण हृदय
जो दूसरों के सहारे जीता हो	परोपजीवी
जो किसी विषय का पूर्ण विद्वान हो	पारंगत
इतिहास से पहले का	प्रागैतिहासिक

दूसरे लोक से संबंधित	पारलौकिक
युद्ध में स्थिर रहने वाला	युधिष्ठिर
पच्चीस वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में होने वाला उत्सव	रजत जयंती
जिस पर विश्वास किया जा सके	विश्वस्त/विश्वसनीय
जिसे वाणी पर पूर्ण अधिकार हो	वाचस्पति
जिसका पति मर चुका हो	विधवा
जिसके हाथ में वीणा हो	वीणापाणि
जिस स्त्री के संतान न होती हो	बंध्या
शत्रु को मारने में समर्थ	शत्रुघ्न
जो टुकड़े–टुकड़े हो गया हो	खंडित
छिपकर खबर लेने वाला	गुप्तचर
चार वेदों का जानने वाला	चतुर्वेदी
जिसके हाथ में चक्र हो	चक्रपाणि
जल में रहने वाला	जलचर
जिसने अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली हो	जितेन्द्रिय
जो किसी का पक्ष न ले	तटस्थ/निष्पक्ष
कठिनाई से किया जाने वाला कार्य	दुष्कर
बुरे आचरण वाला	दुराचारी
आगे/भविष्य की सोचने वाला	दूरदर्शी
जिसे समझना कठिन हो	दुर्बोध
बहुत तेजी से चलने वाला	द्रुतगामी
जो केवल दूध पर निर्वाह करे	दुग्धाहारी
धुएँ से भरा हुआ	धूम्राच्छादित
जिसका कोई आधार न हो	निराधार
निरीक्षण करने वाला	निरीक्षक
जिसकी कोई इच्छा न हो	निस्पृह
जिसका कोई आकार न हो	निराकार
जिसने कोई अपराध न किया हो	निरपराध
जो मांस न खाता हो	निरामिष भोजी/शाकाहारी
जिसके मन में ममता न हो	निर्मम

जो अभी–अभी आया हो	नवागन्तुक
पत्तों की बनी हुई कुटिया	पर्णकुटी
जो सबके साथ प्रेमपूर्वक बोलता हो	प्रियभाषी / प्रियंबद
बाद में मिला हुआ अंश	प्रक्षिप्त
रास्ता दिखाने वाला	पथप्रदर्शक
बुद्धि ही जिसके नेत्र हों (नेत्रहीन)	प्रज्ञाचक्षु
दूसरों के सहारे पर रहने वाला	परावलंबी
मांस में एक बार होने वाला	मासिक
जो लोगों में प्रिय हो	लोकप्रिय
किसी संस्था / व्यक्ति के पचास वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में होने वाला उत्सव	स्वर्णजयंती
किसी विषय का विशेष ज्ञान रखने वाला	विशेषज्ञ
व्याकरण जानने वाला	वैयाकरण
विष्णु का उपासक	वैष्णव
वर्ष / साल में एक बार होने वाला	वार्षिक / सालाना
जिसे संसार के प्रति मोह न रहा हो	वीतरागी
सदा रहने वाला	शाश्वत / स्थायी
शिव का उपासक	शैव
हित चाहने वाला	शुभेच्छु / हितैषी
जो शरण में आया हो	शरणागत
एक ही समय में होने वाला	समसामयिक / समकालीन
किसी संस्था / व्यक्ति के साठ वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में होने वाला उत्सव	हीरक जयंती
सप्ताह में एक बार होने वाला	साप्ताहिक
सबके मन की बात जानने वाला	सर्वान्तर्यामी
जिसका पति जीवित हो	सधवा / सुहागिन
जो सरलता से प्राप्त हो	सुलभ
संकट में ग्रस्त	संकटग्रस्त / विपन्न
जो साथ पढ़ता हो	सहपाठी
प्रतियोगिता आदि में किसी से होड़ लेना	स्पर्द्धा / प्रतिस्पर्द्धा
दूसरे के काम में हाथ डालना	हस्तक्षेप

क्षण/शीघ्र टूटने/नष्ट होने वाला	क्षण–भंगुर
जिसका इलाज न हो	लाइलाज
सिर पर धारण करने योग्य	शिरोधार्य
जो शरण में आना चाहता हो	शरणार्थी
पत्नी के साथ	सपत्नीक
जिसमें सबकी सम्मति हो	सर्वसम्मति
सबसे अधिक शक्तिवाला/जिसमें सब प्रकार की शक्ति हो	सर्वशक्तिमान
सब कुछ जानने वाला	सर्वज्ञ
सहन करने की शक्तिवाला	सहनशील/सहिष्णु
जो हर स्थान पर विद्यमान हो	सर्वव्यापक
जो स्वयं सेवा करता है	स्वयंसेवक
जो सबके साथ समान व्यवहार करे	समदर्शी
समान अवस्था का	समवयस्क
युगों से चला आने वाला	सनातन
हानि को पूरा करना	क्षतिपूर्ति
बहुत बोलने वाला	वाचाल
जो साफ–साफ पढ़ा जाए	सुवाच्य

vH;kl d fy, oLrfu"B i'u

निम्नलिखित वाक्यों के लिए शुद्ध एक शब्द बताइए–

1. जो अनुकरण करने योग्य हो–

    अ. नकल आ. अनुकरणीय इ. प्रतिलिपी ई. करणीय

2. जहाँ जाया न जा सके–

    अ. अगम्य आ. दूर इ. अतीत ई. अतल

3. जो कम खर्च करता है–

    अ. कंजूस आ. गरीब इ. निर्धन ई. मितव्ययी

4. बिना वेतन के कार्य करने वाला–

    अ. अवैतनिक आ. कामचोर इ. बेगार ई. स्वकर्मी

5. जिस पर मुकदमा चल रहा हो–

    अ. आतंकी आ. डाकू इ. अभियुक्त ई. चोर

6. अवसर के अनुसार बदल जाने वाला

अ. दलबदलू आ. अस्थिर इ. चंचल ई. अवसरवादी

7. जिसके पास कुछ न हो–

अ. गरीब आ. अकिंचन इ. निर्धन ई. नंगधडंग

8. जिसकी आशा न की गई हो–

अ. अप्रत्याशित आ. निराशा इ. आशाहीन ई. भग्नाश

9. जिसके समान दूसरा न हो–

अ. भिन्न आ. विपन्न इ. अन्य ई. अनन्य

10. जो दूर की बात सोच लेता है

अ. दूरद्रष्टा आ. दूरगामी इ. दूरस्थ ई. दूरभाष

11. जंगल में लगने वाली आग–

अ. ऊष्माग्नि आ. वन–अग्नि इ. दावाग्नि ई. वडवाग्नि

12. वह भूमि जो उपजाऊ न हो–

अ. जंगल आ. ऊसर इ. खंजर ई. खेतिहर

13. जो पूरी तरह बरबाद हो गया हो–

अ. भ्रष्ट आ. अस्त इ. नष्ट ई. ध्वस्त

14. जिसकी मछली जैसी आँखें हों–

अ. मीनाक्षी आ. मृगनयनी इ. कमलनयनी ई. चंचलाक्षी

15. परदेश में जाकर बस जाने वाला–

अ. परदेशी आ. स्वदेशी इ. प्रवासी ई. विदेशी

16. जहाँ कोई भी आदमी न रहता हो–

अ. जंगल आ. निर्जन इ. शून्य ई. सुनसान

17. ईश्वर पर विश्वास न करने वाला–

अ. नास्तिक आ. आस्तिक इ. अविश्वासी ई. परावलम्बी

18. जिसे वाणी पर पूरा अधिकार हो–

अ. वाचस्पति आ. वाचाल इ. वाक्पटु ई. वागर्थ

19. किसी व्यक्ति/संस्था के पचास वर्ष पूरे होने पर मनाई जाने वाली जयंती–

अ. हीरक जयंती आ. रजत जयंती इ. स्वर्ण जयंती ई. मौतिक्य जयंती

20. किसी संस्था/व्यक्ति के साठ वर्ष पर मनाया जाने वाला उत्सव–

अ. रजत जयंती आ. हीरक जयंती इ. स्वर्ण जयंती ई. मोतिक्य जयंती

21. जो सभी स्थानों पर विद्यमान है–

अ. सर्वज्ञ आ. सर्वांगी इ. सर्वशक्तिमान ई. सर्वव्यापी

उत्तर

1. आ	2. अ	3. ई	4. अ	5. इ	6. ई	7. आ	8. अ	9. ई
10. अ	11. इ	12. आ	13. ई	14. अ	15. इ	16 आ	17. अ	18. अ
19. इ	20. आ	21. ई						

egkoj

मुहावरा का शाब्दिक अर्थ है– अभ्यास। भाषा में चमत्कारिक अर्थ प्रकट करने के लिए जब वाक्य या वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ में प्रयुक्त होने लगे, तो उसे मुहावरा की संज्ञा दी जाती है। प्रभावी भावाभिव्यक्ति में मुहावरों की विशेष भूमिका होती है। मुहावरे के प्रयोग से एक ओर भाषा का स्वरूप आकर्षक हो जाता है, तो दूसरी ओर भावाभिव्यक्ति अधिक प्रभावी हो जाती है। यथा–यदि "वह बहुत गुस्से में है" के स्थान पर कहा जाए "वह आग बबूला हो रहा है" तो कहीं अधिक प्रभावोत्पादक रूप सामने आता है।

पाठ्यक्रम में निर्धारित मुहावरों के अर्थ प्रयोग प्रस्तुत हैं–

1. **अंग–अंग ढीला होना :** बहुत थक जाना

   प्रयोग–काम करते करते अंग–अंग ढीला हो रहा है।

2. **अंग–अंग मुस्कराना :** बहुत प्रसन्न होना

   प्रयोग– प्रतियोगिता में प्रथम आने पर उसका अंग–अंग मुस्कराने लगा।

3. **अंगूठा दिखाना :** इन्कार करना

   प्रयोग– उससे किताब माँगी तो उसने अँगूठा दिखा दिया।

4. **अंगार उगलना :** क्रोध में कटु शब्द बोलना

   प्रयोग– मुझसे भूल हो गई और रमेश अंगार उगलने लगा।

5. **अंधे की लाठी :** एक मात्र सहारा

   प्रयोग– सुधीर अपने अंधे पिता की लाठी है।

6. **अक्ल का दुश्मन :** मूर्ख

   प्रयोग– वह अक्ल का दुश्मन है, उसे मत समझाओ।

7. **अक्ल पर पत्थर पड़ना :** कुछ समझ में न आना

   प्रयोग– कुछ तो बताओ, क्या अक्ल पर पत्थर पड़ गए हैं।

8. **अगर–मगर करना :** बहाना बनाना

   प्रयोग– अगर–मगर करके निकल जाना उसकी आदत है।

9. **अपना उल्लू सीधा करना :** स्वार्थ साधना

   प्रयोग– वह अपना उल्लू सीधा करके गायब हो जाएगा।

10. **अपनी खिचड़ी अलग पकाना :** सबसे अलग रहना

    प्रयोग– दिनेश अपनी खिचड़ी अलग ही पकाता रहता है।

11. **अपने मुँह मियां मिट्ठू बनना :** अपनी बड़ाई स्वयं करना
प्रयोग– तुम्हें करना कुछ नहीं है, बस अपने मुँह मिया मिटठू बनते रहो।

12. **अपने पैर पर कुल्हाडी मारना :** अपनी हानि स्वयं करना
प्रयोग– अपने दोस्त को धोखा देकर अपने पैर पर कुल्हाड़ी मार रहे हो।

13. **आँख का तारा :** बहुत प्यारा
प्रयोग– मनोहर अपनी माँ की आँखों का तारा है।

14. **आँखें खुलना :** होश में आना
प्रयोग– लुट जाने के बाद आँखें खुली।

15. **आँखें दिखाना :** क्रोधित होना
प्रयोग– मैंने तुम्हें कुछ भी नहीं कहा फिर आँखे क्यों दिखा रहे हो?

16. **आँखे पथरा जाना :** प्रतीक्षा करके थक जाना
प्रयोग– तुम्हारी प्रतीक्षा में मेरी आँखें पथरा गईं।

17. **आँखें बिछाना :** आदर–सत्कार करना
प्रयोग– अतिथि के स्वागत में आँखें बिछाए खडे हैं।

18. **आँखों का काँटा :** अप्रिय व्यक्ति
प्रयोग– श्यामा उसकी आँखों का काँटा है।

19. **आँच न आने देना :** रंचमात्र कष्ट न होना
प्रयोग– उसके रहते मनोज पर आँच नहीं आ सकती।

20. **आकाश के तारे तोड़ना :** असंभव कार्य करना
प्रयोग– हिम्मत करो तो आकाश के तारे तोड़ सकते हो।

21. **आकाश – पाताल एक करना :** पूरा प्रयत्न करना
प्रयोग– स्वतंत्रता सेनानियों ने आकाश–पाताल एक कर दिया।

22. **आकाश से बातें करना :** बहुत ऊँचा होना
प्रयोग– हिमालय आकाश से बातें करता है।

23. **आग बबूला होना :** बहुत गुस्से में होना
प्रयोग– वह छोटी सी बात पर आग बबूला हो गया।

24. **आटे–दाल का भाव मालूम होना :** कठिनाई में पड़ना
प्रयोग– जब तुम्हारे सिर पर आएगा, तो आटे–दाल का भाव मालूम हो जाएगा।

25. **आपे से बाहर होना :** बहुत क्रोधित होना

प्रयोग– तुम छोटी सी बात पर आपे से बाहर हो रहे हो।

26. **आसमान सिर पर उठाना :** बहुत शोर करना

प्रयोग– मौका पाते ही बच्चों ने आसमान सिर पर उठा लिया है।

27. **ईंट का जवाब पत्थर से देना :** कड़ा मुकाबला करना

प्रयोग– दुश्मन को ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहिए।

28. **ईंट से ईंट बजाना :** नष्ट–भ्रष्ट करना

प्रयोग– मुझसे मत उलझो वरना ईंट से ईंट बजा दूँगा।

29. **ईद का चाँद होना :** बहुत दिन बाद मिलना

प्रयोग– वाह! तुम तो ईद का चाँद हो गये।

30. **उंगली पर नाचना :** वश में रखना

प्रयोग– वह तो अपने दोस्त की उंगली पर नाच रहा है।

31. **उंगली उठाना :** दोष दर्शाना

प्रयोग– मधुर पर झूठ में उंगली उठा रहे हो।

32. **उल्टी गंगा बहाना :** नियम विरुद्ध कार्य करना

प्रयोग– महिला की आय पर टैक्स लगाना उल्टी गंगा बहाना है।

33. **उल्लू बनाना :** मूर्ख सिद्ध करना

प्रयोग– प्रधान को भी लोग उल्लू बनाने लगे हैं।

34. **एक ही थैली के चट्‌टे–बट्‌टे :** सब का एक सा होना

प्रयोग– इनमें से किसी पर विश्वास न करना सभी एक ही थैली के चट्‌टे–बट्‌टे हैं।

35. **कमर कसना :** तत्पर होना

प्रयोग– प्रतियोगिता के लिए अभी से कमर कस लो।

36. **करवटें बदलते रहना :** नींद न आना

प्रयोग– मैं दुर्घटना को याद कर पूरी रात करवटें बदलता रहा।

37. **कलई खुलना :** भेद प्रकट होना

प्रयोग– चुनाव में हारने से उसकी कलई खुल गई।

38. **कलेजा छलनी होना :** बहुत दुःखी होना

प्रयोग– रमेश की गालियाँ सुन कर उसका कलेजा छलनी हो गया।

39. **कलेजा थामना :** अपने को कठिनाई से संभाल पाना

प्रयोग– ट्रेन दुर्घटना को देख कर वह कलेजा थाम कर खड़ा हो गया।

40. **कलेजा मुँह को आना :** व्याकुल होना

प्रयोग– इस भयंकर वर्षा में कलेजा मुँह को आ रहा है।

41. **कलेजा ठंडा होना :** संतोष होना

प्रयोग– उसे चोट लग गई, अब आप का कलेजा ठंडा हो गया होगा।

42. **कान का कच्चा :** झूठी शिकायत पर विश्वास करने वाला

प्रयोग– मैं समझ गया, तू कान का कच्चा है।

43. **कान पर जूं तक न रेंगना :** कुछ असर न होना

प्रयोग– मैं बहुत बार कह चुका हूँ किन्तु उसके कान पर जूं तक नहीं रेंगती।

44. **काम तमाम करना :** मार देना

प्रयोग– उस आतंकवादी का काम तमाम हो गया।

45. **काला अक्षर भैंस बराबर :** अनपढ़

प्रयोग– उसे किताब क्यों दिखा रहे हो, उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर है।

46. **किस्मत खुलना :** भाग्योदय होना

प्रयोग– परिश्रम करने से किस्मत खुल जाती है।

47. **किस्मत फूटना :** भाग्य विपरीत होना

प्रयोगः विमल की तो किस्मत ही फूट गई है।

48. **किताबी कीड़ा :** हर समय पढ़ने वाला

प्रयोग– वह किताबी कीड़ा है, घूमने नहीं चलेगा।

49. **कुत्ते की मौत मरना :** बुरी मौत

प्रयोग– विचित्र समय है, आदमी कुत्ते की मौत मर रहे हैं।

50. **कोल्हू का बैल :** लगातार एक ही काम करने वाला

प्रयोग– वह तो कोल्हू का बैल बन गया है।

51. **खटाई में पड़ना :** संदेह में पड़ना

प्रयोग– उसका काम पूरी तरह खटाई में पड़ गया है।

52. **खाक छानना :** दर–दर भटकना

प्रयोग– वह अपनी भैंस की खोज में दर–दर भटक रहा है।

53. **खाक में मिलाना :** नष्ट भ्रष्ट करना

प्रयोग– जुए ने उसकी सारी संपत्ति खाक में मिला दी।

54. **खिल्ली उड़ाना :** हंसी उड़ाना

प्रयोग– दूसरों की खिल्ली उड़ाना छोड़ दो।

55. **खून का प्यासा :** जानी दुश्मन

प्रयोग– वह तुम्हारे खून का प्यासा है।

56. **खून खौलना :** जोश आना

प्रयोग– उसकी गंदी बातें सुनकर मेरा खून खौल उठा।

57. **खेल बिगड़ना :** काम खराब होना

प्रयोग– उसका खेल बिगड़ गया है।

58. **गला घोंटना :** अत्याचार करना

प्रयोग– मालिक की क्रूरता मजदूर का गला घोंट रही है।

59. **गले मढ़ना :** जबरदस्ती काम सौंपना

प्रयोग– उसके गले यह काम मढ़ दिया है।

60. **गड़े मुर्दे उखाड़ना :** पुरानी बातें याद दिलाना

प्रयोग– बेकार के गड़े मुर्दे उखाड़ रहे हो।

61. **गिरगिट की तरह रंग बदलना :** अपनी बात पर स्थिर न रहना

प्रयोग– उस पर विश्वास न करना, वह गिरगिट की तरह रंग बदलता रहता है।

62. **गुड़ गोबर करना :** सारा काम नष्ट करना

प्रयोग– वर्षा न होने से सारा गुड़ गोबर हो गया।

63. **गुदड़ी के लाल :** गरीबी में भी श्रेष्ठता

प्रयोग– यहाँ अनेक गुदड़ी के लाल हैं।

64. **गुल खिलाना :** निम्न काम करना

प्रयोग– नटखट नन्दू रोज ही कुछ न कुछ गुल खिलाए रहता है।

65. **गुलछर्रे उड़ाना :** मौज मारना

प्रयोग– लड़के यहाँ बैठे गुलछर्रे उड़ा रहे हैं।

66. **घर फूँक तमाशा देखना :** अपनी हानि की चिंता के बिना, मौज मारना

प्रयोग– वह अजीब आदमी है अपना घर फूँक तमाशा देख रहा है।

67. **घाव पर नमक छिड़कना :** दुखी को और दुखी करना

प्रयोग– वह फेल हो गया, उसके सामने हँस कर उसके घाव पर नमक न छिड़को।

68. **घी के दीये जलाना :** बहुत खुशियाँ मनाना

प्रयोग– प्रतियोगिता में सफल होने पर घी के दीये जलाये गए।

69. **घोड़े बेचकर सोना :** निश्चिन्त होना

प्रयोग– तुम्हे कोई चिंता नहीं है, घोड़े बेचकर सो रहे हो।

70. **चाँदी का जूता :** रुपया पैसा

प्रयोग– चाँदी के जूते लगाओ, काम अवश्य हो जायेगा।

71. **चारों खाने चित्त करना :** पूरी तरह हरा देना

प्रयोग– दारा सिंह ने विदेशी पहलवान को चारों खाने चित्त कर दिया।

72. **चिकना घड़ा :** असरहीन व्यक्ति

प्रयोग– उस पर आशा न लगाओ, वह चिकना घड़ा है।

73. **चुल्लू भर पानी में डूब जाना :** लज्जा का अनुभव करना

प्रयोग– तुमने चुल्लू भर पानी में डूब जाने का काम किया है।

74. **चूड़ियाँ पहनना :** घर में छिपना

प्रयोग– संघर्ष का समय आया, तो उसने चूड़ियाँ पहन ली।

75. **चैन की बंशी बजाना :** निश्चिंत होना

प्रयोग– नौकरी मिल गई, अब चैन की बंशी बजाओ।

76. **चौकडी भरना :** छलांग लगाना

प्रयोग– वह चौकड़ी भरता दूर निकल गया।

77. **छक्के छुड़ाना :** हराना

प्रयोग– बहादुर जवानों ने दुश्मन के छक्के छुड़ा दिए।

78. **छठी का दूध याद आना :** बहुत परेशान होना

प्रयोग– ऐसे मारूँगा कि छठी का दूध याद आ जाएगा।

79. **छाती पर मूँग दलना :** विरोधी को दबा कर रहना

प्रयोग– मैं यहीं रहकर प्रभुदयाल की छाती पर मूँग दलूगाँ।

80. **छाती पर पत्थर रखना :** हिम्मत रखना

प्रयोग– उसकी मौत को राधा ने छाती पर पत्थर रखकर सह लिया।

81. **जलभुन कर कोयला होना :** ईर्ष्या से भर जाना

प्रयोग– तुम्हारी सफलता पर वह जल भुन कर कोयला हो गई।

82. **जलती आग में घी डालना :** क्रोध भड़काना

प्रयोग– यह कह कर तुम जलती आग में घी डाल रहे हो।

83. **जान के लाले पड़ना :** बड़ी मुसीबत में फंसना

प्रयोग– बेचारे बहादुर को अपनी जान के लाले पड़े हैं।

84. **जूतियाँ चटकाना :** खुशामद करना

प्रयोग– जूतियाँ चटकाने से नौकरी मिलने की आशा नहीं है।

85. **टस से मस न होना :** अटल रहना

प्रयोग— वह जिद्दी है। टस से मस नहीं होगा।

86. **टट्टी की ओट में शिकार खेलना :** बहाने से काम निकालना

प्रयोग— भूकंप पीड़ितो के बहाने टट्टी की ओट में शिकार खेला जा रहा है।

87. **टाँग अड़ाना :** व्यर्थ की दखल देना

प्रयोग— उसकी टाँग अड़ाने की आदत आज भी नहीं गई।

88. **टाँग पसार कर सोना :** निश्चित होना

प्रयोग— परीक्षा हो गई, अब टाँग पसार कर सोओ।

89. **टोपी उछालना :** अपमानित करना

प्रयोग— उसकी टोपी उछालने का काम बुरा है।

90. **ठन—ठन गोपाल :** पास में कौड़ी न होना

प्रयोग— वह तो इस समय ठन—ठन गोपाल बन गया है।

91. **ठोकरें खाना :** धक्के खाते फिरना

प्रयोग— वह पाँच वर्षों से ठोकरें खा रहा है।

92. **डंके की चोट पर :** दावे के साथ

प्रयोग— सुनीता डंके की चोट पर चुनाव लड़ने जा रही है।

93. **डींगे हाँकना :** गप्प मारना

प्रयोग— डींगे हाँकने से काम नहीं बनेगा, कुछ कर दिखाओ।

94. **डूब मरना :** बहुत लज्जित होना

प्रयोग— तुमने डूब मरने का काम किया है।

95. **तलवे चाटना :** खुशामद करना

प्रयोग— तलवे चाटने से नौकरी नहीं मिलेगी, परिश्रम करो।

96. **तिल का ताड़ बनाना :** सामान्य बात को बढ़ा—चढ़ा कर बताना

प्रयोग— रहने दो यदि तिल का ताड़ बनाया तो झगड़ा हो जायेगा।

97. **तीन तेरह होना :** बिखर जाना

प्रयोग— सेना पहुँचते ही भीड़ तीन तेरह हो गई।

98. **थाली का बैंगन :** अस्थिर मन वाला

प्रयोग— उस पर विश्वास न करना, वह थाली का बैंगन है।

99. **दाँत खट्टे करना :** बुरी तरह पराजित करना

प्रयोग— भारतीय नौजवानों ने पाकिस्तानियों के दाँत खट्टे कर दिए।

100. **दाँत पीसना :** क्रोधित होना

प्रयोग– क्या बात है, किस पर दाँत पीस रहे हो।

101. **दाँतों तले उंगली दबाना :** आश्चर्य करना

प्रयोग– ताजमहल देख विदेशी भी दाँतों तले उँगली दबाते हैं।

102. **दाने–दाने को तरसना :** फटे हाल होना

प्रयोग– उसकी हालत बताने लायक नहीं है वह दाने–दाने को तरस रहा है।

103. **दाल मे काला होना :** कुछ भेद होना

प्रयोग– लगता है दाल में काला है।

104. **दाल न गलना :** सफल न होना

प्रयोग– उसने बहुत कोशिश की फिर भी उसके सामने दाल न गली।

105. **दोनों हाथों में लड्डू :** दोनों स्थितियों में लाभ

प्रयोग– वह वहाँ जाए या न जाए, उसके तो दोनो हाथों में लड्डू हैं।

106. **नमक मिर्च लगाना :** बढ़ा चढ़ा कर कहना

प्रयोग– मैं समझ गया तुम उसकी बातों में नमक मिर्च लगाकर कह रहे हो।

107. **नाक में दम करना :** बहुत तंग करना

प्रयोग– तुमने विपिन की नाक में दम कर रखा है।

108. **नाकों चने चबाना :** बहुत तंग करना

प्रयोग– तुमने तो उसे नाकों चने चबवा दिये।

109. **नानी याद आना :** बहुत संकट में पड़ना

प्रयोग– आगे कुछ न बोलना, नहीं तो ऐसे पीटूँगा कि नानी याद आएगी।

110. **नौ दो ग्यारह होना :** भाग जाना

प्रयोग– पुलिस के आते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गए।

111. **पगड़ी उछालना :** अपमानित करना

प्रयोग– किसी की पगड़ी उछालना बुरी बात है।

112. **पत्थर की लकीर :** पक्की बात

प्रयोग– मैंने जो कह दिया उसे पत्थर की लकीर ही समझें।

113. **पापड़ बेलना :** कष्टप्रद जीवन–यापन

प्रयोग– उसे परिवार पालने के लिए बड़े पापड़ बेलने पड़े हैं।

114. **पाँचो उंगलियाँ घी में होना :** लाभ ही लाभ

प्रयोग– शरद तो ऐसी जगह पहुँच गया जहाँ उसकी पाँचो उंगलियाँ घी में हैं।

115. **पाँव उखड़ना :** हार जाना/हिम्मत हार जाना

प्रयोग– भारतीय सेना के सामने पाकिस्तानी सेना के पाँव उखड़ गए।

116. **पानी पानी होना :** लज्जित होना

प्रयोग– वह जब चोरी में पकड़ा गया तो पानी पानी हो गया।

117. **पेट में चूहे कूदना :** बहुत भूख लगना

प्रयोग– कुछ खिलाओ पिलाओ, मेरे तो पेट में चूहे कूद रहे हैं।

118. **बगुला भगत :** धूर्त व्यक्ति

प्रयोग– बच के रहना, वह बुगला भगत है।

119. **बल्लियों उछलना :** बहुत खुश होना

प्रयोग– पुरस्कार की घोषणा हुई तो वह बल्लियों उछल गया।

120. **बंदर घुड़की :** दिखाने का भय

प्रयोग– तुम्हारी बंदर घुड़की से वह डरने वाला नहीं है।

121. **बाल की खाल उतारना :** बहुत नुक्ताचीनी करना

प्रयोग– उसकी तो आदत है बाल की खाल निकालना।

122. **बाल बाँका करना :** थोड़ी सी हानि न पहुँचाना

प्रयोग– तुम तो उसका बाल भी बाँका नहीं कर सकते।

123. **बाल–बाल बचना :** किसी तरह बच जाना

प्रयोग– दुर्घटना में जगजीवन बाल–बाल बच गए।

124. **बाग बाग होना :** बहुत प्रसन्न होना

प्रयोग– लाटरी निकलने का समाचार सुनते ही वह बाग बाग हो गया।

125. **बाएँ हाथ का खेल :** सरल काम

प्रयोग– यह तो उसके बाएँ हाथ का खेल है।

126. **भाड़ झोंकना :** बेकार समय बिताना

प्रयोग– वहाँ रह कर क्या करेगा? क्या भाड़ झोंकेगा?

127. **भीगी बिल्ली बनना :** डर जाना

प्रयोग– क्या बात है भीगी बिल्ली बन गए हो?

128. **मक्खियाँ मारना :** बेकार बैठ कर समय बिताना

प्रयोग– बिना काम के वह बैठा–बैठा मक्खियाँ मार रहा है।

129. **मन के लड्डू फोड़ना :** काम कुछ भी न कर कोरी कल्पना करना

प्रयोग– बैठे बैठे मन के लड्डू फोड़ने से कोई फायदा नहीं होगा।

130. **माथा ठनकाना :** संदेह होना

प्रयोग– उसकी हंसी सुन कर प्रमोद का माथा ठनक गया।

131. **मुँह में पानी भर जाना :** ललचाना

प्रयोग– मनचाही वस्तु देख कर मुँह में पानी भर आया।

132. **मुँह तोड़ जवाब देना :** कड़ा मुकाबला करना

प्रयोग– सेना ने आतंकवादियो को मुँह तोड़ जवाब दिया।

133. **मुँह पर कालिख पोतना :** कलंक लगाना

प्रयोग– तुमने तो परिवार के मुँह पर कालिख पोत दिया है।

134. **रंग उड़ना :** घबरा जाना

प्रयोग– एकाएक पिताजी के आने से गप्प मारते बेटे का रंग उड़ गया।

135. **रंगा सियार :** धोखा देने वाला

प्रयोग– इस रंगे सियार की एक न एक दिन पोल जरूर खुलेगी।

136. **रफू चक्कर होना :** भाग जाना

प्रयोग– अँधेरे का सहारा लेकर चोर रफुचक्कर हो गया।

137. **राई का पहाड़ बनाना :** छोटी सी बात को बढ़ाना

प्रयोग– तुम राई का पहाड़ बना रहे हो, चुप हो जाओ।

138. **लकीर का फकीर :** रूढ़ि का पालन करने वाला

प्रयोग– वह पूरा लकीर का फकीर है।

139. **लट्टू होना :** फिदा होना

प्रयोग– तुम तो उस पर लट्टू हो रहे हो।

140. **लाल–पीला होना :** क्रोधित होना

प्रयोग– मेरी समझ में नहीं आया, वे क्यों लाल–पीले हो रहे थे।

141. **लोहे के चने चबाना :** बहुत कठिनाई का सामना करना

प्रयोग– इस कार्य में सफलता के लिए लोहे के चने चबाने पड़ेंगे।

142. **लोहा मानना :** शक्तिशाली होना स्वीकार करना

प्रयोग– विदेशियों को भी भारतीयों का लोहा मानना ही पड़ा है।

143. **श्रीगणेश करना :** शुरू करना

प्रयोग– गृह–निर्माण के कार्य का श्रीगणेश होने वाला है।

144. **सिर पर भूत सवार होना :** धुन होना

प्रयोग– वह तो अब ऐसे लग गया मानो उसके सिर पर भूत सवार है।

145. **सोने की चिड़िया :** बहुमूल्य वस्तु

प्रयोग– यह सोने की चिड़िया है, इसे नहीं छोडूँगा।

146. **हवाई किले बनाना :** कल्पना में खोए रहना

प्रयोग– हवाई किले बनाते रहो इससे कुछ भी नहीं होना है।

147. **हवा से बातें करना :** तेजी से आगे बड़ना

प्रयोग– दौड़ में वह हवा से बातें कर रहा था।

148. **हाथ खींचना :** साथ न देना

प्रयोग– वह बड़ा विचित्र है, समय आने पर ही हाथ खींच लिया।

149. **हाथ पर हाथ धर कर बैठना :** आलसी होना

प्रयोग– क्या बात है, हाथ पर हाथ धरे बैठे हो, कुछ करो।

150. **हाथ पाँव मारना :** प्रयत्न करना

प्रयोग– वह सफल होने के लिए पूरे हाथ पाँव मार रहा है।

151. **हाथ साफ करना :** चुरा लेना

प्रयोग– देखते – देखते पता नहीं कब चोर ने घड़ी पर हाथ साफ कर दिया।

vH;kl g|r| oLr|fu"B ç'u

निम्नलिखित के अर्थ बताइए–

1. अंगूठा दिखाना–
अ. इशारा करना ब. गाली देना स. निर्देश करना द. इन्कार करना

2. अंगार उगलना–
अ. आग इकट्ठा करना ब. आग जलाना स. क्रोध में बोलना द. आग फेंकना

3. अंधे की लाठी–
अ. एक मात्र सहारा ब. एक मात्र लाठी स. एकमात्र अंधा द. एक मात्र हथियार

4. अपनी खिचड़ी अलग पकाना–
अ. शाकाहारी ब. सबसे अलग रहना स. अकेले खाने वाला द. एकमात्र पाचक

5. आँख का तारा–
अ. आँख का भाग ब. बहुत प्यारा स. दुश्मन द. सुन्दर अंग

6. आँखों का काँटा–
अ. असंभव वस्तु ब. विशेष दुःख स. अप्रिय व्यक्ति द. भोड़ी सूरत

7. कलई खुलना–
अ. भेद प्रकट होना ब. बर्तन बेकार होना स. पुराना होना द. असंभव बात

8. काम तमाम करना–
अ. काम पूरा करना ब. सहयोग करना स. इन्कार करना द. मार देना

9. खाक छानना–
अ. धूल इकट्ठा करना ब. धूल छानना स. दौड़ना द. दर–दर भटकना

10. गुड़ गोबर करना–
अ. काम बिगाड़ना ब. गुड़ खराब करना स. गुड़ का काम द. गुड़ गोबर का काम

11. घोड़े बेच कर सोना–
अ. व्यवसाय समाप्त करना ब. निश्चिंत होना स. घोड़े का व्यापार द. घोड़े की नींद

12. चौकड़ी मारना–
अ. छलांग लगाना ब. चारों ओर देखना स. चार के साथ दौड़ना द. पानी भरना

13. छक्के छुड़ाना–
अ. धक्का मारना ब. गिराना स. हराना द. खींचना

14. ठन – ठन गोपाल–
अ. कन्हैया ब. धनी व्यक्ति स. झगड़ालू द. खाली हाथ

15. डींगे हाँकना–
अ. दौड़ लगाना ब. गप्प मारना स. पशु चराना द. कल्पना लोक

16. दाँत पीसना–
अ. ताकत लगाना ब. क्रोधित होना स. दांत चलाना द. हंसना

17. दाल में काला–
अ. भेद होना ब. दाल में कंकड़ स. दाल में कोयला द. काली दाल

18. बगुला भगत–
अ. भक्त पक्षी ब. सज्जन स. धूर्त व्यक्ति द. भक्त

19. बंदर घुड़की–
अ. बंदर का बोल ब. झूठा भय स. डरावना रूप द. शक्ति प्रदर्शन

20. माथा ठनकना–
अ. संदेह होना ब. सिर दर्द होना स. सिर पर चोट द. भाग जाना

21. सिर पर भूत सवार होना–
अ. डर जाना ब. रोगी होना स. दबाव होना द. धुन होना

उत्तर

1. द 2. स 3. अ 4. ब 5. ब 6. स 7. अ 8. द 9. द 10. अ

11. ब 12. अ 13. स 14. द 15. ब 16. ब 17. अ 18. स 19. ब 20. अ

21. द

ykdkfDr

लोकोक्ति को कहावत की संज्ञा दी जाती है। लोकोक्ति का सीधा संबंध लोक–जीवन से होता है। इसलिए इसे लोक–जीवन और लोक–भाषा की देन समझना चाहिए। लोकोक्ति का प्रयोग वाक्य के रूप में किया जाता है। इसके प्रयोग से भाषा में आकर्षक स्वरूप का विकास होता है और अर्थ में मनभावन, चमत्कारिक और प्रभावोत्पादक अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। जिस प्रकार भाषा में मुहावरों के सहज प्रयोग से भाषा का भास्वर रूप और भावों में प्रभावोत्पादक शक्ति उभरती है, उसी प्रकार लोकोक्ति के प्रयोग से दोनों पक्षों में अनुपमेय उत्कर्ष होता है। यदि सामान्य भाषा में कहा जाए कि जिसके पास शक्ति होती है, उसी को सफलता मिलती है, तो विशेष अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। इसके स्थान पर यदि लोकोक्ति का प्रयोग किया जाए, तो अर्थ मे चमत्कारिक रूप सामने आता है। इसके स्थान पर यदि कहें, "आखिर उसने चुनाव जीत ही लिया। चुनाव जीतता क्यों नहीं, क्योंकि कहा भी गया है जिसकी लाठी उसकी भैंस।"

मुहावरों और लोकोक्ति के स्वरूप में पर्याप्त भिन्नता है। मुहावरे केवल वाक्यांश हैं। इस प्रकार इनका प्रयोग एक वाक्य मे संभव हैं; यथा– आँखो का तारा– वह अपनी माँ की आँखो का तारा है। इस प्रकार लोकोक्ति पूर्णवाक्य की भूमिका में सामने आता है। इस प्रकार लोकोक्ति के प्रयोग में एकाधिक वाक्यों का सहयोग लेना होता है; यथा– 'ऊँची दुकान फीका पकवान' – मैने कहा था कि बड़ी दुकान पर सावधान रहना। आखिर धोखा खा गए। होना ही ऐसा था क्योंकि कहा गया है– ऊँची दुकान फीका पकवान।" इसी प्रकार जैसी करनी वैसी भरनी– अपने कर्मों का फल सब को मिलता ही है, क्योंकि कहा भी गया है जैसी करनी वैसी भरनी।"

कहावतों की व्याकरणिक संरचना में कोई परिवर्तन नहीं होता है, किन्तु मुहावरे में व्याकरणिक कोटियों में परिवर्तन होता है; यथा– दाने दाने को तरसना

लिंग –	दाने–दाने को तरसता है।	पुल्लिंग
	दाने–दाने को तरसती है।	स्त्रीलिंग
वचन–	दाने–दाने को तरस रहा है।	एकववचन
	दाने–दाने का तरस रहे हैं।	बहुवचन
पुरुष–	दाने–दाने को तरस रहा हूँ।	उत्तम पुरुष
	दाने–दाने को तरस रहे हो।	मध्यम पुरुष
	दाने–दाने को तरस रहा है।	अन्य पुरुष
काल–	दाने–दाने को तरसा था।	भूतकाल
	दाने–दाने को तरस रहा है।	वर्तमान काल
	दाने–दाने को तरसेगा।	भविष्यत् काल

पाठ्यक्रम में निर्धारित लोकोक्तियों के प्रयोग–संदर्भ प्रस्तुत हैं–

1. **अंधा क्या चाहे दो आँखें:** मनचाही वस्तु की प्राप्ति

प्रयोग – सुमित के पास दिल्ली जाने का किराया नहीं था अतः वह निराश बैठा था। जब उसके दोस्त ने पूछा कि रुपया चाहिए, तो वह खुशी से बोल पड़ा, 'अंधा क्या चाहे दो आँख'।

2. **अंधेर नगरी चौपट राजा:** अयोग्य अधिकारी होने पर समाज में अंधकार

प्रयोग – हेडमास्टर के स्कूल की चिन्ता नहीं है। स्वयं भी कभी – कभी आते हैं। स्कूल की पढाई चौपट होती जा रही है। यहाँ तो वही हाल है 'अंधेर नगरी चौपट राजा'।

3. **अंधों मे काना राजा:** मूर्खों में अल्पशिक्षित

प्रयोग – गाँधी नगर मुहल्ले में एक ही बी. ए. पास है। वह मुहल्ले का नेता बना हुआ है। ठीक कहा गया है 'अंधों में काना राजा'।

4. **अधजल गगरी छलकत जाए:** अल्पज्ञानी व्यक्ति अधिक इतराता है।

प्रयोग – उसने कंप्यूटर की थोड़ी सी ट्रेनिंग क्या ले ली, सबको कंप्यूटर के विषय मे बताता फिरता है। सच ही कहा गया है, 'अधजल गगरी छलकत जाए'।

5. **अपनी–अपनी ढपली अपना–अपना राग:** सबके अलग अलग मत

प्रयोग – मैं किसकी सुनूँ समझ नहीं आ रहा है। सब की 'अपनी–अपनी ढपली अपना–अपना राग' है।

6. **अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है:** अपने घर में कमजोर व्यक्ति भी बहादुर होता है।

प्रयोग – सत्येन्द्र उस दिन अपने घर के पास पहुँच कर प्रमोद पर बिगड़ गया। यह देखकर एक बोल पड़ा, ठीक ही है 'अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है'।

7. **अब पछताए क्या होत है जब चिड़िया चुग गई खेत:** हानि होने के बाद पछताने से लाभ नहीं होता

प्रयोग – प्रतियोगिता में असफल हो कर मत दुःखी हो। पहले सोचना था, 'अब पछताए क्या होत है जब चिड़िया चुग गई खेत'।

8. **आँख का अंधा नाम नयन सुख:** गुण के विपरीत नाम

प्रयोग – सुन्दर लाल के नाम की चर्चा चल रही थी। ऐसे में उनके चेहरे की चर्चा कोई करके बोल उठा 'आँख का अंधा नाम नयन सुख'।

9. **आम के आम गुठलियों के दाम:** एक साथ दो लाभ

प्रयोग – प्रभात ने कहा कि मैं बारात में अवश्य जाऊँगा क्योंकि शादी में सम्मिलित हो जाऊँगा और अपने घर भी घूम आऊँगा। मुझे तो आम के 'आम गुठलियों के दाम मिल जाऐंगें'।

10. **आधी छोड़ सारी को धावे आधी मिले न सारी पावेः** अधिक लालच में हानि ही हानि

प्रयोग – हरीश ने निर्देशक पद की चाह में विश्वविद्यालय का प्राध्यापक पद छोड़ दिया और निर्देशक भी नहीं चुने गए। इसी को कहते हैं 'आधी छोड़ सारी को धावे, आधी मिले न सारी पावे '।

11. **उल्टा चोर कोतवाल को डाँटेः** गलती स्वयं कर दोषारोपण दूसरे पर

प्रयोग – मैंने गोपाल को झगड़े से बचा लिया तो वह मुझ पर ही बिगड़ गया। सच ही कहा गया है 'उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे'।

12. **ऊँट के मुँह में जीराः** बहुत बड़े को बहुत थोड़ा देना

प्रयोग – उस दिन कमाल हो गया। भारत केसरी पहलवान के सामने दो पराठे रख दिए गए। यह देख कर एक बोल पड़ा, 'ऊँट के मुँह में जीरा'।

13. **ऊँची दुकान फीका पकवानः** बड़े दिखावे में तत्त्व का होना कठिन होता है

प्रयोग – बड़ी दुकान से सामान खरीद कर धोखा खा कर पछता क्यों रहे हो। यह तो होना ही था, क्योंकि 'ऊँची दुकान फीका पकवान'

14. **एक अनार सौ बीमारः** एक वस्तु के अनेक चाहने वाले

प्रयोग – मेरे पड़ोसी बहुत पेरशान हैं। उनकी कुतिया के एक पिल्ला है, जिसे अनेक लोग माँग रहे हैं। अजीब हाल है 'एक अनार सौ बीमार'।

15. **एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ाः** बुरे व्यक्ति द्वारा अधिक बुरे व्यक्ति का साथ करना

प्रयोग – सुधीर पहले से पढ़ता लिखता नहीं था। अब तो उसने घुमक्कड़ लड़कों का साथ भी कर लिया है। अब क्या पढ़ेगा, क्योंकि 'एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ा।'

16. **एक पंथ दो काजः** एक साथ दो काम होना

प्रयोग – मैं अपने मित्र के घर फैजाबाद जाना चाहता हूँ इसके साथ ही अयोध्या भी घूम आऊँगा। इससे 'एक पंथ दो काज' हो जाऐगें।

17. **एक हाथ से ताली नहीं बजतीः** दोनों पक्षों को कारण झगड़ा होता है

प्रयोग – तुम कितना भी कहो कि गलती केवल उसी की है जिससे झगड़ा हुआ। मैं नहीं मानूँगा, क्योंकि 'एक हाथ से ताली नहीं बजती है'।

18. **ओस चाटे प्यास नहीं बुझती हैः** बड़े काम थोड़े प्रयत्न से नहीं होते हैं।

प्रयोग – एक दिन मेहनत करके प्रथम श्रेणी की आशा लगाने लगे। इसके लिए खूब परिश्रम करो। 'ओंस चाटे प्यास नहीं बुझती है'।

19. **कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेलीः** बहुत अधिक अंतर

प्रयोग – तुमने तो कमाल कर दिया। मानसी की तुलना महादेवी से करने लगे हो। 'कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली'।

20. **का वर्षा जब कृषि सुखानेः** समय बीत जाने के पश्चात प्रयत्न करना

प्रयोग – तुम अब मेहनत करके पढ़ने का निर्णय कर रहे हो जब परीक्षा शुरु हो गई है। अब कितना लाभ होगा 'का वर्षा जब कृषि सुखाने'

21. **खोदा पहाड़ निकली चुहियाः** अति परिश्रम के बाद बहुत थोड़ा लाभ

प्रयोग – संजय ने ट्रक खरीद कर अच्छे लाभ की आशा लगाई। साझेदार ने बहुत कुछ हड़प लिया। वह बहुत निराश है क्योंकि 'खोदा पहाड़ निकली चुहिया'।

22. **खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता हैः** देखा–देखी काम करना

प्रयोग – प्रशांत बहुत विनम्र लड़का था पर उसके कई घुमक्कड़ दोस्त बन गए और वह भी लापरवाह और निडर बन गया। सच है 'खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है '।

23. **गुड़ खाए गुलगुले से परहेजः** दिखावे का परहेज

प्रयोग – आचार्य जी घर में फीकी चाय पीते हैं। बाहर निकल कर रसगुल्ले और जलेबी का स्वाद लेते रहते हैं। इसे देख कर एक दिन प्रमोद ने कह ही दिया 'गुड़ खाए गुलगुले से परहेज'।

24. **घर का जोगी जोगना, आन गाँव का सिद्धः** अपने घर में गुणी व्यक्ति का आदर नहीं होता है।

प्रयोग – डॉ० मुद्गिल के यहाँ बच्चों की भीड़ लगी रहती है पर उनके अपने बच्चे दूसरे डाक्टरों से दवा लेते हैं। इसीलिए कहा गया है, 'घर का जोगी जोगना, आन गाँव का सिद्ध'।

25. **चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रातः** सुख स्थायी नहीं होता है

प्रयोग – सुखी होकर घमण्ड न करो। पता नहीं कल क्या होगा? सोच विचार कर चलो क्योंकि 'चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात'।

26. **चोर के पैर नहीं होतेः** पापी मन अस्थिर होता है

प्रयोग – पुलिस ने जब उससे चोरी के विषय में पूछताछ की, तो वह घबड़ा गया। ठीक ही कहा गया है कि 'चोर के पैर नहीं होते हैं'।

27. **छछूंदर के सिर पर चमेली का तेलः** अयोग्य व्यक्ति को विशेष सुविधा

प्रयोग – घासी राम की शादी रूपवती से हो गई। यह तो ऐसे हुआ जैसे 'छछूंदर के सिर पर चमेली का तेल'।

28. **जल में रहकर मगर से बैरः** आश्रयदाता से दुश्मनी

प्रयोग – इकबाल अपने मालिक से लड़ता रहता है। उसे नौकरी करना कठिन हो रहा है। मैं समझाता हूँ कि 'जल में रहकर मगर से बैर' उचित नहीं है। वह मानता ही नहीं है।

29. **जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कविः** कवि की कल्पना असीम है

प्रयोग – कवि भौतिक चित्रण के साथ अलौकिक चित्रण की कला में निपुण होता है। इसीलिए कहा जाता है 'जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि'।

30. **जाके पैर न फटी बिवाई वह क्या जाने पीर पराईः** सम्पन्न/सुखी व्यक्ति गरीबी का दर्द नहीं जानता।

प्रयोग – खुद तो वातानुकूलित घर में रहता है। उसे आम आदमी के दर्द का ज्ञान कैसे होगा? कहा भी गया है 'जाके पैर न फटी बिवाई वह का जाने पीर पराई'।

31. **जाको राखे साइयाँ, मार न सकिहैं कोयः** जिसका भगवान रक्षक है उसका कुछ नहीं बिगड़ता है।

प्रयोग – प्रह्लाद को मारने के कितने प्रयास किए गए, सभी बेकार हो गए। उसका बाल भी बाँका नहीं हुआ क्योंकि 'जाको राखे साइयाँ, मार सकिहैं न कोय'।

32. **जिसकी लाठी उसकी भैंसः** शक्तिशाली की विजय होती है

प्रयोग – विजय ने धन बल से चुनाव जीत लिया। इसीलिए कहा जाता है 'जिसकी लाठी उसकी भैंस'।

33. **जैसा राजा वैसी प्रजाः** राजा के अनुसार प्रजा का होना स्वाभाविक है

प्रयोग – आज चारों ओर भ्रष्टाचार पनप रहा है। जब मैंने पूछा इसका कारण क्या है तो एक झट से बोल पड़ा, 'जैसा राजा वैसी प्रजा'।

34. **जैसी करनी वैसी भरनीः** कर्म के अुनसार फल मिलता है

प्रयोग – वह दूसरों को तंग करके स्वयं भी दुःखी रहता है। उसे सुख मिलेगा भी कैसे क्योंकि 'जैसी करनी वैसी भरनी'।

35. **जो गरजते हैं वे बरसते नहींः** अधिक बोलने वाले कर्मठ नहीं होते हैं

प्रयोग – वीरभान की बातों पर विश्वास न करना। वह न जाने क्या–क्या कहता रहता है। करता कुछ नहीं। उसके बस का कुछ नहीं है क्योंकि 'जो गरजते हैं वे बरसते नहीं'।

36. **डूबते को तिनके का सहाराः** संकट में थोड़ा सहारा साहस भर देता है

प्रयोग – तुमने रमेश को संकट में जो सहयोग दिया वह 'डूबते को तिनके का सहारा' सिद्ध हुआ है।

37. **तेते पाँव पसारिए जेती लंबी सौरः** शक्ति के अनुसार खर्च करना चाहिए

प्रयोग – उसने दिखावे में आकर लम्बी गाड़ी खरीद ली। अब परेशान है। हमें गुरु की शिक्षा याद रखनी चाहिए 'तेते पाँव पसारिए जेती लंबी सौर'।

38. **थोथा चना बाजे घनाः** निम्न आदमी दिखावा बहुत करते हैं

प्रयोग – आज उसका व्याख्यान था, देख ली उसकी विद्वता। कबीर के दोहे का अर्थ भी गलत बता रहा था। सच ही कहा गया है, 'थोथा चना बजे घना'।

39. **दुविधा में दोनों गए माया मिली न रामः** निश्चयहीन व्यक्ति को धोखा मिलता है

प्रयोग – वह इतने दिनों तक सोचता रहा कि बी. ए. का फार्म भरूँ या कि प्रतियोगिता का। यही सोचता रहा, समय निकल गया। उसकी तो यही हालत हुई 'दुविधा में दोनों गए माया मिली न राम'।

40. **दूध का जला छाछ भी फूँक फँक कर पीता है:** एक चूक के बाद डर–डर कर कार्य करना

प्रयोग – सुरेन्द्र ने एक बार उधार रुपये दिए। वह पैसा वापस नहीं मिला, वह तब से बहुत सोच समझ कर उधार देता है। ऐसा होता ही है 'दूध का जला छाछ भी फूँक–फूँक कर पीता है'।

41. **दूर के ढोल सुहाने:** दूर की वस्तु अच्छी लगती है

प्रयोग – लोग कहते हैं सुमुद्र देखने का अपना मजा है। जो लोग समुद्र के निकट हैं, वे इस विषय में लालायित नहीं होते हैं। सच तो यह है कि 'दूर के ढोल सुहाने' लगते हैं।

42. **धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का:** अस्थिर व्यक्ति कहीं का नहीं होता है

प्रयोग – रंजन को बहुत समझाया गया था कि दोनों ओर नहीं रहना चाहिए। आखिर उसे दोनो तरफ से मार पड़ी और वह कहीं का नहीं रहा। ठीक ही कहा गया है, 'धोबी का कुत्ता घर का न घाट का'।

43. **न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी:** ऐसी शर्त जो पूरी ही न हो

प्रयोग – मल्लिका एम. ए. में प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण हुई तो सहेलियों ने पार्टी देने को कहा। उसने कहा, "जब आई० एस० एस० परीक्षा उत्तीर्ण कर लूँगी तब पार्टी दूंगी।" एक सहेली से रहा न गया, वह बोल पड़ी 'न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी'।

44. **नाच न जाने आंगन टेढ़ा –** काम न आने पर बहाना बनाना

प्रयोग – माथुर को गाने के लिए कहा गया तो कहने लगा, मूड़ नहीं है गला खराब है। एक वाचाल लड़का बोल पड़ा 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा"।

45. **नेकी कर कुएँ में डाल:** उपकार करके चर्चा नहीं करनी चाहिए

प्रयोग – तुमने उसकी सहायता की है, वह माने न माने। तुम उसकी चर्चा न किया करो,क्योंकि ठीक कहा गया है 'नेकी कर कुएँ में डाल' ।

46. **नौ नगद न तेरह उधार:** जो मिले वह ले लेना चाहिए

प्रयोग – मैंने सेठ सुन्दर लाल से पचास हजार रुपये माँगें। वह पहले दस हजार देने लगा। इसके बाद बोला, 'फिर ले लेना। मैंने यह सोचते हुए, 'नौ नगद न तेरह उधार' दस हजार रुपये ही ले लिए।

47. **नौ दिन चले अढ़ाई कोस:** बहुत धीरे–धीरे कार्य करना

प्रयोग – तुम सुबह से चार पेज लिख पाये हो। इससे काम नहीं चलेगा। तुम्हारा तो वही हाल है, 'नौ दिन चले अढ़ाई कोस'।

48. **पराधीन सपनेहु सुख नाही:** पराधीनता में दुःख ही दुःख है

प्रयोग – उसने ऐसी नौकरी कर ली जो बंधुआ मजदूर की तरह है। एक पल भी छुट्टी नहीं मिलती। ऐसी नौकरी में सुख कहाँ? क्योंकि 'पराधीन सपनेहु सुख नाही'।

49. **बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद:** वस्तु के उपयोग का ज्ञान न होना

प्रयोग – तुम कह रहे हो 'संदेश' मिठाई बेकार होती है। कभी खाया भी है संदेश? 'बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद'।

50. **बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि लेहुः** पीछे की चिन्ता छोड़ आगे सतर्क होकर काम करना

प्रयोग – इतना समय गँवा दिया है। अब आगे सचेत होकर कार्य करो तभी सफल होगे 'बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि लेहु'।

51. **भागते चोर की लंगोटी भलीः** न मिलने की संभावना में कुछ से संतोष करना चाहिए

प्रयोग – माधुरी बहुत कंजूस है। पार्टी तो दे नहीं सकती। आज चाय पिलाने पर राजी हो गई है। संतोष ने जोर लगाकर कहा 'भागते चोर की लंगोटी भली'।

52. **भैंस के आगे बीन बजाए भैंस खड़ी पगुरायः** मूर्खों के आगे उपदेश बेकार होता है

प्रयोग – आचार्य जी कई दिनों से उसे समझा रहे हैं। उसे समझ में नहीं आ रहा है हालात वहीं हैं 'भैंस के आगे बीन बजाए, भैंस खड़ी पगुराय'।

53. **मुँह में राम बगल में छुरीः** ऊपरी मित्रता और अन्दर से शत्रुता

प्रयोगः तुम मनफूल से सावधान रहना । उसके विषय में अच्छी तरह समझ लो। वह मुँह में राम बगल में छुरी रखने वाला प्राणी है।

54. **रोपे पेड़ बबूल का आम कहाँ से खायः** बुरे कार्य का परिणाम अच्छा नही होता है

प्रयोग – तुम ने दुष्ट को दोस्त बनाया है। इनसे अच्छे परिणाम की आशा लगाना बेकार है। ध्यान रखो 'बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से खाय'।

55. **विषस्य विषमौषधम्ः** लोहे को लोहा काटता है

प्रयोग – तुम दुष्ट के साथ भी पूरी सरलता दिखाते हो। इससे वह तुम्हे ज्यादा तंग करता है। दुष्ट के प्रति उदारता नहीं दिखानी चाहिए, क्योंकि कहा गया है 'विषस्य विषमौषधम्'।

56. **सिर मुड़ाते ओले पड़ेः** कार्य शुरु करते ही कठिनाई आना

प्रयोगः राधामोहन ने टैक्सी खरीद कर परिवार के पालन पोषण की हिम्मत की। दूसरे ही दिन टैक्सी दुर्घटनाग्रस्त हो गई। कैसी मुसीबत आई 'सिर मुड़ाते ही ओले पड़े'।

57. **हथेली पर दही नहीं जमताः** अच्छे कार्य की सम्पन्नता में समय लगता है

प्रयोगः तुम चाहते हो हंसते–खेलते टाप कर जाओ। ऐसा नहीं हो सकता। कहा भी गया है कि 'हथेली पर दही नहीं जमता है'।

58. **हाथ कंगन को आरसी क्याः** प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं

प्रयोग – तुम कह रहे थे उसे प्रथम श्रेणी मिलेगी। परीक्षाफल आ गया है। आओ देख लें 'हाथ कंगन को आरसी क्या'?

59. **हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के औरः** कथनी करनी में अंतर होना

प्रयोग – उनके सफेद कपड़ों पर न जाना क्योंकि उनके विचार बहुत अनोखे हैं। उन्हें देखकर कहावत याद आती है कि 'हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और'।

60. **होनहार बिरवान के होत चीकने पातः** शुरू से ही श्रेष्ठता के लक्षणों का ज्ञान

प्रयोग – इस बच्चे को देख कर इसके सफल हाने का ज्ञान होता है क्योंकि 'होनहार बिरवान के होत चिकने पात'।

- **कुछ अन्य प्रमुख लोकोक्तियाँ अर्थ सहित प्रस्तुत हैं–**

1. **अंत भला तो सब भलाः** परिणाम अच्छा होने से सारा कार्य अच्छा होता है

प्रयोग – परीक्षा निकट है। परिश्रम कर लो परिणाम अच्छे होंगे तो सब ठीक मान लिया जाएगा। कहा भी गया है 'अंत भला तो सब भला'।

2. **अंधे के हाथ बटेर लगनाः** बिना परिश्रम के सफलता मिलना

प्रयोग – वह किसी से सीधे मुँह बोलता भी नहीं और उसे श्रेष्ठ समाज सेवी का पुरस्कार दिया गया है। इसे सुन कर एक बोल उठा 'अंधे के हाथ बटेर लग गया'।

3. **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकताः** संगठन के बिना सफलता संभव नहीं

प्रयोग – शास्त्री जी हिंदी के लिए पुरजोर कोशिश कर रहे हैं। उनके अकेले होने से असर नहीं हो रहा है क्योंकि कहा भी गया है कि 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता'।

4. **अटका बनिया देय उधारः** दबाव में काम करना

प्रयोग – तुमने ऐसा दबाव डाला कि तुम्हारा असंभव काम भी उसने कर दिया। ऐसा होता ही है क्योंकि कहा गया है 'अटका बनिया देय उधार'।

5. **अरहर की टट्टी गुजराती तालाः** छोटी चीज के लिए बहुत खर्च करना

प्रयोग – गुलशन ने अपने घर के बाहर एक छोटी सी क्यारी बनाई पशुओं से सुरक्षा के लिए उसमें कई हजार की मजबूत जाली लगवाई। इसे देख कर जसबीर बोल पड़ा 'अरहर की टट्टी गुजराती ताला'।

6. **आधा तीतर आधा बटेरः** एक मत न होना

प्रयोग – उस दिन गोष्ठी में 20 विद्वान इकट्ठे हुए। चर्चा चली तो खेमे में बंट गए। वहाँ का हाल ऐसा था 'जैसे आधा तीतर आधा बटेर'।

7. **आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपासः** अच्छे काम के लिए आना पर दुनिया धंधा में फंस जाना

प्रयोग – वह हरिद्वार गया था दर्शन और मनोरंजन के लिए किन्तु वहाँ एक होटल बनाने में लग गया। मैंने जब यह सुना, तो मेरे मुँह से एकाएक निकल ही आया आए थे हरिभजन को ओटन लगे कपास'।

8. **आगे नाथ न पीछे पगहाः** पूर्ण स्वतंत्र व्यक्ति

प्रयोग – वह आज यहाँ है, कल कहाँ होगा किसी को पता नहीं है। उसके विषय में यही कहना ठीक है कि 'उसके आगे नाथ न पीछे पगहा'।

9. **आ बैल मुझे मार –** जान बूझ कर विपत्ति को आमंत्रण देना

प्रयोग – उसने पुलिस स्टेशन जाने और पड़ोसी के बारे में रिपोर्ट करने के विषय में मुझसे चर्चा की तो मैंने कहा, "पुलिस स्टेशन जाकर 'आ बैल मुझे मार' वाली स्थिति क्यों बना रहे हो।"

10. **तेली का तेल जले मसालची का दिल जलेः** खर्च कोई करे, जलन किसी और को हो

प्रयोग – सूरजभान गरीब बच्चों को किताबें और कपड़े बाँटता रहता है और राजकुमार उसको मना करता रहता है। न मानने पर बुराई करता है। अजब हाल है, 'तेली का तेल जले मसालची का दिल जले'।

11. **दान की बछिया के दाँत नहीं देखतेः** दान की वस्तु के गुण–परीक्षण नहीं करते

प्रयोग – वाह भाई! तुम तो दान में मिले स्कूटर की गद्दी, टायर और ईंजन आदि चेक करने पर लगे हो। खुश होकर ले जाओ। जानते हो 'दान की बछिया के दाँत नहीं देखते'।

12. **दिन दूनी रात चौगुनी होनाः** सब प्रकार से तेज उन्नति

प्रयोग – उसने मेहनत कर अपनी पढ़ाई पूरी की। नौकरी कर के लगातार परिश्रम कर आगे बढ़ रहा है। इसे कहते हैं 'दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति' करना।

13. **दूध का दूध और पानी का पानीः** सच्चा न्याय

प्रयोग – माँ को उसका खोया बेटा दिलाया गया तो किसी ने खुशी से कहा 'दूध का दूध पानी का पानी हो गया'।

14. **द्रौपदी की चीर होनाः** अन्तहीन विस्तार

प्रयोग – जादूगर उस डिब्बे में से रीबन निकालता जा रहा था। वह खत्म होता ही न था। मुझे लगा यह 'द्रौपदी की चीर है'।

15. **नया नौ दिन पुराना सौ दिनः** पुरानी चीज में स्थिरता होती है, नई में नहीं।

प्रयोग – नये पुराने दोस्त की चर्चा चल रही थी। तभी पुराने दोस्त की बड़ाई करता हुआ एक बोल पड़ा, 'नया नौ दिन पुराना सौ दिन'

16. **न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरीः** कारण के न होने पर काम नहीं होना

प्रयोग – प्रिंसिपल ने संगीत विभाग के शिक्षक को निकालने के लिए संगीत विभाग ही बंद कर दिया। उन्होंने सोच लिया था 'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी'।

17. **न सावन सूखा न भादों हराः** सदा सर्वदा समान भाव से रहना

प्रयोग – वीरभान का समरस जीवन सराहनीय है। सुख और दुःख में समान रूप से दिखाई देता है। उसके विषय में कहा जाता है 'न सावन सूखा न भादों हरा'।

18. **नौ सौ चूहे खाय के बिल्ली चली हज कोः** बहुत पाप करके पुण्य का दिखावा

प्रयोग – वह सदा ही गरीबों को तंग करता रहा है। मांस–मदिरा का सेवन करता रहा है। तुम कह रहे हो वह संगम नहाने जा रहा है। मुझे तो लग रहा है 'नौ सौ चूहे खाय के बिल्ली चली हज को'।

19. **पढ़े फारसी बेचे तेल यह देखा कुदरत का खेलः** विद्वान व्यक्ति का अभागा होना

प्रयोग – शीतल एम. ए. पास कर लगातार नौकरी के चक्कर में भटकता रहा है। अब जब वह मजबूर होकर जूते की दूकान में नौकरी करने लगा, तो मेरे मन आ रहा है 'पढ़े फारसी बेचे तेल यह देखा कुदरत का खेल'।

20. **बगल में छोरा गाँव में ढिंढौराः** अपने पास पड़ोस की खबर न होना

प्रयोग – उस दिन दिनेश ने अपने पांच वर्षीय बच्चे के खोने की रिपोर्ट दोपहर दर्ज करवा दी। पुलिस छानबीन में लग गई। बच्चा शाम को साथियों के साथ घूमता–फिरता आ गया। अजीब हाल है 'बगल में छोरा गाँव में ढिंढोरा'।

21. **बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगीः** संकट का आना निश्चित होना

प्रयोग – सभी परीक्षार्थियों की एक–एक कर परीक्षा ली जा रही थी। सभी सहमें हुए थे। ऐसे में एक ने हिम्मत बंधाते हुए कहा कि सब को परीक्षा देनी ही है 'बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी'।

22. **बद अच्छा बदनाम बुराः** बुरे व्यक्ति से बदतर हो जाता है कलंकित व्यक्ति

प्रयोग – रोहित रोज ही कुछ न कुछ उल्टा काम करता रहता है। उस पर लोगों की नजर कम रहती है। संजीव के चरित्र के विषय में झूठा प्रचार कर दिया गया। वह बहुत लज्जित है। ठीक ही कहा गया है 'बद अच्छा बदनाम बुरा'।

23. **बिना रोये माँ भी दूध नहीं देतीः** प्रयत्न बिना सफलता नहीं मिलती

प्रयोग – कृपाल ने श्यामलाल के कहने पर अपने मालिक से पचास हजार रुपये उधार के लिए कई बार निवेदन किया। अन्त में उसे उधार मिल गया तो विश्वास हो गया कि 'बिना रोये माँ भी दूध नहीं देती'।

24. **बाप बड़ा ना भैया, सबसे बड़ा रुपय्याः** रिश्ते नाते से ज्यादा धनी व्यक्ति का सम्मान

प्रयोग – मैं उस दिन चकित रह गया जब रतन लाल ने अपने बड़े भाई और पिताजी की बात नहीं मानी, किन्तु जब सेठ भूरे लाल ने कहा तो वह एक दम तैयार हो गया। मुझे विश्वास हो गया कि 'बाप बड़ा न भैया सबसे बड़ा रुपय्या'।

25. **बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीखः** भाग्य से कुछ भी मिल सकता है किन्तु माँगने पर छोटी सी चीज भी नहीं मिलती

प्रयोग – गत वर्ष दहिया जी मुझे एक लाख रुपये दे रहे थे, अब जब मैं केवल दस हजार रुपये माँग रहा हूँ, तो नकार रहे हैं। ठीक ही कहा गया है 'बिन माँगे मोती मिले माँग मिले न भीख'।

26. **भई गति साँप छछूंदर केरीः** काम करने न करने दोनों स्थितियों से संकट

प्रयोग – वह यदि उधार दे तो रुपया डूबने का डर है। यदि न दे तो पिटने का डर है। उसकी हालत है 'भई गति साँप छछूंदर केरी'।

27. **मन चंगा तो कठौती में गंगाः** मन की पवित्रता के बाद गंगा स्नान की आवश्यकता नहीं होती है

प्रयोग – जब मैंने राधेश्याम से पूछा कि कुंभ में स्नान के लिए प्रयागराज चलोगे, तो वह बोल पड़ा – 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'। मैं तो घर में ही स्नान करूँगा।

28. **मान न मान मैं तेरा मेहमानः** बिना बात किसी के गले पड़ना

प्रयोग – वह कमाल का आदमी था। बस में थोड़ी देर बात क्या हुई मेरे साथ उतरा और मेरे साथ हो लिया। मुझे भूख लगी थी। मैं होटल गया, तो वहाँ पहुँच गया। उसका भी बिल मुझे देना पड़ा। ठीक ही कहा गया है – 'मान न मान मैं तेरा मेहमान'।

29. **मार के आगे भूत भागता हैः** दंड से सभी डरते हैं

प्रयोग – यह ऐसे नहीं मानेगा। जब पुलिस के डंडे पड़ेंगे, तो कबूल देगा क्योंकि 'मार के आगे भूत भागता है'।

30. **मुल्ला की दौड़ मस्जिद तकः** सीमित क्षमता वाला

प्रयोग – मैंने ताराचन्द से पूछा कि अब किससे सहयोग मांगोगे, तो वह बोल उठा सुमेर बाबू से क्योंकि 'मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक' ही संभव है।

31. **मियाँ की जूती मियाँ के सिरः** किसी व्यक्ति की वस्तु का उस पर ही प्रयोग करना

प्रयोग – उस दिन उसने मुझे एकदम हजार का फटा नोट दिया था। आज उसका पैसा लौटाना है। अब 'मियाँ की जूता मियाँ के सिर' पर होगी।

32. **मन के हारे हार, मन के जीते जीतः** सफलता असफलता मन पर निर्भर होती है।

प्रयोग – तुम निराश क्यों हो जाते हो? प्रयत्न करो जरूर सफल होगे, कहा भी गया है – 'मन के हारे हार, मन के जीते जीत'।

33. **मानो तो देव नहीं तो पत्थरः** भावना के आधार पर ही किसी की श्रेष्ठता का ज्ञान होता है

प्रयोग – तुम तो कुछ भी नहीं समझ रहे हो। वास्तव में वे बहुत विद्वान हैं। मन से सोचो तो पता लग जाएगा। कहा भी गया है – 'मानो तो देव नहीं तो पत्थर'

34. **रस्सी जल गई, बल नहीं गयाः** दुर्गति होने पर भी अहंकार नहीं गया

प्रयोग – सुहाग जुए में सब कुछ गँवा बैठा है, किन्तु बातें करोड़पति की ही करता है। उसका तो हाल है 'रस्सी जल गई, बल नहीं गया'।

35. **राई से पर्वत करे, पर्वत राई माँहिः** ईश्वर सर्वशक्तिमान है

प्रयोग – मैं बार–बार कह रहा हूँ मेहनत करो, ईश्वर फल अवश्य देगा। वह सबकी सुनता है और सब कुछ देता है। तभी तो उसके विषय में कहा गया है 'राई से पर्वत करे, पर्वत राई माँहि'।

36. **विधि का लिखा को मेटन हाराः** भाग्य का लेख बदलता नहीं है

प्रयोग – उसके साथ कैसी दुर्घटना घटी? कहाँ गया था शादी के लिए सामान खरीदने, लौटते हुए दुर्घटना में मारा गया। घर में मातम छा गया। सच ही कहा गया है 'विधि का लिखा को मेटन हारा।'

37. **समरथ को नहिं दोष गुसाईः** शक्तिशाली में दोष नहीं दिखाई देता है

प्रयोग – बाबूराम ने सौ रुपये घूस लिया, तो उसको नौकरी से हाथ धोना पड़ा, करोड़ों का घोटाला करने वालों का कुछ भी नहीं बिगड़ता। इसीलिए कहा गया है 'समरथ को नहिं दोष गुसाईं'।

38. **सीधी उंगली से घी नहीं निकलताः** अधिक सरलता से काम नहीं बनता

प्रयोग – यदि तुम निवेदन करते रहोगे, तो वह रुपये वापस नहीं देगा। एक बार धमका दो काम बन जाएगा। जानते तो हो 'सीधी उंगली से घी नहीं निकलता'।

39. **सौ सुनार की एक लुहार कीः** निर्बल की सौ चोट से अधिक जोरदार होती है बलवान की एक चोट

प्रयोग – तुम रोज–रोज उसे गालियाँ देते रहते हो। किसी दिन उसे गुस्सा आ गया तो मुश्किल में पड़ जाओगे क्योंकि 'सौ सुनार की एक लुहार की बात' जानते ही हो।

vH;kl d: fy, oLr|fu"B i:'u

निम्नलिखित लोकोक्तियों के अर्थ–चयन कीजिए–

1. अंधा क्या चाहे दो आँख
   - अ. अंधे की आँख
   - ब. श्रेष्ठ वस्तु
   - स. मनचाही वस्तु
   - द. भाग्य से मिली वस्तु
2. अपनी अपनी ढपली अपना अपना राग
   - अ. बाजे–गाजे वाले
   - ब. गाने–बजाने वाले
   - स. दूर जाने वाले
   - द. अलग–अलग राग वाले
3. आँख का अंधा नाम नयन सुख
   - अ. सुन्दर नाम
   - ब. गुणों के विरुद्ध नाम
   - स. आकर्षक नाम
   - द. नामकरण की श्रेष्ठता
4. ऊँट के मुँह में जीरा
   - अ. बहुत बड़े को थोड़ा देना
   - ब. ऊँट को दवा देना
   - स. काल्पनिक विचार

द. बहुत ज्यादा सोचना

5. एक अनार सौ बीमार

अ. अनार की माँग बढ़ना

ब. बीमार की संख्या बढ़ना

स. अनार बाँट–बाँट के खाना

द. एक वस्तु के अनेक ग्राहक

6. कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली

अ. बहुत पुरानी बात

ब. बहुत अन्तर होना

स. समतुल्य जोड़ी

द. आधुनिक जोड़ी

7. खोदा पहाड़ निकली चुहिया

अ. बहुत परिश्रम पर थोड़ा लाभ

ब. पहाड़ खोदने से लाभ ही लाभ

स. पहाड़ खोदने से चुहिया मिलती है

द. पहाड़ खोदना मना है

8. गुड़ खाए गुलगुले से परहेज

अ. गुड़ का शौकीन

ब. गुलगुले का शौकीन

स. दिखाने का परहेज

द. पक्का परहेज

9. चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात

अ. चाँदनी ही चाँदनी

ब. सुख का स्थायी न होना

स. दुख का स्थायी न होना

द. दुनियादारी करना

10. जिसकी लाठी उसकी भैंस

अ. शक्तिशाली की विजय

ब. लाठी के साथ भैंस रखें

स. भैंस के साथ लाठी रखें

द. भैंस और लाठी दोनों साथ रखें

11. धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का

अ. घोबी कुत्ता नहीं पाल सकता

ब. धोबी को कुत्ता नहीं पालना चाहिए

स. अस्थिर व्यक्ति कहीं का नहीं होता

द. अस्थिर व्यक्ति सदाबहार होता है

12. भागते चोर की लंगोटी भली

अ. जहाँ न मिलना हो वहाँ कुछ मिलना अच्छा है

ब. जहाँ कुछ मिल रहा हो, वहाँ ज्यादा पाने का प्रयत्न

स. जहाँ चोर हो वहाँ कुछ छीन लो

द. चोर से कुछ नहीं लेना चाहिए

13. हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और

अ. हाथी की पहचान

ब. जंगली जानवर की पहचान

स. दाँतों में अन्तर

द. कथनी करनी में अंतर

14. आ बैल मुझे मार

अ. अनजाने बैल से टक्कर

ब. जानबूझ कर विपत्ति बुलाना

स. जानबूझ कर बैल से भिड़ना

द. बैलों की लड़ाई

15. दूध का दूध पानी का पानी

अ. दूधिये का नाम

ब. सच्चा न्याय

स. दूध की पहचान

द. दूध का विशेषज्ञ

16. द्रौपदी की चीर

अ. अन्तहीन विस्तार

ब. सुन्दर कपड़ा

स. पुराना कपड़ा

द. फटा कपड़ा

17. बाप बड़ा न भैया सबसे बड़ा रुपैया
    - अ. रुपये के लिए भागना
    - ब. धनी भाई
    - स. भाई और पिता से रुपया माँगना
    - द. धनी व्यक्ति का महत्व

18. भई गति साँप छछूंदर केरी
    - अ. साँप के लिए संकट
    - ब. छछूंदर के लिए संकट
    - स. दोनों स्थितियों में संकट
    - द. साँप और छछूंदर दोनों संकट मुक्त

19. रस्सी जल गई बल नहीं गया
    - अ. दुगर्ति में भी अहंकार नहीं गया
    - ब. रस्सी का पूरी तरह जल जाना
    - स. बल लगा कर रस्सी जलाना
    - द. रस्सी जलाने की योजना

20. समरथ को नहिं दोष गुसाईं
    - अ. समर्थ व्यक्ति में गोस्वामी माने गए हैं
    - ब. शक्तिशाली व्यक्ति में दोष नहीं दिखते
    - स. समर्थ व्यक्ति में ईश्वर भी दोष नहीं ढूंढ सकता
    - द. ईश्वर सदा समर्थ व्यक्ति को दोष से बचाता है

21. सीधी उंगली से घी नहीं निकलता
    - अ. जिसकी उंगली टेढ़ी हो वही घी निकालता है
    - ब. घी सदा टेढ़ी उंगली से निकालना चाहिए
    - स. उंगली सीधी रखोगे तो उसमें से घी नहीं निकलेगा
    - द. अधिक सरलता से कार्य सिद्ध नहीं होता है

उत्तर

1. स 2. द 3. ब 4. अ 5. द 6. ब 7. अ 8. स 9. ब 10. अ 11. स

12. अ 13. द 14. ब 15. ब 16. अ 17. द 18. स 19. अ 20. ब 21. द